दिशा बोध

(सामाजिक उपन्यास)

श्रीराम शर्मा 'राम'

संगीता प्रकाशन

30/64, गली नम्बर 8, विश्वास नगर

शाहदरा, दिल्ली-110 032

सस्करण	पहला, 1989
प्रकाशक	सगीता प्रकाशन 30/64 गली नम्बर 8, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली 110 032
आवरण	जोशी, कला सगम
मूल्य	रु० 45 00
मुद्रक	श्री महावीर प्रिंटिंग प्रेस 27/100 गली नम्बर 7, विश्वास नगर शाहदरा, दिल्ली 110 032

DISHA BODH

written by Shri Ram Sharma 'Ram'

Price Rs 45 00 Only

दिशा बोध

1

नाम सुखिया था उसका, परन्तु वह वस्तुतः दुखिया थी। जिन्दगी का बोझ सिर पर उठाए वह पथ की सकरी घाटियों को पार कर रही थी। कभी किसी पत्थर से टकराती, कभी पथ मे पड़े शूल की पीड़ा से पैर को पकड़ कर रह जाती। उसके प्राणों की तड़फ मन की टीस, सागर के गहर अन्तराल की तरह स्वतः ही गभस्थ हो जाती थी। वह न किसी से कुछ कह पाती, न सुन पाती। मानो वह निर्लेप बनी, अपने-आप में उमड-घुमड कर रह जाती थी। पति के निधन के बाद, सुखिया के लिए ससुराल के द्वार अवरुद्ध बने थे। वकाव्य को प्राप्त हुई बहिन के पास जब भैया पहुचा, तो उसे सुनाकर सुखिया की सास ने कहा था, तू आया है तो ले जा अपनी बहिन को। यह ऐसी डायन आई इस घर मे, मेरे लाल को डस गयी यह कुलटा है, कुलच्छनी है, मैं इसे घर मे नही रख सकती। जब मेरा लडका नही रहा, तो उसकी बहू भी यहा नही रह सकेगी'

सुखिया का भया अभी युवक था। गरम खून था उसके शरीर मे। बहनोई के मरने का समाचार पाकर ही वह दौडा आया था। अभी दो वर्ष पूर्व ही उसकी बहिन का विवाह हुआ था। सिर पर से पिता का साया उठ चुका था, वह अकेला ही परिवार की पतवार सम्भाले हुआ था। जब सुखिया की सास ने कटु वचन कहे, तो वह हत्प्रभ रह गया। तुरंत क्षोभ से भर उठा—' मौसी मेरी बहिन का जीवन तो बिगड गया, अब तुम इस तरह के कटु वचन कह कर उसके जखम पर नमक मत छिड़को। मैं इसे साथ ले जाऊगा। तुम बुलाओगी तो आएगी, अन्यथा उसी घर पर

अपना जीवन बिताएगी । दो रोटी यहां भी मिलेगी ।

सुखिया की सास का नाम था यशोदा । जब वह बहू से भैया से बात कर रही थी, तो तभी, उसका पति रामदास घर में आया । उसके आते-आते बहू के भाई नरपत की बात सुन ली थी । घर के चौक में आते ही बोला 'क्या भया, किसे दो रोटी दे रहे हो । क्या अपनी बहिन को ?'

नरपत बोला 'मौसी कहती हैं, मेरी बहन अशुभ है । यहां रहने योग्य नहीं । डायन है उसके बेटे को डस गयी ।'

रामदास का मुंह कड़वा हो गया, 'राम ! राम ! कैसी बात करते हो, तुम ! कोई बहू-बेटी अशुभ होती है, क्या ! मेरा लड़का तो अपनी मौत मरा था । उसका इतना ही अन्न जल था, इस धरती पर ।' उसने सांस भरी—'भगवान की लीला अपार है । उसका कोई पार नहीं पा सकता । भगवान का नाम सत्य है और सब मिथ्या है ।

यशोदा बोली—'तुम बहू को जाने दो । कुछ दिन रह आएगी ।'

रामदास बोला—'अभी नहीं, बेटे को गए अभी महीना भी पूरा नहीं हुआ । लोग सुनेंगे, तो क्या कहेंगे । बेटे के मरते ही बहू को निकाल दिया,—यही न ! कभी बुद्धि की बात भी कर लिया करो ।

यशोदा ने स्वर में तीव्रता लेकर कहा—मेरे पास बुद्धि कहां है । भाग्य कहां ! मेरा हाथी सरीखा बेटा चला गया, कम्बख्त औरत का इससे बड़ा सबूत और क्या होगा ।' वह आर्द्र हो उठी । उसके मन की व्यथा होठों पर उतर आई । वह रो पड़ी ।

रामदास बाहर की ओर लौटा—'शान्त मन, यशोदा ! अपने साथ मुझे भी परेशान मत कर । जब से मलखू गया है न आया जाता है—न रात में सोया जाता है । लगता है वह अपने साथ मेरा प्राण भी नोच कर ले गया । रामदास दरवाजे पर खड़ा हो गया और मुड़ कर बोला—'आज मुझे लगता है, मैंने अपने मानस से उलीच उलीच कर अपना ममत्व उस मलखू को अर्पित किया था । जाने कहां से वह सुंदर पंछी उड़ कर इस घर की डाल पर आकर बैठ गया था । जब समय आया तो अपने वे सुनहरी पंख पसार कर चला गया उसका प्राण-पखेरू जाने किस दिशा की ओर उड़ गया '।

रामदास के उस करुणा भरे कथन से घर मे विषाद की छाया फैल गयी। एक ओर बैठी सुखिया झुक्कर पडी थी। उसका तो सब कुछ चला गया था। कुछ दिन पूर्व, वह सुखी थी, सधवा थी, परन्तु पति के जाते ही, मानो उसका सर्वस्व लुट चुका था। अतएव, उसकी वेदना असीम थी। समुद्र की गहराई के समान थी। तभी नरपत ने कन्धे पर चादर रख ली और लाठी उठा ली। झुककर उसने मौसी के पैर छूए और बोला—'जब खबर दोगी, मैं आ जाऊगा। सुखिया को ले जाऊगा।'

यशोदा मौसी चीख पडी—'अरे, तू भी मेरी भाषा म बोलता है। मेरा भाग्य तो भगवान ने फोड दिया, अब मेरा तमाशा क्या बनाता है।' नरपत बोला नही वह ओसारे मे बैठी सुखिया के पास पहुच गया। उससे बोला मैं जाता हू। देर करूगा, तो धूप हो जाएगी। तू पत्र लिखवा देना। तेरा देवर तो पढता है, पत्र लिख लेगा।' वह चल दिया। बाहर बैठे रामदास के पास जाकर बोला—'अच्छा, मौसा! मेरी राम-राम लो। कोई काम हो तो लिख भेजना। मुझे अपना दास समझना।'

रामदास बोला—'आते रहो। मौसी के कहने का बुरा न मानना, वह मा है ना, उसकी छाती पर चोट पडी है। जवान लडका गया है। बडे जतन से पाला था, मलखू को। जादू-टोन भी कराती थी, पण्डित पढिय को भी दान-दक्षिणा देती थी। मलखू बचपन मे बडा बीमार रहा था, उसे रात रात भर लिए बठी रहती थी।'

नरपत बोला—'मा का त्याग बहुत बडा होता है।

रामदास ने सास भरी—'हा, भैया! इस जिन्दगी का कारवा एस ही चलता है। औरत मर्द सभी त्याग करत है, अपनी सन्तान के लिए।' वह बोली—फिर भी हाथ खाली के खाली! अजीब सिलसिला है, इस जीवन का। भगवान की रचना को कोई समझ नही पाता।'

नरपत बोला—'मौसा, यह तो सराय है। एक आता है, एक जाता है। यह डेरा उखडता रहता है। अच्छा राम! राम!

रामदास ने कहा—'राम राम! आते रहना। अपनी बहिन का चिन्ता न करना। यह घर उसी का है। जगल के खेत भी उसके ह। मौसी की बात का बुरा न मानना।'

नरपत ने चिंचित खड़े होकर बात सुनी और तेजी से आगे बढ़ गया। गाव दूर नही था, लेकिन सूरज अपनी तेज गर्मी और धूप के साथ ऊपर बढ़ता आ रहा था। वह गाव से निकल कर अपने गाव की पगडण्डी पर चढ़ गया। उसी समय यशोदा घर के अन्दर से उठ आई। रामदास की चारपाई के पास जमीन मे बैठ कर बोली—तुम कहते तो हो, मैं पागल हू, मूर्ख हू। लेकिन मैंने गलत नही कहा, दो-चार महीने बहू अपनी माँ के पास रह आती। उसके स्वर मे करुणा और व्यथा फूट पड़ी—मेरा लड़का क्या गया, अब हमारी साँसत मे जान आ गयी। जवान बहू है, अल्हड़ है। इस यह भी सऊर नही किस से बोले, किससे नही। घूघट काढ़ने की तो इसने कसम खा ली है। जाने मा ने क्या सिखाया। करम फूट गए मेरे तो, जो ऐसी बहू इस घर मे आ गयी

रामदास हुक्का पी रहा था। वह प्रात का समय था। किसान अपने खेतो मे चले गए थे। सब ओर सन्नाटा था। रामदास भी खेत पर जाने की बात मन म लिए था। परन्तु धूप बढ़ रही थी। उसका साहस घट रहा था। लेकिन जब यशोदा न बहू की बात उठायी, तो वह विषाक्त भाव स मुस्कराया—सुन, यशोदा! तू अपनी बात भूल गयी। मेरी मा दिन मे कई बार मुझे टकोरती थी घूघट काढ़ने क लिए। और अब तो युग ही बदल गया। शहर म तो कोई घूघट करता नही, गाव-देहात म अभी परदा चलता ह। लेकिन इसस लाभ क्या है! पाप करने वाला गात परदा म भी नहीं रुकता।

पति की बात सुनकर यशोदा चिढ़ उठी—'बस, बस तुम अपनी यह वेदान्ती बात रहन दो। थोड़ी बहुत लाज शरम रह गयी है, गाव-बस्ती म तो उस भी तुम सरीखे सुधारवादी मिटाकर छोड़ेंगे तभी तो गाव लुगाडे पैदा हो चले हैं। अब तो पनघट पर भी जाने का धरम नही, किसी बहू-बेटा का! सुना नही, य बदजात छोकर पनघट के चारा तरफ चक्कर काटत है। कोई कहने वाला भी नही। कोई बोले भी, तो उसस लड़न का तैयार रहत है।'

रामदास बोला—'यशोदा भले आदमी अब रास्ता काट कर चलत है। कुछ कहा तो अपनी पगड़ी उतरवा ल।' उसन हुक्का हटा लिया

और कहा—'तुम तो लडके की बात कहती हो, सुना नही, जसपत की लडकी घर से गयी, तो लौटकर नही आई। तभी से घरवाली चारपाई पर पडी है।'

यशोदा बोली, 'वह लडकी तो खुद भागी थी। उस पर जवानी क्या आई, दीवानी बन चली थी। क्या पता है, वह जीवित भी है, या नही। शरम आइ हो, तो किसी कुए-पोखर मे डूब मरी होगी।

रामदास बोला—'बदमाश आदमी अपना मतलब निकलने पर औरत को मार भी देते हैं।'

उसी समय एक व्यक्ति उधर से निकला—चाचा, राम-राम ?

रामदास ने कहा—'राम-राम, भैया! कहो, रात तुम्हारी तरफ कैसा शोर उठा था ?'

'वह रामपत की बहू है न, तो उसके घर पर दो बदमाश चढ आये। शराब पीये थे। रामपत की लडकी को बुला रहे थे।'

'राम! राम! यशोदा ने कहा—'उस लडकी का तो विवाह होने वाला है। सुना है, लडका रोक दिया है।

'हा चाची! लेकिन लडकी खुद अपना चाल चलन ठीक नही रखती। जवान लडकी है, जब देखो पनघट पर या अपने खेत पर दिखायी देती है। शैतान लडके भौरे की तरह उसके चारो ओर मडराते है। माँ भी लडकी को नही रोकती। उसकी सुनती भी नही। वह आगे बढ गया।

तभी यशोदा ने पति की ओर देखा। उसका क्या अभिप्राय था, रामदास समझ गया। परन्तु वह कुछ कह नही पाया। किन्तु यशोदा बोली—'यह नगी तलवार अब हमारी गर्दन पर भी चलेगी। मेरा लडका तो गया ही, यह जवान बहू सिर दर्द बनेगी। हमारे सिर फुडवा देगी।'

तत्क्षण ही रामदास बोला—'तू तो पगली है। सबको एक ही लाठी से हाँकती है। तुम्हारी बहू अब ना समझ नही। बहू चाहेगी, तो मैं उसका दूसरा विवाह कर दूगा। अब तो इस गाँव में अशिक्षित औरतो को पढाया जाने लगा है। दस्तकारी भी सिखायी जाती है। तुम्हारी बहू भी सिलाई का काम सीख लेगी, तो क्या बुरा है। चार अक्षर भी पढ लेगी।

इतना सुनना था कि यशोदा बिदक पडी—खाक पडे तुम्हारी बुद्धि

पर ! कभी बहू का दूसरा विवाह कर देने की बात करते हो, कभी पढ़ाई सिलाई की। घर का काम कौन देखेगा। अब मुझ में इतनी ताकत नहीं। खेत की कटाई सिर पर है। मैं घर देखूंगी या खेत ! तुम्हारी बातें बहू को इस धरती पर नहीं टिकने देंगी।

रामदास मुस्कराया—'तू तो बहू को उसके भैया के साथ भेजती थी। वह चली जाती, तो कैसे काम चलाती ! अब जमाना बदल गया है, यशोदा ! अपने स्वार्थ के लिये बहू को अंधेरे में मत रख। हमारी लड़की तो है नहीं, बहू की उमर भी अधिक नहीं। इसकी जवानी को असमय ही मार देना शुभ नहीं !' रामदास ने सांस भरी—'रात मेरी चौधरी जगदेवा से बात हुई थी। तुम्हें तो पता है उसका भी एक लड़का जवानी में मर गया था। उसका विवाह साल भर पहले हुआ था। उसने अपनी छोटी-सी बहू की चूड़ियां नहीं तोड़ने दीं। दूसरे गांव में लड़का देखा और बहू का विवाह कर दिया। जितना दान-दहेज उसे अपने लड़के के विवाह पर मिला था, उतना ही, अपने पास से दिया। वह बहू अब दो बच्चों की मां है। आती जाती है। चौधरी का घर अब उसका मैका बना है। बोल, चौधरी ने ठीक नहीं किया क्या ! उस बहू की जिन्दगी सुधर गयी। यहां रहती, तो कोढ़ की तरह उसमें दिल दिमाग में सड़ांध पैदा होती। समूचे घर को सड़ा देती। चौधरी की जिन्दगी बरबाद कर देती। यही तो चौधरी ने मुझ से कहा, भगवान ने तो तुम्हारी बहू के साथ न्याय किया नहीं, तुम उसकी जिन्दगी बरबाद न करना। कहीं दूसरी जगह बैठा देना। पुरानी बातें अब नहीं रहीं, नये जमाने की ओर देखना।

सांस रोक कर यशोदा ने पति की बात सुन ली। वह चुप रही।

रामदास बोला—यशोदा, तू भी औरत है। जवानी के रंग ढंग देख चुकी है। लड़का हो या लड़की चढ़ती धूप की तरह जवानी सभी को अंधा बना देती है। तब पाप-पुण्य लिप पुत का एकाकार हो जाता है। वासना का धुआं जब दिमाग में चढ़ता है तो जिन्दगी की असलियत को नहीं देखने देता। बड़े-बड़े ऋषि मुनी और तपस्वी इस काम वासना की ज्वाला में भस्म हो गये वे अपना अस्तित्व नहीं रख सके।'

तभी यशोदा तुनक पड़ी—'बस चुप भी रहो। यह सब पढ़े भरत के

चाचले ह । दो ममय खॉन का न मिले, ता इश्क मिजाजी धूल मे मिल जाती ह । चाहे इस कान से सुनो चाह उस कान से, मैं बहू का दूसरा विवाह नही करने दूगी । मैं नही कहूगी । वह खुद जाना चाहे, तो जाये । मेरा तो लडका चला गया, अब बहू को भी भेज दो । वह रहेगी, तो मुझे उसी की सूरत मे अपना लडका दिखायी देगा । यशोदा करुणार्द्र हो उठी । आखें भर आईं । वह आचल म मुह डाल कर फफक पडी ।

सुखिया उस समय दरवाजे की आड म खडी थी । वह सास-ससुर की बात सुन रही थी । जब उसने यशोदा का रोती पाया, तो स्वय भी प्रतिभूत हो उठी । वह दरवाजे म हटी और आगे बढ कर यशोदा के पास पहुच गयी । उसन कहा, उठो, अम्मा ! घर म चलो । मैंने सब कुछ सुन लिया । वही होगा, जो कुछ तुम चाहोगी । जब भगवान ने मुझे इस घर की डयौढी पर चढा दिया ह, तब अयत्र नही जाऊँगी । मैं दो अक्षर पढगी और सिलाई का काम सीखूगी ।'

'वाह ! शाबास, मेरी बहू ।' रामदास गद्गद हो उठा —'मुझे तुम स यही उम्मीद थी । देख लिया न, यह तेरी सास अपने पापो मे तुझे बगा बैठी ह । यह गुस्सल तो है, लेकिन ममतामयी भी है ।'

सुखिया ससुर मे घूघट करती थी, लेकिन बोलती भी थी । तभी बोली —पिताजी, अम्मा का मुझ पर अधिकार ह । मैं इनकी बहू भी हू और बेटी भी । इस घर को छोडना मेरा धर्म नही । भगवान न जहा एक बार बठा दी, तो बैठ गयी । इतनी उमर मे, मैं ब्याहता भी हुई और विधवा भी । अब मेरे भाग्य म पति का सुख नही, तो दूसरी जगह जाकर क्या यह स्थिति नही आ सकती ! इसकी कोई सीमा नही ।'

रामदास के मन म बात थी कि यह दे, यह थोडी भावुकता है, वास्तविकता नही । आदश और ह और जिन्दगी मे भी देखी-सुनी बात और । परन्तु वह अपनी बात रोक गया । तभी बोला—'बहू, तेरी बात तो सान की है । इस पर चल सके, तो अच्छा ह । भगवान तुझे बुद्धि दे । तू रहगी, तो हम समझगे हमारा मन्नू जीवित है । चार साल बाद तेरा देवर भी जवान हो जायगा । उसका विवाह भी होगा । सास के बाद तू ही बुजुर्ग बनेगी इस घर की ।'

यशोदा घर म चल दी । सुखिया भी साथ थी । आँगन म चारपाई पड़ी थी, यशोदा बठ कर बोली—'देख, ब ! मलखू का पिता भी ठीक सोचता है । मैं भी अपन स्वाथ के लिये जिन्दगी नही बिगाड सकती । अभी तेरी उमर ही क्या है ? न ही बच्ची है । अभी ता बीस वरस की भी नही । तू कही जायेगा, तो मैं तेरा रास्ता नही रोकूगी ।'

किन्तु सुखिया बोली नही, वह चुपचाप आगन की दहलीज पर बैठा रही । उसके एक पैर का अगूठा धरती पर चल रहा था । स्पष्ट था, सास-ससुर की बातो न उसकी सोई हुइ भावना को जगा दिया अतएव, उसके दिमाग म भूचाल उठ आया था । उसन न तो योग का पाठ पढा था, न त्याग का । यौवनमयी युवती के मानस की आकाक्षा उसके भी पास थी । वह उसे आन्दोलित करती थी । अभी ता पति का मरे पने नही हुई लेकिन रातो रात वह या तो रोती रहती या जागती । स्पष्ट था उन दिनो सुखिया अपने भाग्य म शान्त नही थी । जब वह खेत पर जाती, भैंस के लिय चारा काट कर लाती, तो तब रास्त मे आते जाते लोग जिस तरह का आवाज कशी करत । उसस, सुखिया के प्राणा म बरबस ही हिलोर उठ आती थी । मानो गाव के वे युवक उसके पास कोई अमूल्य वस्तु दखत थे । उसके उठे हुए यौवन को घूरत थ । और वह सुखिया थी, निरी बचारी ! निरी निस्सहाय । भला उसका यौवन, उसके शरीर का वह उदात्त पक्ष कैसे घुमता । सुखिया उस किस प्रकार लोगो की आखो मे ओझल कर पाती । अतएव वह विवश थी । स्वय ही अपन आपसे हार मान बैठी थी । प्रकृति दत्त आशीष जब उसे प्राप्त था गुलाब की सुगन्ध के समान उसका यौवन सुगन्धित हो रहा था, तब न तो वह खुशबू का मार सकती थी, न अपन आपको । लोगो की आखें उस लुभाती थी । व उसे भयावह लगती थी । पनघट पर, या खेत पर जब कोइ औरत उसकी जवानी या रूप का किसी दूसरी औरत म बखान करती, तो तब भी सुखिया अपन आप मे सुकड जाती थी । उस लगता अवश्य ही उसके पास ऐसा कुछ है कि जिसे देख पाकर य औरतें और मर्द उसका उल्लेख करत हैं उसके रूप और यौवन की प्रशशा करत है

उसी समय यशोदा बोली—'बहू, सच कहा है किसी ने, जिसके पैर न फटे बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई। हाँ, तेरा यह वैधव्य कैसे कटेगा, आजकल यही बात मुझे रात-दिन सताती है। ऐसा लगता है कि कोई जहरीला कीड़ा मेरे प्राणों को कुतर रहा है। मैं किसी से कहती नहीं, लेकिन बेचैन रहती हूं। मेरा मलखू तो गया, परन्तु अब उसके नाम पर बैठी हुई तू, तेरी जवानी, तेरा रूप मेरे दिल को नोच-नोच लेता है मैं सोच नहीं पाती क्या करूं, तेरे लिये। मलखू के चाचा तो पहले तो कहा नहीं कि तेरा दूसरा विवाह कर दिया जाय''''तब न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी हां, गाँव के लुगाड़े तब भला क्या पायेंगे, इस घर पर क्या देखेंगे! तुझे याद है ना, मामराज इसीलिए मारा गया कि लोग उसकी लड़की को उड़ा देना चाहते थे उस घर का धन तो गया ही, बाप भी गया। लड़की धनिया को गुण्डे कहां ले गये, आज तक पता नहीं चला। सुना जाता है, धनिया ने ही उन गुण्डों को रास्ता बताया था। बाप को मरवा दिया था।'

सुखिया कहना चाहती थी, सब को एक लाठी से मत हांको। परन्तु वह तब भी चुप थी। मानो उस समय कहीं अन्यत्र थी।

यशोदा बोली—'जमाना बहुत बदल गया है, बहू! आज भैंस के लिये चारा भी नहीं आया। अब तो धूप चढ़ आई। चूल्हे में आग सुलगा दे। दाल रख दे। दोपहर बाद खेत पर चली जाना। अब आगे से मलखू का चाचा भैंस का चारा ले आया करेगा। कभी मैं भी चली जाया करूंगी। तेरा जंगल जाना बन्द कर दूंगी। सास के मन का भाव सुखिया नहीं समझ पाई। वह रोटी बनाने के लिए चूल्हे के पास पहुंच गयी।

2

रघुनाथपुर गाँव उस जिले में इस बात के लिये प्रसिद्ध था कि वहाँ के डाकू और चोर दूर-दूर तक पहुंचते थे। अनेक बार पुलिस ने उस

गाव का घेरा डाला था। कई डाकूआ के घरा की जमीन तक खोद डाली थी। कई व्यक्ति लम्बी सजा पाकर जेल मे बैठे थे और कुछ फासी पर चढा दिय गये थे। लकिन पुलिस की सख्ती के बावजूद भी रघुनाथपुर गाँव के लोग हत्या, लूट और राहजनी सरीख खतरनाक कारनामा का छोडने के लिय तत्पर नही थ। माना उस गाँव क पानी म ही यह असर था, अथवा वहा की मिट्टी म। जोरावर एम ही सरकार और कुछ व्यक्तिया म स एक था। वह नया जवान था। कद्दावर पटठा था। देखन म सुन्दर। किन्तु उस अल्प आयु म ही वह कई खून कर चुका था। लाखा रुपय का माल उसने विविध स्थाना पर जाकर लूटा था। जोरावर न अपना एक दल बना रखा था। उसका सगठन अभेद था। पुलिस की चप्टाएँ विफल रहती न जोरावर पकडा जाता, न उसका काइ साथी। वह अविवाहित था। पुलिस का और गाँव क लोगो का अनुमान था कि जोरावर खूखार और नशस भेडिया तो था ही, दुश्चरित भी था। वह शराबी था नारी-लोलुप था। विस्मय की बात यह थी कि अपन गाव म उसन न तो किसी को सताया, न किसी के यहा डाका डाला। अपितु होता यह कि जोरावर गाव के किसी भी निबल अथवा अशक्त परिवार की सहायता करना अपना मानवीय कर्तव्य मानता था। गाँव की कई विधवाओ की उसने इसलिए मदद की, आर्थिक कठिनाई क कारण वे अपनी पुत्रिया के विवाह नही कर पाती थी। पुलिस का विश्वास था कि जोरावर गाँव म आता और किसी न किसी परिवार म रात बिताकर भोर क अधेरे मे अपन ठिकाने पर लौट जाता था। वह उसी परिवार का एक सदस्य था, जिसका मुखिया चौधरी रामदास था। वह जोरावर का ताऊ था। इस पता था कि ताऊ पाप को पाप ही कहता है, पुण्य नही। इसलिए पुलिस का भरोसा था कि रामदास इस बात का नही छुपायगा कि जोरावर घर पर आया या नही। बराबर म ही उसका घर था। दरवाजे दो थ लकिन बीच की दीवार एक। मलखू मरा तो जोरावर उस घर पर आते ही रो पड़ा था। वह रामदास के पैर पकड कर बोला था, मैं तुम्हारा कु-सेवक हू। वह मलखू का अपना-बडा भाई मानता था। उस रात जोरावर ने मुखिया क भी पैर पकडे थे और

भाभी कहकर उस सम्बोधित करता हुआ बोला—'मैं तुम्हारा सेवक हूं। आधी रात हाजिर रहूंगा। और नोटो की एक बड़ी गड्डी सुखिया के परो म रख कर तुरन्त ही उस घर स पलायन कर गया था। पुलिस का भरोसा था कि ऐसे अवसर पर जोरावर आयेगा, इसलिए जब वह अन्दर मकान म सुखिया के चरणो मे झुका था ता तभी, पुलिस का थानेदार रामदास के पास आकर बैठा था। दो घण्टे पूर्व ही, वह अपने पुत्र मलखू को चिता पर रख कर लौटा था। उसका पुत्र किस तरह जला, प्रचण्ड आग म किस प्रकार भस्मीभूत हुआ वह करुण और व्यथापूर्ण दृश्य रामदास की आखो मे तब भी घूम रहा था। उसी समय जोरावर दीवार फांद कर पलभर मे नौ दो ग्यारह हो गया था। निराश और चकित बना दरोगा उस मकान स लौट गया। रामदास उस समय स्वय करुणा स और मन स हा हाकार स भरा था। वह दरोगा को कुछ बताने की स्थिति में नही था। वह लाचार था। विधवा के क्रूर पदाघात से स्वय तिलमिला उठा था।

आश्चर्य की बात यह थी कि जब जोरावर गाव में आकर रामदास स मिला फिर ताई से, ता उसके बाद ही, एकान्त मे बैठी सुखिया के पास जाते ही, करुणा से बनकर वह उठा था—'भाभी' मैं तुम्हारा सदा सेवक रहूंगा। ये रुपय दिय जाता हू किसी को बताना नही। यह सहायता नही, अधिकार है, तुम्हारा।

जब जोरावर उस घर म पलभर मे पलायन कर गया, ता तभी, यशोदा ने सुखिया के पास आकर पूछा—'क्या कहता था, यह जोरावर! अब तो इस घर इसका आना भी भयावह लगता है। मन कापता है।'

सुखिया की करुणापूर्ण आखें आसुओ से लालित थी। तब यशोदा पास पहुची, ता वह कुछ कह नही पाई, वेदना से परियुक्त आखें ऊपर उठा दी। वे उसके गोरे गालो पर निकल आई थी।

यशोदा लौट पड़ी और कहती गयी—'अब इस जोरावर से सतर्क रहना है। काला नाग है उसका डसा बचेगा नही हा, री बहू! जब मलखू था, तो वह जोरावर उसे अपना बडा भया मानता था। उसका सम्मान भी करता था। अब वह तो रहा नही। इसका रास्ता साफ हो

गया। अपना सगा सहोदर है, तो इससे बचकर रहा भी नहीं जा सकता। जानती तो है तू, तालाब में रह कर मगर से बैर नहीं किया जा सकता यह कम्बख्त जोरावर आदमी को तिनके की तरह तोड कर फेंक देता है जाने कितने घरो का नाश कर दिया, इस जल्लाद ने ! यह तो आदमखोर है। सुनती हू, श्मशान में कुछ मुरदा खाने वाले जानवर रहते हैं लेकिन यहा तो यह जोरावर ही

उसी समय रामदास घर म आया। कुछ देर पूर्व घर के आगन म औरतें एकत्र थी। उनम जोरावर की मा भी थी। जब वे सब लौट गयीं तो घर म आते ही रामदास बोला—'सुनो यशोदा जब भगवान एक काम बिगाडता है, तो सब और बिगड जाते है। यह जोरावर रूप बदल कर श्मशान म आया था। वहा भी पुलिस थी। लेकिन क्या मजाल कि कोई उसे पहचान ले। बचपन म उसके एक हाथ की उगली कटी थी न तो मैं उसी हाथ को देखकर पहचान बैठा था। लेकिन चुप रहा। यहा घर आकर वह मेरे पैरो मे झुका था।

यशोदा बोली—'मेरे पास भी आया। पैर छू गया। कोठे पर बैठी बहू के पास भी गया था। उसने बहू से क्या कहा, यह तो मैंने नहीं सुन पायी। परन्तु यह सिलसिला अच्छा नहीं। साप से खेलना विपत्ति से खाली नहीं।'

रामदास बोला—'कहता क्या, सात्वना दे गया होगा। अब उसका यहाँ आना अच्छा नहीं। मलखू था तो दूसरी बात थी।

यशोदा ने सास भरी—'वह आए, तो उसे रोका भी नहीं जा सकता। लगा सहोदर है, कोई गैर नहीं। वह बोली—'कोई भला आदमी हो तो समझा दिया जाए। वह तो जगली है। खूखार है। किसी की गर्दन मरोड़ देना उसके लिए कठिन नहीं।

अजी उसके पास रिवाल्वर रहता है। वह गोलियो से भरा होता है। जब रात म चलता है तो स्टेनगन उसके साथ होती है। कई बार तो जोरावर की पुलिस से मुठभेड हुई है, सदा बचकर निकल जाता है। हिम्मत की बात है आज भी पुलिस के सामने आया और चला गया।

यशोदा बोली—'वह तो राक्षस है। अपनी जान हथेली पर लिये

फिरता है। पुलिस भी डरती है उससे रुपया भी खाती है। कोई कहता था कि जोरावर भी थाने मे रुपया पहुचाता है। वह पिछला थानेदार था न उसकी बेटी के विवाह मे पैसा दिया था।'

रामदास बाहर की तरफ लौट चला—'अबबहू को समझाना है। यह जोकर आस्तीन का साप है। इसका काटा नही बचेगा।'

उसी समय यशोदा ने सुखिया को सुनाया—सब भाग्य की बात है। इस जोरावर के पैदा होने पर गाव भर की दावत की थी। पण्डित ने मत्र देखकर बताया था, बडा भाग्यवान रहेगा लडका' वह बोली—'खाक पडे उस पण्डित पर ! मा ने भी क्या जन्मा—एक डाकू ! खूनी !'

सुखिया बोली—यह किसी के हाथ की बात नही अम्मा !

अम्मा कहना चाहती थी कि जोरावर की मा भी कम नही। बाप ने भी जिसका लिया, दिया नही। लेकिन वह चुप रही, कुटुम्ब की बात थी। दीवार के भी कान होते है। उसस कहा—'बहू आगन मे झाडू दे दे और देख, मुकेश भी शहर से आता होगा। आज उसका आखरी परचा था, तभी तो वह भैया की अर्थी के साथ नही जा सका। रोटी चढा दे पेट तो भरना है। मलखू के पिता ने तो आज सुबह से मुह मे टुकडा नही डाला। मेरी भी आतें सुकड रही है। बहू आगन की दहलीज पर बैठ गयी। बेटे की याद आयी तो भभूका-सा पेट मे उठा। वह रो पडी। तभी बोली—'हाय ! मुझे क्या पता था कि मेरे बेटे को ऐसा बुखार चढेगा कि फिर उतरेगा नही। पानी की तरह पैसा बहा दिया। जिसने जो कुछ कहा, वही किया। मैंने तो पडित-पडिया तक को नही छोडा। वह सब किया, जो पहले नही किया था। बाहर से आता था, तो पहले मुझे पुकारता था। उसके मुह से निकला 'मा' मेरे प्राणो मे हलचल मचा देता था। मुझे भी 'बेटा' कहने लगता था कि सब कुछ पा गयी हू। धरती पर रहकर भी मैं आसमान मे उडी जाती हू ?'

सुखिया चूल्हे पर बैठी आग सुलगा रही थी। सास जो कुछ कह रही थी उससे वह भी दुखित थी। प्राणो मे हलचल थी। मा का बेटा गया, तो वह भी पति विधवा बन गयी थी। पिछली रात मे ही मलखू बुखार

की गर्मी में वडवडाया था। उसने आंख खोलकर सुखिया को बुलाया था, अपने बाप के घर चली जाना। अकेली मत रहना। कोई दूसरा साथी ढढ लो, और तब सुखिया बीमार की चारपाई की पाटी पर अपना सिर पटक बठी थी। उसके मुह से हाय! निकली थी। वह कुछ कह नही पाइ। समुद्र म उठे ज्वार-भाट की तरह उसके मनोलोक म भी भूचाल उठा था। वह उसे समुद्र की लहरा म समान कही-से-कही उछाल रहा था। वह बार-बार क ाहती और अपना सिर दीवार पर दे मारती।

सुखिया न चूल्ह पर दाल रख दी और आटा गूथ दिया। उसी समय रामदास का छोटा पुत्र शहर स लौट आया। भया को ढाकर जैस वह लुट चुका था। उदास उ मन बना, घर के ओसार म बठा था। तभी यशोदा पास आई, अर, कुछ खा ले। मुह झुठला ल। सुबह से क्या कुछ खाया होगा? तरा भैया ना गया, अब क्या वह वापिस आएगा।

मुकेश ने छोटा पर मुह रखा था। वह रो रहा था। तभी रामदास ने पास आकर कहा—'यह रोना तो जिन्दगी भर का है। इस घर को दाग लग गया। अब तू उठ। दख, भैंस भी सुबह से भूखी खडी है। उसके सामने चारा डाल दे वह थोडा बहुत दूध दती है भूखा पट होगा तो वह भी नही मिलगा।'

मुकेश अभी पद्रह वष का था। पास के कस्वे म उसकी परीक्षा का सेन्टर था। उस दिन सुबह से निराहार था। उसका भया रात म मरा था। घर म कोहराम मचा था। रामदास की प्रेरणा पर मुकेश परीक्षा देन गया था। पैर नही उठन थे कस्वे की ओर! परतु उसे जाना जरूरी था। परचा न दता तो वह समूचा वष बकार जाता। लेकिन घर पर विषादमयी छाया फली थी। मुकेश न भाभी से कुछ कह पाया न मा से। घर में वही एक छाटा था तो दोना मे लगता था। कोई वस्तु पाने के लिए जिद्द करता था। लेकिन उस दिन वह घर आया। और चुपचाप बठ गया। जब पिता न भस को चारा डालन का बात कही, तो वह उस काय का सम्पादन करन लगा।

मा न कहा—भस का पानी पिला द बेटा। प्यासी होगी। बिना बालना जानवर है, इसकी सुध तो स्वय लेनी होगी।' यशादा न पास

बैठे पति की ओर देखा—'उसने भी मुंह नहीं भुकाया। चना-चबेना लाऊं?'

रामदास बोला—'मेरा मन नहीं करता। आज खेत में पानी देने का ओसरा आया था वह भी निकल गया।'

यशोदा बोली—'तुम्हें तो खेत के पानी की सूझती है। मेरी तो दुनिया लुट गयी। बेटा गया, सब कुछ चला गया।'

रामदास बोला नहीं, वह स्वतः ही द्रवीभूत बना पीड़ा का घूंट भर कर रह गया। ऊंचे स्वर में यशोदा बोली—'बेटा मुकेश, देख तेरी भाभी ने चूल्हा सुलगा लिया है। पिता की चिलम में तमाखू आग रख दे। यह तो दिन में दस बार हुक्का पिया करता था, आज एक बार भी नहीं? कुछ खाया भी नहीं। जब भगवान हमारे खिलाफ है, तब भला किसे दोष दें। सब अपने मुकद्दर का खेल है।'

रामदास बोला—'यशोदा, वह है न पंडित चण्डीदास, अर्थी के साथ गया था। जब लड़के की चिता जल उठी थी, तो वह चण्डीदास मेरे पास आकर बैठ गया। वह बारह बरस काशी में पढ़ा था। बड़ा विद्वान है। भाग्य का हेठा है। गांव में पड़ा है। कहीं किसी शहर में होता, तो विद्वान पंडित कहलाता। अच्छा पैसा कमाता।' उसने सांस भरी और कहा—'चौधरी रामदास, कहने को तुम बाप हो और जो चिता में जल रहा है, वह तुम्हारा बेटा, लेकिन यह दुनिया के नाते रिश्ते थोथे हैं, बेकार हैं। सबके अलग-अलग रास्ते हैं। ये दुनिया के सम्बन्ध कच्चे धागे में बंधे हैं। वह मुझे सांत्वना दे रहा था।'

यशोदा रुंधा हो उठी—'अजी, छोड़ो भी उस पंडित की बात! उसका भी एक लड़का मरा था। तब मैं गयी थी, उसके घर पर वह वेदान्ती पंडित रो रहा था और छाती पीट रहा था। कथनी और करनी में बड़ा अंतर होता है। यह माया मोह सबको सताता है, जिसका जितना सम्बन्ध है, वह उतना ही कालता है सालता है, छाती में दर्द पैदा करता है।'

रामदास ने हुक्के में दम मारा और घना-सा धुआं ऊपर की तरफ छोड़कर बोला—'तू ठीक कहती है यशोदा! यह मायावी संसार है।

मेरा मलखु इधर कुछ समय से अजीब तरह का व्यवहार करने लगा था। पिछले दिनों जब खेत कट रहा था तो मेघा चमार उधर जा पहुंचा। वह गरीब तो है ही, अपाहिज भी है। मलखू ने गेहूं की बालों से बंधी एक गठरी उसे उठा कर दे दी। वह चेता है न, तो उसने आकर बताया था। उसी ने कहा—'मलखू चौधरी का अब स्वभाव बदल चला है, पहले किसी को एक दाना भी नहीं देता था। गुर्राता था, मारता था।'

यशोदा बोली—'हां, अब उसकी ऐसी आदत बन चली थी। पहले तो मैं किसी को कुछ दे देती, तो डांटता था। कहता था, खेत का दाना बड़ी मशक्कत से आता है। खून-पसीना एक होता है। आसमान आग उगलता है और धरती गरम तवे की तरह तपती है। किसान का शरीर झुलस जाता है। बड़ी मेहनत का दान है, किसान का।'

रामदास बोला—यह बात तो ठीक है। बड़ा श्रम की कमाई है, खेत की मिट्टी के साथ मिट्टी बनना पड़ता है, तब भी भगवान की इच्छा पर है। चार दाने घर में आ जायें, तो बड़ी बात समझो।'

यशोदा ने सांस भरी—'हां, यह तो है ही। अभी तीन वर्ष ही की है, पकी फसल ओलों ने चौपट कर दी थी। रुपए में एक आने का अनाज भी किसानों के घर में नहीं आया। उसने कहा—मलखू के चाचा, तुम्हारा वह बेटा तो जैसे खुद समझ गया था कि अब उसे जाना है। इस संसार की सराय से उसका डेरा उखड़ना है। इसीलिए तो वह अब गुस्सा भी बहुत कम करता था। कोई कुछ मांगता, तो दे देता था। पिछले दिनों फसल का कई मन अनाज और धान उसने चुपचाप ही जाने किस-किसको दे दिया था। वह तुमसे डरता था। मुझसे भी आंख चुराता था। घर में किसी आदमी को पता नहीं चलने देता था।

रामदास ने संतोष की सांस ली अच्छा करता था। अपना जन्म सुधारता था। इन्सान लेता तो है, देता नहीं। तुम्हारा बेटा देने लगा था, यही उसका पुण्य का काम था, इस बार मंदिर के पुजारी को भी उसने दो मन अनाज दिया था। पुजारी ने स्वयं मुझसे कहा था। रामजी दास गरीब तो है ही पिता कुछ दिये, लड़की को उसकी ससुराल भेज रहा था। तुम्हारे मलखू को पता चला तो गांव के दुकानदार से एक साड़ी ले,

घर रामजी दास की औरत को दे आया। पिछले दिना उम दुकानदार का रुपया दिया था।'

यशोदा न पूछा—'तुम्हें कैसे पता चला ?'

'अजी, बात क्या छुपी रहती है। स्वय दुकानदार न मुझे बताया था। उसी न कहा था, अब तक मलखू चौधरी दिल का उदार हो चला है। भगवान भी उसे दे रहा है। फसल अच्छी उठ रही है।'

यशोदा बोली—'इधर कई वर्ष से भगवान ने कृपा की है।

मलखू की मा, जैसी नीयत वसी बरकत! भगवान दयालु है। सब देखता है।

उसी समय छोटा पुत्र घर म से आया, चाचा, रोटी खालो।

यशोदा बोली—'अरे, यही ला दे। पिछले दिना वर्षा क्या हुई इधन भी गीला हो गया। तेरे चाचा घर म रोटी खायेंगे तो बहू घूघट करेगी, धुए से आखें खराब होगी।'

मुकेश लौट गया। यशोदा भी उठ चली। जाकर देखा कि भैंस ने चारा खा लिया था। वह यशोदा की ओर देख रही थी। शायद कुछ माग रही थी।

रामदास बोला—'दिन छिप चला है, भैंस का दूध निकाल ले।'

लडका मुकेश थाली मे दाल और रोटी लेकर आ गया। जब रामदास खाने लगा, तो तभी पडौस की हिरिया वहा आयी। वह बूढ़ी थी। रामदास से साला बडी थी। उसे देखकर वह बोला—'आओ, चाची! रोटी खा ले।'

'खा, भया! भगवान ज्यादा दे!' उसने लम्बी सास ली और कहा—'इसी चबूतर पर मलखू बैठता था। दिखता था। सच्चा चौधरी लगता था। मैंने उसे कभी अकेला बैठा नही देखा। कोई-न-कोई उसके पास बैठा दिखाई देता था।

यशोदा भी वहा आ गयी। बात सुनकर बोली—'चाची, वह पछी तो उड गया। अब जाने किस पेड की डाल पर जाकर बैठा होगा। रात जब प्राण निकलें, तो उससे पहले उसने एक बार मेरी ओर देखा था। 'मा' कह कर चुप रह गया था। जरूर उसके मन म तडप थी।' इतना

कहते ही ही यशोदा के मन का करुण भाव तिलमिला उठा। वह रो पड़ी।

रामदास बोला—'अब भगवान का नाम लो। भाग्य में भरी वह सुन्दर पंछी जहां जाए, सुख से रहे। उसे शांति मिले। हमारा सम्बन्ध तो समाप्त हुआ। हम न बाप रहे, न वह बेटा। वह इस मायाजाल से निकल गया। आगे चला गया।'

हिरिया ने कहा—'हां, भैया! जब तक सांस है तब तक जहान है। हमारा सम्बन्ध है, अजीब गोरखधन्धा है, इस जिन्दगी का!'

उस समय चरवाहे और चौपाये जंगल से लौट रहे थे। कुछ किसान कन्धों पर हल रखे, बैलों को हांकते हुए अपने अपने घरों की ओर बढ़ रहे थे। गायें रंभा रही थी और उनके बच्चे दौड़ते हुए अपनी माताओं के साथ आगे बढ़े जा रहे थे। उसी ओर देखते हुए रामदास बोला— देखो, चाची! यह मनुष्यों की दुनिया है। यह भी अपना पराया समझते हैं। बच्चे किस तरह दौड़ते हैं अपनी माताओं की ओर ये माताएं भी किस तरह हुलसती हैं, अपने बच्चों को देख-देख। बड़ा अजीब संसार है यह! उसने कहा मुझे आज भी याद है, वह यशोदा अपने मलखू के लिए प्राण तक निछावर करती थी। कभी उसे किसी प्रकार की शारीरिक बीमारी होती, तो रात भर लिए बैठी रहती। मैंने कई बार कहा, तू औलाद का क्या सहेगी स्वयं मर जायेगी तब न रहेगा ढोल, न बजेगी बांसुरी

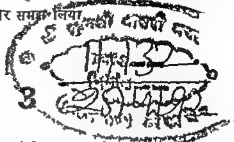
हिरिया बोली—'भैया, ऐसा ही होता है। औरत पेट फाड़कर और सिर से कफन बांध कर औलाद जनती है, उसे जन्म देती है। तभी तो मां जन्मदात्री कहलाती है। मां बनने के लिए औरत अपना सर्वस्व अर्पण कर देती हैं।

रामदास रोटी खा चुका था। लड़का थाली और लोटा ले चला। तभी वह बोला— बेटा चिलम भी भर देना। अब पड़ूंगा रात भर नहीं सोया। सिर भारी है। शरीर टूट रहा है।'

हिरिया ने हामी भरी—'अब जिन्दगी भर सोते रहना।

रामदास बोला नहीं। उसके मन में था नाद तो चली गयी। ।राम भी गया। अब तो जिन्दगी का अवसाद, मन की पीड़ा और

व्यथा का बोझ सिर पर ढोते रहना पड़ेगा बुढ़ापा कैसे खराब होता है, यह मैंने स्वयं देख लिया और समझ लिया



यह स्पष्ट था कि रामदास कोई अजूबा नहीं था। उसके मन में ममता का एक प्रगाढ़ स्रोत उफन रहा था। रात आधी से ऊपर जा चुकी थी। चांद निकल आया था। रामदास उठ बैठा। लाठी उठा ली। वह चारपाई छोड़ कर जंगल की ओर चल दिया। जिधर उसके खेत थे, उससे कुछ दूरी पर ही श्मशान भूमि थी कि जहाँ उसका मलखू अग्नि को समर्पित किया गया था। दूर से ही रामदास ने देखा कि एक चिता जल रही थी। उसमें रखा मुर्दा जल चुका था, केवल कुछ मोटी लकड़ियाँ चटख रही थीं। हवा का स्पर्श पाकर उस चिता के अंगार परस्पर टकरा रहे थे और दूर-दूर तक प्रज्वलित होकर प्रकाश कर रहे थे। बलात् रामदास के पैर उसी ओर बढ़ गए। समीप जाकर उसने देखा और उसे लगा कि बड़ा भयावह दृश्य था वह। एक पेड़ पर उल्लू बैठा था और वह अपनी भारी आवाज में बोल रहा था। कहीं सियार चीत्कार कर रहा था। रामदास के पुत्र मलखू की चिता ठण्डी पड़ चुकी थी। केवल एक दो लकड़ियाँ अभी जलती शेष थीं। रामदास को पता था कि वह लकड़ियाँ जिस पेड़ की थीं, किसी समय स्वयं मलखू उन्हें काट कर लाया था। उसका विचार था कि उस पेड़ के गुद्दे बड़े काम के थे। वह बढ़ई से चिरवा कर उनकी अलमारी बनवायगा। यशोदा का मत था कि उस लकड़ी का एक बढ़ा सन्दूक बन सकेगा। घर की कीमती वस्तुएँ उसमें रखी जा सकेंगी। किंतु जब स्वयं मलखू का निधन हुआ तो वे लकड़ी के गट्ठे गाड़ी में डालकर श्मशान पहुंचा दिए गये। वे मलखू की छाती पर रखे गये

रामदास अपने पुत्र मलखान—मलखू की चिता के समीप खड़ा था।

साय साय करती हवा चल रही थी। कही दूर कुत्ते भाग रहे थे। जब रामदास उस स्थान पर खडा था, तो एक गीदड उस ओर आया और रामदास को खडा देख, किंचित रुका और फिर आगे बढकर अदश्य हो गया। उसको पता था। बचपन से सुनता आया था कि उस रात के सन्नाटे में भूत प्रेत जलती चिता के आस-पास घूमते हैं। वे नाचते हैं, खिलखिलाते हैं। चूंकि रामदास जीवन में प्रथम बार के समय उस स्थल पर पहुंचा था इसलिए, वह स्वतः ही उन भूतों की कल्पना करके सिहर उठा था। सयोग की बात यह थी कि उसी समय उस जलती चिता के समीप उसे कोई बैठा दिखाई दिया। तब परवस ही, वह भय से काप उठा। काश, वह उस स्थल से भाग जाता। परन्तु उसके पैर भारी हो गये थे। सुन्न पड गये थे। मुह सूख गया था। आखो के आगे अधेरा छा गया था।

तभी आवाज आई—'कौन, चौधरी रामदास—।

तब वह और अधिक सिहर उठा। कापती आवाज में बोला—'हाँ, मैं रामदास।

'अच्छा पुत्र की जली चिता देखने आये हो। अब क्या रखा है। राख का ढेर है।'

रामदास सम्भला कौन भगवाना—

हां, चौधरी। वह व्यक्ति लाठी के सहारे रामदास के पास उठ आया। समीप आकर बोला—'यह चिता मेरी पत्नी की थी। हम दोनों का साठ साल का साथ। बडी फरमाबरदार थी। बडी हितू थी। वह थी, तो मैं सब ओर से सिकुड कर उसी की सीमा में बधा रहता था।

रामदास बडे ममत्व के साथ मुस्कराया—'मैंने भी तेरी पत्नी को देखा समझा था। कई बार खेत पर काम करने आई थी। सचमुच, पत्नी भक्त था। उसने सास भरी तो वह चली गई। कोई तकलीफ थी क्या अब तू अकेला और एकाकी बन गया।

भगवाना बोला—'चौधरी, मैं तो जाति का चमार हू। जिन्दगी की बहुत कमजोर धरती पर खडा हू। जब मैं लडाई छिडने पर फौज में चला गया था तो घरवाली ने कई चिट्ठियाँ डलवाई, तुम लौट आओ।

हम एक रोटी के दो हिस्से करके पेट भर लेते। तब मैं भी फौज में नहीं टिक पाया। कई बहाने बनाये और त्याग पत्र देकर चला आया।

रामदास बोला—'फौज में रहता तो काम का आदमी बन जाता। तब तो तेरा शरीर भी लम्बा चौड़ा था। कछावर जवान था। अब पेंशन पाता। आज अपनी सरकार है ना, फौजियों का बड़ा सम्मान करती है। तू भी उनकी पंक्ति में खड़ा होता।

भगवाना क्षणिक चुप रह गया। तभी बोला— चौधरी मैं हूँ तो गंवार परन्तु इतना समझ पाया हूँ, जिन्दगी में यदि दो प्राणी मिलकर बैठ जायें, दोनों के प्राण मिल जायें, तो उससे बड़ा सुख इस धरती पर दूसरा नहीं। मेरी घरवाली ऐसी ही थी। मेरे पथ पर अपनी आँखें बिछाये रहती थी। अब मुझ से किसी किसान के यहां काम तो होता नहीं, रापी और जूती गांठने का सामान लेकर पास के कस्बे में चला जाता हूँ। रुपया बारह आने ले आता हूँ।'

रामदास बोला— तेरी घरवाली का नाम भागवन्ती था न, 'भग्गो कहलाती थी वह।

भगवाना बोला—'हां, चौधरी। उसका नाम भागवन्ती था। मेरी तरह उसने भी बड़ा संघर्ष किया। विपत्तियां जब एक बार हम दोनों के पैर पकड़ बैठी तो उसने छोड़ा नहीं। भागवन्ती के चार लड़के और दो लड़कियां पैदा हुई थी। लड़कियां तो हैं, लड़का एक नहीं। दो तो जवान बनकर मरे थे। कमर टूट गई, बेचारे की। फिर भी उसे मेरा ही ध्यान रहा।'

रामदास बोला—'तो इस समय कैसे आ गया। मैं तो खेतों की तरफ गया था। इधर भी बढ़ आया।'

भगवाना बोला—'चौधरी, मन नहीं माना। घर सूना था। चार पड़ौसी आ गये थे, तो उसकी लाश को अर्थी पर डालकर ले आये। लेकिन मुझे तो वह घर काटता है। डर लगता है। लोग कहते हैं कि शरीर से निकली आत्मा अमर होती है। वह मरती नहीं। कहीं दूर नहीं जाती। यहां आकर मैं भी अपनी भागवन्ती की आत्मा को देख रहा था। उसकी चिता की जलती हुई लकड़ियां चटख रही थी, तो मुझे लगा,

किस पर छोड़ गई। जीते जी तो यह ऐसा नहीं करती थी। अभी पिछले दिनों की बात है बीमार थी, अशक्त थी, लेकिन जब उसने सुना कि मैं बेसन का चीला खाना चाहता हू तो तुरन्त उठ बैठी। चूल्हे म आग थी। उस पर तवा रखा और चीला बना डाला। बस, वही उसका अन्तिम समर्पण था। फिर चूल्हे पर नहीं बैठ पाई।

रामदास बोला—'लेकिन यहा इस भरी रात म क्या आ गया। डर नहीं लगा।'

'न चौधरी मैं अपनी भागवन्ती को साथ देखता हू वह शरीर म भस्म हुई है मन और आत्मा से नहीं। वह जरूर मेरे आस-पास होगी।

'अरे पगले! मेरी तरह तू भी अभागा है। म भी तो अपने मलयू को देखने यहां आ गया। यहां भला क्या रखा है राख का ढेर है?' उसने मास भरी—'अरे भगवाना! यही तो भगवान की लीला है। उसका खेल है। यह जिन्दगी तो मेला है। जो बिछड़ गया। वह फिर नहीं मिलता। किसी दूसरे जन्म म साथ होता हो, तो इस कौन जानता है। बड़े बड़े पडित भी सिर खपा कर रह गये। उस भगवान का रहस्य नहीं पा सके। आ, चल गाव की तरफ लौट जा। अपने घर जाकर पड।'

भगवाना बिलख उठा—'अब मेरा कोई घर नहीं, चौधरी! घर तो घरवाली के साथ गया। वह क्या मरी मुझ को मार गई। अब मैं उसी को खोजता हू। उसे पाना चाहता हू। जरूर मेरा उसका कई जन्मों का साथ रहा। मुझे भरोसा है वह अकेली देर तक नहीं रहेगी। मुझे बुला लेगी। मेरा हाथ पकड़ लेगी।

चौधरी रामदास उस वृद्ध भगवाना को देख स्वय भी करुण हो उठा। उसके गले में कुछ आ गया। जब वह बार-बार थूक के साथ उसे गटकने लगा तो तभी दूर खड़े सियारों ने शोर मचाया। श्मशान का वह भयावह दृश्य और अधिक कठोर हो उठा। तभी रामदास ने गांव की ओर देखा—'आ चल मेरे साथ। आज कुछ खाया भी था या नहीं।

भगवाना बोला—कल पड़ोस की बहू दो रोटी दे गई थी वे भी

रखी है। खाई नही गई। गले में नही उतरी। लगता है, भागवती गई तो अब खाना भी गया। ऐसे ही एक दिन मर जाऊंगा। अपनी कोठरी में मरा पड़ा हूंगा। किसी पड़ौसी को सुध आएगी तो मैं भी इस धरती के टुकड़े पर आ पड़ूंगा। घर चल दिया। गांव के छोर पर आकर वह लकड़ी का सहारा लिए अपने घर की ओर चल दिया। लेकिन रामदास उस समय घर नही गया। उसकी इच्छा मंदिर पर बैठने की हुई। आश्चर्य जो व्यक्ति कभी मन्दिर की प्रतिमा को हाथ जोड़ने नहीं आया। उस मंदिर के चबूतरे पर भी आकर नहीं बैंठा, वह तब उस रात के सन्नाटे में मंदिर के चबूतरे पर जा बैठा। मन्दिर के द्वार सींकचे के थे। सलाखों के पार दीपक जल रहा था। प्रतिमा का स्वरूप भी दिखाई दे रहा था। देवता का वह सौंदर्य मानो उस क्षण वन रामदास के प्राणों में हलचल मचा उठा। उसे लगा इस देव प्रतिमा में कुछ तो है। यह सदा सुहागिन है। मुस्कराती है। भक्तों के आंसू देखकर इसकी मुस्कान यथापूर्व बनी रहती है रामदास को याद आया, एक बार उसकी पत्नी यशोदा ने उससे कहा था यहां घर पर बैठे हुक्का बजाते हो कभी मंदिर पर भी जाकर बैठा करो। कोई-न-कोई कथा वाचक आता है तुम भी राम-नाम की कथा सुन आया करो। लेकिन रामदास ने उस समय मुंह बनाकर कहा था, यह सब ढोंग है, मिथ्या है। यह भी पेट भरने का एक तमाशा है। कभी भगवान शंकर या राम का स्वरूप दर्शाया जाता है कभी भगवती जगदम्बा का मैं कहता हूं यह सब कोरा रहस्य है। यह किसी की समझ में नहीं आता।'

तब उपेक्षा से यशोदा बोली—'तो तुम्हें क्या अच्छा लगता है। बस जब देखो मेरे हुक्के से लगे बैठे रहते हो। बहुत हुआ तो अपने बच्चों को प्यार करने लगते हो मैं कहती हूं दुनिया इतनी छोटी नहीं है। बहुत बड़ी है। भगवान की लीला भी अपरम्पार है। बीबी बच्चे तो एक दिन नहीं रहेंगे, लेकिन भगवान का अमर गान सदा गूंजता रहेगा।

लेकिन उस रात के समय जब कि स्वयं रामदास के प्राणों का क्रन्दन उसे व्यथित कर रहा था मन प्रदेश समुद्र के भूचाल की तरह कोलाहल में प्राप्त था तो तब वह स्वतः ही बोला— हाय! वह बूढ़ा चमार

भगवाना अपने मन की कितनी गहरी व्यथा को लिये इस रात के सन्नाटे मे, पत्नी की जलती हुई चिता के सामने बैठा था और मैं, हा, रे, रामदास' तू भी तो अब भगवाना की तरह अपनी मानसिक करुणा को लिये पुत्र की चिता के समीप जा खड़ा हुआ था भला वहा अब क्या रखा था। हाड-मांस का शरीर भी नही था। वह भी आग की लपटों में स्वाहा हो गया था। अब तो वहा राख का ढेर था। कल लोग जायेंगे और चिता की उस राख मे से मलखू की चन्द हड्डिया चुन कर ले जायेंगे तब उन्हें गंगा के प्रवाह में छोड़ आयेंगे। वाह, रे इन्सान! वाह रे ससार!

तभी रामदास ने मन्दिर के अन्दर जलते हुए दीपक की ओर देखा। देवता की मूर्ति तब भी मुस्करा रही थी मानो रामदास पर हस रही थी। जीवन मे प्रथम बार उसे लगा, वह भी कोरा अहमन्य है। घमण्डी है। स्वार्थी और स्वेच्छाचारी है। उसने किसी को नही बख्शा! स्वय अपने आप को ठगा, घरवालो को और गाव के समाज को ठगता रहा।

रामदास स्वत ही सहम गया। मानो वह अपने-आपसे डर गया। वह स्वय ही भूत था। दुर्दान्त भेड़िया था। रामदास की श्वास रुक चली थी और आखो के समक्ष अन्धेरा छा गया था। उसी समय उसकी आखो के समक्ष आया, गाँव का वह रणधीर, जिसे धोखे से छल से रामदास ने इसलिये मरवाया कि उसके हिस्से की जमीन वह स्वय हड़पना चाहता था। रणधीर की औरत अभी जीवित थी। वह मजदूरी करके अपने बच्चो का पेट पालती थी। चूकि गाव मे उसी प्रकार का दम्भ और छल प्रपच चल रहा था। चोर चोर मौसेरे भाई की परम्परा ने जोर बाध रखा था, इसलिए रामदास ने निर्बाध रूप से अपनी जमीन बढा ली थी। रणधीर के पिता को कुछ रुपया उधार दिया था और उसका खेत हरन कर लिया था इसलिए जब वह पिता मरा, तो उस से एक सप्ताह पूर्व ही, रामदास उसके घर गया और उस बीमार पड़े अशक्त व्यक्ति को धीरज देता हुआ बोला था, मैं तुम्हारे साथ हू, इस कागज की मियाद समाप्त हो रही है। अगूठा लगा दो। मेरा रुपया तो जब मिलेगा, मिल जायगा, तब तक मैं तुम्हारा खेत जोतता रहूगा

रणधीर के पिता ने अगूठा लगा दिया। तभी उसने कहा था रामदास चौधरी म नहीं बचूगा। डाक्टर जवाब द गया। तुम मेरे बच्चा का ध्यान रखना। खेत वापिस दे सको, तो द देना। रणधीर रुपया उतार देगा। अभी छोटा है पर दो वर्ष बाद खेत जोतने लगेगा।

तदिन रणधीर का पिता तो चला गया। उसका घर अभावग्रस्त तो था ही अनाथ भी हो गया। जब रणधीर की मा अपना खेत वापिस लेने रामदास के पास प ची तो उसने विकृत भाव से मुह बनाकर कहा था एक ह ार रुपय दिय थ थोड़ा के मिला, सूद लगाकर वह द आओ और खेत ले लो। किन्तु उस बेचारी के पास रुपया कहा था। जिस तरह खाली हाथ आई उसी तरह लौट गयी। सयोग की बात, उसी समय एक व्यक्ति मिदास के पास आया और रहस्यभरी आखो से चौधरी को देखकर बोला— सुना तो होगा तुझे, साप के बच्चे साप होते है कैंचुए नहीं।

चौक कर रामदास न कहा— क्या मतलब। मैं समझा नहीं।

एक साल बाद समझ जाओगे, चौधरी। रामलखा का बेटा रणधीर अब जवान हो चला है। एक दिन मन्दिर पर बैठा कह रहा था मेरा पिता कभी मुकरा नहीं। मार नही खायी। मैं चौधरी रामदास से खेत ले लूगा। छोडगा नही यह ताता है। घी सीधी ऊँगली से नहीं निकलता टेढ़ी करके निकाला जाता है।

सुनकर रामदास न हु किया और चुप रह गया। उसी सप्ताह रामलखा का बेटा किस तरह गायब हुआ, कहा गया इसका पता नहीं चला। उसकी मा पुलिस म गयी परन्तु वहा भी धक्के मिल। पुलिस ने उसको किसी प्रकार सान्त्वना नही दी। तब गाव म यह बात फैली थी कि चौधरी रामदास न पुलिस को रुपया दिया था। लड़का उसी ने मरवाया और लाश नदी म फिकवा दी होगी।

उस समय भोर की पौ फट चला था। रामदास के एक अपराधी के समान अपने स्थान से उठा और मन्दिर के सीढ़ियों पर अपना माथा पटक दिया। तभी चीख उठा—'म हत्यारा हू। घातक हू। रामलखा का पुत्र रणधीर मैंने मारा, तो भगवान ने मेरा पुत्र छीन कर दण्ड दिया

है गाँव नहीं जानता तो क्या हुआ भगवान जानता है, मेरा मन जानता है'

मन्दिर की सीढ़ियों पर रामदास ने अपना माथा जोर से पटक दिया था। उसके मन का आवेग इतना तीव्र था कि वह उसका आघात सहन नहीं कर पाया। खून निकल आया। वह रामदास के कुरते पर टपक गया। वह पीछे नहीं हटा, उसी घर के पास धड़ाम से पछाड़ खा गया

भोर हो गया था। मन्दिर का पुजारी आ चुका था। किन्तु देवता के दर्शन करने वाले नर नारी यह देखकर चकित थे कि चौधरी रामदास मरा नहीं था। मूर्च्छित बना उस मन्दिर के द्वार पर पड़ा था। यशोदा भी वहाँ आ गयी। वह बिलख पड़ी। गाँव की सहानुभूति सिमट कर उन दोनों पर समर्पित थी। कोई कह रहा था, हाय! चौधरी लड़के की मौत का सदमा नहीं सह पाया लेकिन उस भीड़ में कोई ऐसा भी था, जो कह रहा था, पाप का फल पाप ही होता 'पुण्य नहीं रणधीर की माँ अब रोते रोते अंधी हो चुकी है, अपने बेटे के लिये

4

हवा का एक झोंका आया और वह चौधरी रामदास के मन का सन्तुलन खो बैठा था। रामदास मन्दिर से उठ आया, परन्तु घर आकर उसने चारपाई पकड़ ली। गाँव के वैद्य ने यशोदा को दिलासा दिया, पुत्र की मौत का गम बैठ गया है, अथवा कोई अन्य रोग नहीं। लेकिन चौधरी बार बार चौंकता था, विस्फारित बनकर अपने चारों ओर देखता था। कुछ खाने के लिये दिया जाता, तो उसकी ओर से भी मुँह फेर लेता था। जो व्यक्ति दिन में अनेक बार हुक्का पीता, अब वह भी उसे अच्छा नहीं लगता था।

उस घर पर यशोदा के सिर पर एक नयी परेशानी सवार थी मानो भूत की तरह उस से कोई चिपट गया था। वह डरा रहा था। ससुर की उस नयी अवस्था को देख, मुखिया ने अपने पति के बिछोह का दर्द भुला दिया था। किसी औरत ने उस रणधीर के मरने और उसकी मां के रोदन भरे चीत्कार का हाल बता दिया था। उसके मन में भी उस बात से प्रतिरोध पैदा हुआ था। मुखिया को इस बात का पता था कि उसका पति मलखू अपने पिता की उस बुर्दाक्त अवस्था से, मन के क्रूर भाव से सहमत नहीं था। उसने कई बार कहा था, वह जमीन लौटा दी जाय। उसने बहुत अपमानित किया है। मूल और सूद दोनों का भुगतान हो चुका है।

परन्तु रामदास पुत्र की बात से सहमत नहीं था। उसका मत था, इस तरह की उदारता और अव्यवहारिकता इंसान को ऊपर नहीं उठने देती। उसे भूखा मारती है और उसने पुत्र के समक्ष गांव के कई उदाहरण पेश कर दिये। लाला रामदत्त निर्धन से किस प्रकार धनिक बना, यह पुत्र को बताया। चौधरी जसपत केवल दस बीघे खेत का स्वामी था, अब पांच सौ बीघे जमीन का गांव में जमींदार है।

लेकिन पुत्र जवान था। उसका उदात्त पक्ष उज्जवल था। उसे पता था कि पिता ने जिन कमियों के उदाहरण दिये, वे अभाव की अवस्था में सुखी थे, संतुष्ट थे, परन्तु धनवान बने, तो जीवन की अशान्ति, व्यथा वह अपने साथ समेट बैठे थे, लाला के पास धन था, परन्तु वह लकवा का रोगी बन कर दो वर्ष से बिस्तर पर पड़ा था। उसका पुत्र बाप की मौत चाहता था। पिता द्वारा उपार्जित किया धन वह न केवल अपना समझ बैठा, अपितु पिता के रोग पर पैसा व्यय हो, यह उसे पसन्द नहीं था। फलस्वरूप पिता उस पुत्र की दृष्टि में उपेक्षा का पात्र था रहा जसपत चौधरी, उसके जीवन की विवशता व्यथा और कायरता अकथनीय थी। जब एक बार उसके घर पर डाका पड़ा, तो डाकू उसकी पत्नी को मार गये। उसका धन और जेवर लूट ले गये। यद्यपि जसपत चौधरी जान से नहीं मारा गया परन्तु आसुओं ने उसकी आंखें फाड दी थी, हाथ काट दिये थे वह मतीम था मर जाता तो चैन पा सकता था

तब रामदाम झल्ला पडा था—'चुप रहो। चुप रहो। मेरे सामने पडिताई का राग मत अलापो। अभी तुम जिदगी का रहस्य नही जानते। समझते नही, यह मजिल किस तरह पूरी की जा रही है।' उसने कहा—'बेटा, जब मेर पिता मरे तो उनके पास सिर्फ बीस बीघे के खेत थे। अब भगवान की मौज है। पचास बीघे जमीन हो गई है, तुम दोनो भाइयो के पास। मैं मर जाऊगा, तो तुम और मुकेश आधी आधी बाट लेना।'

उसी समय मलखू कातर हो उठा—'आप बहुत आग की बात सोचते है। पता नही, तब तक किस राजा का राज हो हा अभी अब तो लडाई होकर चुकी है। हिटलर मारा गया। दुनिया के बहुत स राज्य तबाह हो गय। भारत म भी जिस-जिसकी तूती बोलती थी, उनमे स एक भी दिखाई नही देता बापू! सूरज नही छिपता था अग्रेजी राज्य मे। लेकिन अब देखो, क्या हाल है? कछुवे की तरह ब्रिटिश राज्य सुकड गया है। गदन भी दिखाई नही देती। न पर और पजे—आधी दुनिया को ब्रिटिश राज ने कुतर लिया था'

अरे, ओ वेदाती के बच्चे! तू समझता क्यो नही, यह ससार परिवतनशील है। यह राजा ब्रिटिश राज की बात लेता है, मैं कहता हू, बडे-बडे योद्धा और शूरवीर तबाह हो गये। यह तो परिवतनशील ससार है। सब जानत हैं, यह ससार मिथ्या है। झूठी माया है फिर भी लोग हाथ पर-हाथ रखकर नही बैठ सकते। आदमी चलता है। सफर तय करता है। सुना नही, महान सिकन्दर का नाम! वह यूनान से चलकर भारत पर चढाई करने आया था। उसने बहुत से राजाओ को परास्त किया। उसका अपना इतिहास बना था। उसका शौय, उसका साहस इस और से उस ओर तक प्रचारित हो गया था। उसने इस देश की धरती को कपा दिया था। तभी तो सैकडो वष बीत गये पर उसका नाम लिया जाता है। सुना नही, वीर योद्धा वसु धरा—

मलखू कुछ बोला नही। पिता से विवाद करना बेकार था, पिता ने दूसरा से जो कुछ सुना, वह जबान पर था, कहा जाता था। उमे पता था कि पिता अधिक पढा लिखा नही, लेकिन दूसरो स सुनी वाणी को

दोहराता सरल काम था। यही उसका मिथ्याभिमान था।

कदाचित सुखिया के अतिरिक्त अगर किसी को पता नहीं था कि मरने के दो दिन पूर्व स्वयं मलखू ने सुखिया से कहा था इस घर का पाप जाने किस किसको मारेगा, न डूबेगा पाप जरूर फलेगा और फूलेगा।

तब सुखिया बोली नहीं थी। आपने पापा के किसी कान में पति की उस अमरवाणी को छुपा बैठी थी। यह स्पष्ट था, पिता की तरह बेटा भी न तो साक्षर था, ना ही किसी सभ्य समाज में उठता-बैठता था। फिर भी, उसका हृदय पिता से अधिक निर्मल था। उसने किसी को ठगा नहीं लूटा नहीं। उसका उदात्त वक्ष ऊंचा और धवल था।

फलस्वरूप, कई दिन के बाद रामदास स्वस्थ बना। अभी पुत्र को मरे पूरा एक सप्ताह नहीं हुआ था, रामदास फिर यथापूर्व स्थिति में पहुंच चुका था। रात आधी से अधिक जा चुकी थी। तभी सहसा यशोदा की आंख खुली। तभी उसे लगा कि घर में कोई आया है और गया है। अतएव, वह सशंक भाव में उठी और सर्वप्रथम उस ओर गई जहां सुखिया सो रही थी। वह गहरी नींद में थी। उसके गले में बलगम बोल रहा था और वह खर्राटे ले रही थी। फिर वह बाहर के ओसारे में पहुंची। देखा, रामदास भी चादर ओढ़े सो रहा था। उससे कुछ फासले पर छोटे पुत्र मुकेश की चारपाई थी। वह निर्बाध रूप में नींद की सांस भर रहा था। लेकिन यशोदा के मस्तिष्क में शंका थी। उसका दिल तब भी धड़क रहा था। उसी समय एक परछाई फिर सामने से निकली और गायब हो गई। सहसा कांपते स्वर में यशोदा चीख उठी—'कौन !'

किन्तु वहां कोई था नहीं। दिखाई भी नहीं दिया। आवाज सुनकर रामदास ने मुंह से चादर हटाई—'क्या है ! कोई है क्या !'

यशोदा पति की चारपाई के निकट पहुंच गई। वह बोली, 'दिखाई तो दिया नहीं। मुझे लगा कि घर में कोई आया था। अभी-अभी यहां भी कोई आता लगा था।'

रामदास उठ बैठा। वह लाठी उठाकर ओसारे से बाहर निकल गया। जाकर देखा कि भैंस भी अपने खूंटे से बंधी थी। चौधरी को घर के चबूतरे पर खड़ा देख, कुछ दूरी पर अवस्थित अपने मकान पर बैठा

शकर नाम का व्यक्ति बोला—'चौधरी, क्या बात है, आज चौकीदार भी नही आया। कल किसी नकब लगाने वाले चोर ने उसके ईंट मार दी थी। सिर में चोट लगी थी।'

कुछ पग रखकर रामदास उस शकर के पास पहुच गया। उससे बोला—'तुम सोये नही।'

शकर बोला—'कुछ सोया था, जाग गया। सास का रोगी हू न, इसलिए रात में भी चैन नही मिलता।' वह बूढा था, अशक्त था।

रामदास ने लम्बी सास भरी 'चचा, समय समय की बात है। तुम्हारा भी एक जमाना था।'

शकर उत्साहित हो उठा—'तब तो आदमी को आदमी नही समझा जाता था। किसी ने जरा आख दिखाई नही कि मैं लाठी उठा लेता था। अजीब दिन थे वे! कहते है क्या जवानी अन्धी होती है, तो मैं भी अन्धा बना था। आज सोचता हू, जिन्दगी का वह पक्ष भी अच्छा नही था। निर्दय था, क्रूर था। मैं आदमी नही बना, दानव बना रहा।

रामदास लौट पडा और बोला, 'हा चचा! आसमान की चढती धूप और इन्सान की जवानी अच्छे-अच्छो के होश उडा देती है, मैंने तुम्हारा वह समय देखा था।'

वह फिर अपनी चारपाई पर आ गया। यशोदा तब भी वहा खडी थी। जब रामदास चारपाई पर जाकर बैठा तो वह जल्दी से बोला—सुनी कुछ इस शकर चचा की बात! अब भलाई छाटता है। धर्मावतार बनता है। अब बूढा है ना, सास का रोगी है, तो अपने किए पर पछताता है। जब जवानी थी, तो तीसमारखा बना था। आदमी को आदमी नही समझता था।

यशोदा बोली—'कोई कसर नही करता। किसी ने कहा तो है यदि जवानी सही बीत गई, तो बुढापा भी सही सलामत बीत जाता है। मैं तो रोज देखती हू इस शकर को, रात मे चारपाई पर बैठा दिखाई देता है। अब घरवाली तो है नही, जिसे परवाह हो अपने आदमी की। वह होती, तो पास जाकर बैठ जाती। दिलासा देती। चिलम में तमाखू और आग रख लाती। बहू है, उसे क्या चिन्ता? ससुर मरे तो, जिये तो!

लडका भी खुर्राटे भर रहा होगा। अब बचारा अकेला है, एकाकी बना है।'

रामदास बोला—'यह शकर भी नाबदान का कीडा ह। घरवाली को कभी शात नही बठने दिया। आय दिन मारता था, लडता था। उसके सिर के बाल पकडकर खीचता था। यह तो पूरा नर पिशाच बना था, औरत के लिए।

तब यशोदा के मन म बात उठी थी, औरत के लिए कोई आदमी देवता या उदात्त नही बनता। किसी ने सच ही कहा है, गरीब की जोरु सबकी भाभी। और अब तो खाते-पीते घरो मे भी औरत अपन आदमी की पर की जूती बनी रहती है कडवा और नीम चढा आदमी हो दूसरी औरतो स इश्क लडाता हो, तो तब और अधिक शामत आती है, घरवाली की। उसन लम्बी सास भरी और छोड दी।

तभी चौधरी ने पास बठी यशोदा की ओर दखा। उसन कहा—'क्या सोचती हो? बडी लम्बी सास भरती हो।'

तब यशोदा न मन की बात बदली नही। वह बोली—'औरत की जाति तो दुख सहन के लिए होती है। याद है न, जब मैं तुम्हारे घर म आइ, तो कई वष तक कोई सन्तान न होन पर तुम्हारे पिता और मा दूसरा विवाह कर देने की बात सोचत थे। और जब बच्चे होने लगे, तो तुम मुझ पर गुर्रात थ, लडते थे। उन बच्चो को अभिशाप मानत थे। उसने कहा—'यह रहो, मरे चार बच्चे रहे नही। भगवान को प्यारे हो गये। और जब यह पाचवा पाला-पोसा जवान पठठा मलखू भी चला गया। एक दिन मदिर चली गयी थी, पडोसियो के साथ। कोइ पडित कथा कह रहा था तभी उसने बताया कि यह औरत मद का जोडा यो ही नही बन जाता। बडे अच्छे सस्कार दोनो को एक दूसरे स बाध पात हैं। दोनो जिन्दगी का लम्बा सफर साथ-साथ चलकर पूरा करत हैं ममता मोह, राग द्वेप, लेन-देन और जिन्दगी के समूचे व्यवहार साथ-साथ मिलकर निपटात ह। जब दोनो मे स एक छूटता है मर जाता है तो तब औरत हो या मद। हाथ मलत ह। पछतात हैं। याद करके सिर घूमत है। अपन किये पर रोत हैं।

रामदास बाला— हा, यशादा ! बाद म सब पछताते हैं।'

अजी कोई न भगवान को मानता है, न धम को। यह कोई नहीं भाचता यह जूड़ी का सयाग जान किस जन्म के किए धरे अच्छे पुण्य प्रताप से प्राप्त होता है। य दा आत्माए सहज म नहीं मिल जाती। यह तो युग-युगो से चलता आया मेल मिलाप किसी-न किसी जन्म म फिर शरीर म प्रवेश कर जाता है।'

रामदास ने अपनी सफेद मूछा पर हाथ फेरा और कहा—'एक बात कहूं। मुझे अपना मलखू स्वप्न म दिखाई दे जाता है। एसा लगता है वह मेरे आस-पास ही घूमता है।

तभी यशादा उत्साहित स उठी—'मलखू के चाचा, यही तो आज दिखायी दिया। एक बार आख खुली तो फिर लगी नहीं। यहा ओसारे म भी कोई मेरी आखो के सामने घूम गया।

रामदास बाला—'वह तरे मन का भ्रम था। जब आखो के सामने कोहरा छाया रहता है, ता कुछ साफ दिखाइ नहीं देता। धुध मे छाया नजर आती है।' उसने कहा— हा, तेरी यह बात तो ठीक है। औरत हो या मद, जीतजी अपनी आदमी पर को नहीं देख पाता। कोई सोचता नहीं, इस छोटी-सी जिन्दगी में कुछ कर ले, कुछ सोच ले' की बात लोगो के दिल म नहीं उतरती।' वह बाला— 'तू तो आदमी की बात करती है, याद है जग्गू की औरत ने क्या किया था ? अपने आदमी को जहर देकर मार दिया था।'

तुरन्त ही यशोदा बाली— ता उसका परिणाम क्या रहा। खुद भी पकडी गई और मुह लगा यार भी। दोना को काले पानी की सजा हुई थी। कम्बख्त ने अपना जीवन का बरबाद किया ही, घर भी खो दिया।

बस, समझ ले भगवान का दिया यह जीवन कोई समझ पाया नहीं। इसकी पूजा नहीं करता। इसे नाबदान के कीडे की तरह गन्द पानी मे फेंक देता है। वासना का शिकार बन जाता है, यह आदमी। औरत भी पीछे पीछे चलती है। वह भी अपनी करनी म कमी नहीं करती।'

उसी समय यशोदा के मन मे बात आई। आज यह मलखू का चाचा बड़ा धर्मावतार बना है। पाप पुण्य की बात करता है। इसान के जमजमा को भगवान का प्रसाद मानता है। वह सहज भाव से मुस्करा दी—'लगता है, अब तुम्हारा मन बदल रहा है। कुछ और सोच रहा है। पुरानी चादर उतार दी है, नयी ओढी है।'

इतना सुनकर रामदास स्वत ही खुला—'मैं आजकल मदिर पर चला जाता हू। वहा एक महात्मा आया है। बडी अच्छी बातें करता है।

यशोदा बोली—'हा सुना तो मैंने भी। वह भी सुलफा पीता होगा। गाव के लोग ने जाते होंगे।'

'नही नही यह धूनी रमाने वाला बाबा नही। वह तो गरुवे वस्त्र पहनता है। मदिर की कोठरी मे ठहरा है। यादराम लाला ले आया था। एक मास यहा प्रवास करेगा। फिर यहा से किसी तीर्थ स्थान पर जायगा।

यशोदा बोली—'मुझे तो इन साधु-सन्यासियो पर भरोसा नही। बेचारी रुक्मणी आज तक सिर पकडकर रोती है। एक नयी उमर का साधु आया था उसी के साथ लडकी भाग गयी थी।

रामदास बोला—'और जमना का लडका भी तो भाग गया था किसी साधु के साथ। दस वर्ष बाद मदिर पर गया था। सिर की जटाए बढी थी। धूनी रमाता था। खूब सुलफा पीता था। मा बाप बहुत रोये थे उसके लिए परन्तु उसे तो हराम के माल खाने का मजा आ गया था। खुला बछेरा था खूट पर नही बध सकता था।

अजी मुझे तो डर लगता है इन साधुओ से। इनमे चोर डाकू खूनी भी मिलेंगे। बहू-बेटियो की आबरू उतारने वाले डकत इन्ही साधुओ मे दिखाई देंगे।'

चौधरी रामदास के मन मे विपरीत बात थी। वह बोला—'जो कुछ मैं पहले नही समझता था वह अब मानता हू। मैं तुझे बता दू जिस दिन हमारा मलखू मरा था। उसी दिन भगवाना चमार की घरवाली भी नही थी। मैंने तुझे बताया नही, मैं उस रात श्मशान मे चला गया

था। वहाँ जाकर देखा कि भगवाना अपनी औरत की जलती चिता को देख रहा था। तब वह रो भी रहा था। मुंह से कुछ कह भी रहा था।'

यशोदा चकित हो उठी, उस रात में। वह बूढ़ा डरा नहीं। वह तो चल नहीं पाता, वहाँ कैसे पहुंच गया। बुढापा खराब हो गया। बेचारे का। भागवन्ती बड़ी ममता रखती थी, अपने आदमी से। मेरे पास भी कभी-कभी आ जाती थी। मैं कुछ देती तो पल्ले में बांध लेती। मलखू के विवाह पर चार लड्डू और आठ कचौड़ी दे दी थी तो उन्हें घर ले गयी। मैंने कहा था, यहीं खा ले तो बोली, न चौधरन। अपने आदमी के साथ खाऊंगी। तब मैंने उसे साग भी दे दिया था। और चार कचौरी दे दी थी।

रामदास बोला, 'सचमुच उसे बड़ा लगाव था। अपनी घरवाली से। वह लाठी का सहारा लिए श्मशान में पहुँच गया। जो कुछ उसके मन में था, उस चिता के पास बैठ कर कहता रहा। उसे भरोसा था कि उसकी औरत सब बात सुनेगी।' कहता था, हम दोनों का साठ वर्ष का साथ था। हम दोनों गरीब थे लेकिन जब पास-पास बैठते,तो किसी अमीर से कम अपने को नहीं समझते थे।

बखत, यशोदा हँस दी—'सचमुच था तो उन दोनों का ऐसा ही साथ। एक को दूसरे के बिना चैन नहीं मिलता था। जब भगवाना कस्बे में जाकर जूती गाठने का काम करता तो वह भागवन्ती भी साथ जाती थी। वहां अपने आदमी का हाथ बटाती थी। बड़ी ममतामयी थी। वह भागवन्ती! जाने किस तरह चमार के घर में पहुंच गयी। वह तो शक्ल सूरत की भी अच्छी थी। किसी बड़े घर जाने लायक थी।

रामदास बोला—'संयोग तो उन दोनों का था। जुड़ी बढ़ी थी। भगवाना चमार था, गरीब था। परन्तु भागवन्ती को पाकर वह दिल से मालामाल बना था। दोनों ने एक दूसरे को समझा था। ममता में पली थी, वह जोड़ी। उसने कहा— मैं जब श्मशान से लौटा तो, तभी। रास्ते में पड़े मंदिर पर जा बैठा था। जाने कभी हिलोर मन में आयी, मन्दिर के सीढ़ियों पर सिर पटक दिया। माथा फूट गया। लोहू का मलाल लगा था। तभी तो मैं बेहोश बना था। अचरज तो यह कि मैं

उसी रात उस भगवाना की प्रतिमा को अपने प्राणो म उतार पाया था उस रात ही मुझे अपने कृत्यो का ध्यान हो आया। मैंने कैसे-कैसे काले कारनामे किए वे सब मेरे हृदय पटल पर भूत प्रेत की तरह उतर आये थे। मैं काँप गया था

एकाएक यशोदा ने पति का कंधा पकडा अब छोडो इस बात को। देखो, तुम्हारा गला भर आया। रोना आ गया। लो, मैं चिलम भर लाती हूँ। तम्बाकू पीना और कुछ देर के लिए फिर सो जाना।

यशोदा के जाते ही रामदास फिर पड गया। आखो म आसू थे और वह चादर से मुह ढक कर किसी बालक के समान फुफक पडा था

5

उन दिनो मुखिया का मनस्ताज उत्तरोत्तर बढ रहा था। मलखू के सामने जोरावर चोरी छिप आता था। और वह देवर के नाते मुखिया से हस बोल जाता था। एक दो बार उसके लिए बनारसी साडी भी ले आया था। चूकि वह उसी परिवार का एक सदस्य था इसलिए उसे आने से रोका भी नही जा सकता था। वस भी मलखू का जोरावर से अधिक स्नेह सम्बन्ध था। जब भी आता छोटे भाई के नाते मलखू कुछ-न कुछ दे जाता था।

फलस्वरूप मलखू के निधन के बाद जब जोरावर अपने घर का छत छोडकर रामदास के घर म प्रविष्ट हुआ, तो उस समय वह सभी को आज्ञा दे कर मुखिया के पास पहुचा। सदा की भाति उसके पैर छूकर पाच हजार रुपयो की गड्डी उसकी गोद म रख कर बोला— भाभी मैं हू तो खूनी और डाकू परन्तु तुम्हारा सेवक हू। मलखू भया जहाँ गया है वहा से लौटा कर नही लाया जा सकता। तुम्हारे अभाव की पूर्ति भी मैं नही कर सकता। यह रुपए रखो। न ताऊ को बताना न ताई को। अब

तुम्हें अपनी जिन्दगी का दु ख-सुख स्वय देखना पड़ेगा। यह स्वार्थियों का संसार है। यहाँ किसी का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं। सब कुछ बनावटी है। स्वार्थ पर आधारित है। जिस खम्भे के सहारे तुम खड़ी थी वह टूट गया। भैया मलखू सदा-सदा के लिए नाता तोड़ गया

यह केवल आश्चर्य ही था कि जब जोरावर उस घर की दीवार फाँद कर अदृश्य हुआ तो तभी यशोदा ने सुखिया के पास आकर कहा। अरी, जोरावर था ? क्या कहता था ? उसने साँस भरा कहता क्या वह भी मलखू के लिए रोता होगा। बड़ा प्यार था दोनाम। आखिर चाचा ताऊ के ये दोनों भाई थे।

जब यशोदा घर के आँगन में गई तो सुखिया ने अपना बक्स खोला और कपड़ों के बीच में वह नोटों की गड्डी रख दी। ताला लगा दिया। लेकिन उस दिन, सुखिया की छाती में जब एक बार धड़कन उठी, तो वह सहसा शांत नहीं बनी। मलखू के सामने जोरावर आता था हँसी मजाक करता था। कोई-न-कोई सौगात भी भाभी के लिए ले आता था तो तब, सुखिया उसे अन्यथा या अजूबा नहीं मानती थी। भाभी-देवर का नाता था, इसलिए जोरावर के उस व्यवहार को सामान्य समझती थी। किन्तु उस दिन पाँच हजार रुपए के नोट मानो उसकी आँखों में जड़ रहे थे। गले में कुछ आ गया था। वह सटका नहीं जा रहा था। एक अदृश्य भय सुखिया के मन को किसी कीड़े के समान कुरेद रहा था। वह उसे पोटा दे रहा था। सुखिया के मन में बार बार आ रहा था। मुझे जोरावर से रुपए नहीं लेने थे। लिये भी तो अम्मा से कह देना था। अब वह चोर हो गई है। अपने आप में अपराधी बनी है। अभी तो पति को गये देर नहीं हुई, अपना तमाशा बना देना चाहती है घर में झाड़ लगाती, रोटी बनाती, भैंस के लिए चारा काटती तो उसके मस्तिष्क में एक यही बात गूंजती, अब तेरा क्या होने वाला है। सुखिया। क्या किसी की प्रेमिका बनेगी रखैल बनेगी इस तरह तो तू न दीन की रहेगी न दुनिया की जोरावर डाकू है, खूनी है। शराब पीता है। वह देवता नहीं, दानव है औरत की अस्मत का लुटेरा

एक दिन प्रात के समय रामदास घर में आया और हाथ में पकड़ी लाठी

को एक पत्थर पर बजाकर बोला— मलखू की माँ कहाँ है तू ! मेरी बात सुन।'

यशोदा कोठे से बाहर निकल आई। चौधरी बोला— मैं अभी औरतों के स्कूल में गया था। वहाँ की सब बातें देख आया और समझ आया। मलखू की बहू अब वहाँ जाया करेगी। चार अक्षर पढ़ लेगी और सिलाई का काम सीख लेगी।'

इतना सुनना था कि यशोदा तमक उठी—'तो घर का काम कौन करेगा। एक नौकरानी लाकर बैठा दो। अब मेरे शरीर में इतनी शक्ति नहीं कि इस घर के बखेड़े को सहार सकूँगी। एक काम तो है नहीं अनेक काम है। किसान का घर है। जंगल का भी काम है। अब खेत कटेंगे अनाज आएगा। घर का धन्धा तो है ही भैंस का काम है। उसका पेट न भरोगे तो एक बूंद दूध नहीं देगी। छाछ तक को तरसोगे।

'आह ! मूर्ख औरत, जमाने भर के काम गिन दिये तूने तो। बहू न होती तो क्या करती। अब इसकी भलाई की बात सोच। सिर्फ चार घंटे लगेंगे स्कूल में। मैं किसी चमार या चमारिन से बात कर लूँगा। इसे जाने दे। कुछ बन सके तो बनने दे। वह रामसहाय पंडित है ना, रात देर तक मेरे पास बैठा रहा। बड़ा समझदार है वह। विद्वान तो है ही। बताता था, बहू समझदार होगी तो अपना अलग स्कूल चला सकेगी। सरकार भी मदद करेगी। अब वह बेटी का जंगल में खेत-क्यारी देखने का समय नहीं रहा। सुन लिया न, रहमत मियाँ की जवान लड़की खेत पर मरी पड़ी थी। किसी ने गंडासे से चार टुकड़े कर दिए थे उसके। किसी बदजात ने उसके बदन से कपड़े तक उतार दिए थे। नंगी पड़ी थी। गर्दन कहीं, धड़ कहीं।'

यशोदा बोली—'अजी, उसकी बात छोड़ो। जितने मुँह उतनी बात। मुझे तो बताया है कि वह लड़की जाने किस-किस से दोस्ती गाँठ बैठी थी। गाँव के लुगाड़े उसके पीछे लगे थे। माँ-बाप भी उसकी कमाई खाते थे।'

सुनकर रामदास गुस्सा-सा हो उठा—'तू औरत जात है ना, इसी तरह की बात कहती है। यह नहीं समझती। आज जमाना कितना

खराब है। जब गाव के जवान लडके बदचलन बन चले हैं। तब भला घरा की बहू-बेटिया किस तरह अपनी लाज रखेंगी सुबह शाम पनघट पर देखो, ये बदजात लडके कुए के आस-पास मडरात रहते हैं। चौधरी नरपत ने एक बार कह दिया था तो अगले दिन ही उसके दोनो बैल खाल लिए। वह तो कई हजार की चोट खा गया और सुना है वह मेहतर है, बडा जवामद बना फिरता था, निहाला के लडके को डाट दिया था। उससे कह दिया था, गाव म बदमाशी करगा तो पुलिस के हाथो हवालात मे बन्द करा दिया जायगा हाँ तब एक सप्ताह भी नही बीता था, उसका खेत कटकर अभी मशीन पर नही गया था कि उसम आग लगा दी गई। बेचारे का हजारो रुपय का अनाज पलभर म राख का ढेर बन गया। उसे लडकी का विवाह करना था वह रुक गया।

यशोदा दहलीज पर बैठी थी। पति की लम्बी बात सुनकर बोली नही, चुप रह गई।

रामदास बोला—'तुम कल सुबह बहू को ले जाना। नाम लिखा आना। फीस का दस रुपया लगेगा, वह द आना। बहू को कुछ दिन वहा जान दो और देखो, क्या परिणाम निकलता है। अब तुम्हारा मुकेश भी कालेज मे जायगा। वही रहगा। सप्ताह म आया करेगा।'

'तो बस, एक मैं रह गयी इस घर की चक्की म पिसन के लिये। जिन्दगी तो बीत गयी, इस घर म मरत खपत अब बुढापे म भी चैन नही।

रामदास ने सास भरी—'भाग्य की बात है। हमारा-तुम्हारा मुकद्दर अच्छा नही। जब इतनी लम्बी जिन्दगी कट गयी तो अब क्या है। थोडी सी फुलग रह गयी है। यह भी कट जायगी।

'अजी यही कटनी मुश्किल है। बचपन गया, जवानी गयी लेकिन यह बुढापा चैन से नही कटगा। भगवान जाने अब और क्या क्या देखना पडेगा ?'

रामदास के मन को यशोदा की बात छू गयी। उसे भी लगा, सच-मुच यह बुढापा बडा दुखदाई है। मलखू गया, तो हमारे कफन में कील

इस महीने मे भी एक लडका मारा गया। सुना है, वह जिस लडकी से इश्क करता था उसका एक दूसरा चहेता भी था, उसी ने मौका देखकर छुरे से पेट फाड डाला। कई दिन तक लाश खेत म पडी रही। चील-कौवे खाते रहे। जब बदबू फली तो तब बात फूटी थी।'

रामदास बोला—'मुझे पता है। गाव मे इश्क मिजाजी का दौर तेजी से चल रहा है। बेशर्मी बढ रही है। लाज शरम जाती रही।'

चादराम का घर आ गया। वहाँ जाकर देखा कि पडौस का गजराज पुलिस ने पकड रखा था। पास के खेत से बक्सा बरामद कर लिया था। गजराज का इसका साथी फरार था। पुलिस के दरोगा ने जब सब कैफियत बताई तो दोनो चौधरी उस गजराज को देखने लगे। वह हाथो मे हथकडी पहने सर झुकाय बैठा था। कुछ फासले पर उसका पिता भी था। वह भी सिर झुकाय हुए था। बेटे ने बाप को धरती मे गाड दिया था।

दरोगा बोला—'चौधरी इस गजराज का यह चौथा काम है। एक अपराध म तो यह छूट गया था। दो म सजा पाई। अब यह कम-से-कम चार वर्ष को जेल म जायगा। यह जवान गाँव के चोरो का सरगना बन चुका है।'

जागीरसिंह ने पूछा—'यह कैसे पता चला कि इस गजराज ने चोरी की?'

दरोगा मुस्कराया, 'चौधरी हमारा यही तो दिन-रात का काम है। एक लडकी ने यह भेद खोला। वह उस खेत पर घास खोदने गयी थी यह गजराज उसे देख नही पाया। वहाँ से बक्सा उठाने गया था। हथौडा ले गया था। उसका ताला तोडने को। लेकिन जब खेत से बक्स उठाकर चला तो लडकी चीख पडी चोर ! चोर ! हमारा सिपाही भी उस ओर खोजने गया था। दरोगा बोला—'लेकिन इस गजराज ने बुद्धिमानी की। हाथ की हथौडी लडकी के सिर दे मारी। वह चीख पडी। की आवाज सुनते ही सिपाही दौडा, एक और आदमी भी। यह गजराज उस बेहोश बनी लडकी के सिर म दूसरी हथौडी मारने ही वाला था, उस लडकी को जान से मार देना चाहता था कि तभी ~ ~ ने उस

आदमी की मदद से पकड़ लिया। बाकी भी हाथ आ गया। इसी वह बैठी है लड़की। बाकी अभी दस-बारह मील पर तो है। हाथ में आते ही पुलिस का सिपाही साथ न आया।'

चौधरी बोला—'किसकी है यह लड़की।'

तब बताया गया—नत्थन चमार की। सुबह बेटी घास ले आती, बाद में मां। वह पास बाजार में वचकर घर का काम चलता। नत्थन तो पिछले दस मर गया था। मां बेटी को छोड़ गया। एक लड़का है, वह घर से बाहर है। मां आप से अलग हो गया था।

दरोगा ने रिपोर्ट लिख ली थी, बयान ले लिए थे। वह थाने की ओर चल दिया। चौधरी बोला—'घर चलो कुछ खा-पीकर जाना।'

नहीं चौधरी। अभी एक और जगह जाना है। वहां तो डाका पड़ा है। एक आदमी मारा गया। काफी सामान गया है उस घर से। तुम्हारे गांव का जोरावर उन डकैतों का सरदार था। डाके का संचालन वही कर रहा था।

जागीरसिंह बोला—'वह भी इस गांव का कलंक है। अभिशाप बना है।' वह अपने घर की ओर चल दिया।

प्रातः का समय था। चौधरी रामदास घर की ओर न जाकर जंगल की ओर बढ़ गया। यह उसका दैनिक काम था। अभी वह कुछ दूर गया था कि तभी देखा कि एक बड़े पेड़ पर बहुत से पक्षी उड़ रहे थे। किसी बड़े पक्षी ने एक घायल के छोटे बच्चे पंजों में जकड़ लिए थे। वह एक डाल पर बैठकर उन बच्चों की गर्दन कुतर रहा था। अन्य पक्षी चीख रहे थे। शायद वे गुरसल के बच्चे और अण्डे थे। उस दर्दनाक दृश्य को देख सहसा रामदास को लगा कि ऐसा ही हा हाकार सबने है। अमानवीय शोर है। इंसान भी यही करता है। ऐसा ही क्रूर दानव है।

बरबस चौधरी का मन दहल गया। उसके दिल पर एक के बाद दूसरी चोट पड़ रही थी। कुछ देर पूर्व जोरावर की बातें उसके मन पर कोहरे की तरह छा गई थीं। वह जोरावर जो भाई का लड़का था, बचपन में उसकी गोद में खेला था। परंतु अब वह डाकू है। खूंखार है। आदमी का खून करता है। लोगों के घर लूटता है। भले ही रामदास

का भाई अलग घर म रहता था परन्तु खून तो एक था। ईर्ष्या की लहरें उसकी छाती पर काँटे की तरह चुभ रही थीं। इसीलिए उसकी छाती म कसक थी, पीडा थी।

रामदास गाव की तरफ लौट पडा [illegible] को [illegible] अब स्वत ही भीगी बिल्ली बन गया था। जवान लडका गया, तो उसका दिल टूट गया था। अब वह बूढा है। निरस्त्र है। निरुपाय है। जब रामदास गाव म पहुचा तो मन्दिर की ओर उसका ध्यान गया। वहा कुछ औरतें शिव की पिण्डी पर जल चढा रही थी। फूल-पत्ते अर्पित कर रही थी। कुछ व्यक्ति मन्दिर के अन्दर थे। यह समय पूजा का था। शायद आरती का था। पुजारी देवता की आरती उतार रहा था। घटी बजा कर शास्त्रीय श्लोक बोल रहा था।

अपने स्वभाव के विपरीत रामदास मन्दिर पर रुक गया। एक तरफ बैठ गया, तभी एक बडी औरत उसके पास आकर रुक गई, देखकर बोली, 'आज रास्ता भूल गये क्या? इस मन्दिर पर कैसे आ गये?'

रामदास ने उस सम्भ्रात महिला की ओर देखा—'राम राम चाची!' उसने कहा—'खेतो की तरफ गया था। पैरो मे थकन आ गई। अब चला नही जाता, यहा बैठ गया।'

गोमती नाम की उस चाची ने कहा—'अब तुम सब राग द्वेष त्याग दो। मन्दिर पर आया करो। यहा बैठा करो। देखो, तुम्हारा जवान लडका चला गया। हाथ मे आया पक्षी उड गया। तुम रह गये खाली के खाली। अब भगवान का नाम लो। दो घडी यहा बैठकर शाति पाया करो। कभी-कभी यशोदा तो आ जाती है। मैंने तो कहा था उससे, बहू को भी ले आया करे। अब उसके मन म अच्छे सस्कार पैदा करो। समझ लो, सबकी यही टेक है। यही है, अन्तिम पडाव।

चौधरी रामदास को पता था कि वह गोमती चाची स्वत ही समर्थ थी। उसके चार बेटे थे। चारो रोजगारी। दो खेती मे लगे थे, दो व्यापार म। पिछले दिनो जब चारो भाइयो म अपनी बहिन का विवाह तो दूर दूर तक ऐसा विवाह नही हुआ था। न ऐसा लेन-देन किसी ने किया था। यह गोमती चाची आज भी चारपाई पर बैठी पुत्रवती है।

बहुओं पर हुक्म चलाती है। बेटे आज्ञाकारी हैं। रामदास ने बात बदली
नवदा कहां है? अपनी ससुराल में?'

'हां भइया। अब वह वहीं है। लड़का फौज में है न, अब कहीं दूर पहाड़ पर उसका तबादला हुआ है। अब वह बड़ा अफसर है।'

रामदास बोला 'तुमने लड़का अच्छा देखा। खर्च भी काफी किया।'

'अरे भइया! सब लड़कों ने किया था। मुझे कुछ पता नहीं, क्या क्या दिया।'

रामदास बोला 'मुझे पता है एक लाख से ऊपर रुपया खर्च हुआ था। तुम्हारा बड़ा लड़का सब कुछ बता गया था।'

उसी समय पुजारी परसाद लेकर वहां आया। रामदास ने दोनों हाथ फैला लिये श्रद्धा से सिर झुका लिया। उसने जेब से रुपया निकाला और पुजारी की थाली में डाल दिया।

गोमती बोली—पुजारीजी एक हजार समझना, इस एक रुपये को। अब तुम्हारा एक नया ग्राहक बना है। गांव का चौधरी है।'

रामदास ने बात सुनी, तो खिलखिला पड़ा। उस समय वह सचमुच ही आह्लादित हो उठा था।

6

चित्रकार अपनी कूची से चित्र को अनेक रंग भरता है। उस खुशनुमा चित्र को देखकर कलाकार प्रसन्न होता है। अपनी कृति पर गौरव अनुभव करता है। मानो उसका कृतित्व ही उसके कर्म तत्व की चासनी है, उसमें निखार आता है। कदाचित् यही कारण था कि चौधरी रामदास पुत्र की मृत्यु के बाद जब गांव के देवालय पर जाने लगा तो वह उसका दैनिक कर्म बन गया था। घर पर एक पुराना नौकर था जगतू, पहले वह मलखू का सहायक था। अब उसी पर खेतों का समूचा भार आ

पड़ा था। मलखू ईमानदार था, उस पर भरोसा था। घर का काम मालवह देखती और बाहर का जगतू। रामदास अब बूढ़ा हो गया था, खेत का काम करने योग्य नहीं था। इसलिए, वह या तो घर पर बैठता अथवा मन्दिर पर। गाँव में किसी के यहाँ कोई पारिवारिक आयोजन हो तो चौधरी वहाँ आता-जाता था।

किन्तु चौधरी रामदास के मन में चोर की तरह एक बात बैठी थी। यद्यपि उसने किसी से समक्ष प्रगट नहीं किया, परन्तु वह समस्या आकस्मित उसके दिल और दिमाग में आकर भूचाल-सा खड़ा कर देती थी। उस समय वह स्वतः ही कहीं से कहीं पहुंच जाता। मानो धरती को छोड़ आकाश में उड़ जाता। यह बात प्रायः प्रगट हो चुकी थी कि चौधरी रामदास का पुत्र खो गया, परन्तु वह पिता की कमर तोड़ गया। लाठी हाथ में लिये सीधा चलने वाला रामदास अब कमर झुकाकर चलने लगा था। अपनी जवानी में वह कितना कमजोर और झगड़ालू था, यह सभी के समक्ष स्पष्ट था। यह सर्वविदित था कि चौधरी रामदास कभी किसी से सीधे मुंह बात नहीं करता था। इसलिए भगवान पर भी इसका कोई भरोसा नहीं था। औरत और पैसा यही उसके प्रिय विषय थे। सौभाग्य से अपनी जवानी में यशोदा सुन्दर ही थी, रामदास के मन को छूती थी। उसके पास पैसा भी यथोचित था। कुछ मक्कारी और धूर्तता से उपार्जित किया गया था। जब भाइयों में बटवारा हुआ तो रामदास ने अपने हिस्से में अपना मकान परिवर्धित कर लिया था। उसमें कुछ पैसा लगाया था। जगत में जमीन भी बड़ा ली थी। जीवन का सत्य, दया और सद्भावना उसकी समझ में नहीं आती थी। जिन्दगी के प्रथम चरण में ही उसने समझ लिया था, दया करने का स्थान पर नहीं मन्दिर हो सकता है। भगवान और देवताओं की भाषा हो सकती है इन्सान की नहीं। इसलिए, चौधरी रामदास स्वभाव का क्रूर तो था ही, दम्भी भी था। मानवता का विषय उसकी समझ में नहीं आता था, पशुता और दुर्दांत भावना को वह बुद्धिमत्ता में समझ लेता था।

उस दिन रात आ गई थी। छोटा पुत्र सुरेश शहर जाकर कालेज में दाखिल हो गया था। अब घर में वह सदा अकेला रहता था।

जव गाय फूट आइ थी। दो वष वाद वह जवान हो जान वाला था। चौधरी रामदास की आकांक्षा और कामना अव उसी पुत्र पर केंद्रित थी। जमाकि गाव का आम रिवाज था सध्या क वाद झुरपुटा होत ही घरा म दरवाजा लग जाते थे। गलिहारे म आदमी या औरत भी कम आत-जात थ। चौधरी रामदास जव घर म रोटी खान गया, तो तव सुखिया पर चूल्ह पर वठी रोटी बना रही थी। दीपक का प्रकाश उसके मुह पर पड रहा था। यद्यपि वह ससुर क समक्ष घूघट करती थी परन्तु उस समय कदाचित सध्या का झुरपुटा होन क कारण सुखिया का मुह खुला था। रोटी खात हुए चौधरी ने कई बार मुह उठाकर वहू की ओर देखा। उसे दिखाई दिया कि उस गोरे मुह पर खून छलछला रहा था। यौवन वाल रहा था। माना वह चीत्कार कर रहा था। सुखिया की आखें भी बडी-बडी थी और नरम शिरस मानो भगवान ने अपन हाथ म सवाए था। जैसे-तसे रोटी खाकर रामदास खडा हो गया। दूर बठी पत्नी न कहा — क्यो आज भूख नही थी क्या? बहुत कम खाया। आज तो बहू न तुम्हारी मर्जी का साग बनाया था।

रामदास बोला—'भूख ही कम थी, साग तो अच्छा था।' वह वाहर विछी चारपाई पर जा बठा। जब यशोदा चिलम म तम्बाकू और और आग रखकर बाहर गयी तो बलात चौधरी ने कहा—'बैठ जा! रोटी खा चुकी?'

'नही तो।' यशोदा ने कहा, अभी ठहर कर खाऊगी।

जव यशोदा चारपाई पर बठी तो चौधरी बोला—'देख यशोदा! जीवन तो हम दोनों का कट गया। कुछ सीधे चलते कुछ टेढे चलते जिन्दगी का सफर अव अपन अन्तिम मोड पर आ गया। तेरी वहू सुखिया स्कूल म तो जाने लगी है मैंने सुना सीने पिरोने का काम भी करने लगी है। पहली किताब भी समाप्त कर ली। लेकिन मैं अक्सर एक बात मन म लिए रहता हू, हम दोनो इस बहू के साथ अन्याय तो नहीं कर रहे? यह भरी जवानी म खडी ह। तप रही है। लगता है औरत का यौवन हमारी बहू को तोड मरोड रहा है। वह आन्दोलित कर रहा है।

पति की बात सुनकर यशोदा ने सास भरी, तो किया क्या जाय ! तुम्हारी समझ मे आये, तो किसी के साथ बाँध दो । इसका विवाह कर दो । तब न रहेगा बास न रहेगी बासुरी

चौधरी रामदास उत्साहित हो उठा, हा मेरे मन म यही आता है । आज भी मै रोटी खाने बठा तो बहू का देख मेरी छाती मे काटा-सा उठ आया था । कम्बखत सुन्दर भी कम नही । जवान तो है ही ।

यशोदा बोली— मैं देख रही थी कि तुम रोटी तो खा रहे थे । लेकिन बहू की तरफ बार-बार मुह उठाकर देख रहे थे । तभी तुमसे आज खाना नही खाया गया । जल्दी उठ आये । बहाना भूख न होने का लगा विचार ।

चौधरी बोला, 'और क्या करता । आज बहू को स्पष्ट देखा था । तभी तो मन म उछाला आया । बरबस मैं अपने आप बोल पड़ा, अन्याय कर रहे है हम उस मासूम बहू के साथ । प्रकृति कुछ उससे भी चाहती है । उसकी भी माग है । यदि कल को वह जिन्दगी के इस नये मोड पर फिसल जाय किसी के भाग जाय, तो तब बहू का कोई अपराध नहीं । दोषी हम होंगे बहू रानी नही '

'आतुर स्वर मे यशोदा बोली, 'हाँ हाँ, मैं अब समझती हू । अब [illegible] या बहू से कहती हू कि वह दूसरे आदमी का हाथ न पकडे ।' [illegible] समय की बलिहारी है । विधवा तो पहले भी होती थी [illegible] जैसी बात तुम करते हो, तब स्वप्न मे भी नहीं सुनी [illegible] खा भी लो और मुह साफ का साफ हा, [illegible] क्वारी हो या विधवा, मुझे पाप का व्यभिचार [illegible] नहीं । मन की वासना कभी भी तृप्त की [illegible] न और किसी बात का [illegible] पड़ा था । कपड म लिपटा था, [illegible] डूब कर भी नही मरती !'

रामदास उठ बठा और [illegible] न्याय करो आप भी [illegible] परतु आदमी [illegible]

औरत को अपने जाल में फांसता है। शिकार एक बार उसके कब्जे में आया नहीं, फिर वह हलाल कर दिया जाता है औरत के पास जो कुछ है, उसे आदमी छीन लेता है!

उसी समय यशोदा ने पति की ओर देखा। माना उसे फिर से अपने आदमी को समझना चाहा। रामदास देख नहीं पाया, तब यशोदा मुस्करा दी थी। तनिक हंस भी दी थी। उसके मन में बात आई, आज तो यह चौधरी बड़ा देवता बना है। औरत की वकालत करता है। वह दिन भूल गया। जब कुत्ते की तरह औरत के पीछे घूमता था उसने कहा – यह भी सच है रांड तो रंडापा काट ले, पर तु रंडुवे काट न दें, तब तो जिस पेट का गर्भ उस दिन खेत में पड़ा था, उसका पता चल गया था। पर किसी ने कहा नहीं। सालग चौधरी की लड़की अपना पेट वहां गिरा आई थी '

आतुर भाव में रामदास बोला—'हां, हां, किसी का भी हो। था तो किसी औरत का ही। चाहे वह क्वारी लड़की हो, या विधवा बहू आदमी अपनी कमजोरी पर लजाता नहीं, औरत लजाती है। उसे छुपाता है।' उसने कहा—'जब तुम अपनी बहू की बात सोचो। सचमुच, आज मुझसे रोटी नहीं खाई गई। बड़ी हलचल हुई मेरे मन में। मुझे लगा, मैं कोई बड़ा अपराध कर रहा हूं अपनी बहू के साथ! जैसे मेरे कर्म थे, उसका फल तो मैं पा चुका। जवान बेटा चला गया। अब अभी मैं कोई ऐसी भूल न कर पाऊं, यही बात मेरे मन को कचोटती है। कुरेदती है।'

उसी समय यशोदा ने अपने मन की बात कही—'आज जोरावर भी आया था। वह नीचे से नहीं कोठे पर से आया था। वहीं बहू को बुलाया। मैं चौके में थी, मुझसे तो 'ताई राम राम' करते रह गया। बहुत देर दोनों में बात होती रही। क्या बात हुई भगवान जाने!'

चिंतित स्वर में रामदास बोला—'यह जोरावर भी हमारे लिए एक कलंक है। एक बड़ी समस्या है। उस दिन दरोगा बताता था किसी गांव में डाका पड़ा। एक आदमी मारा गया। वह जोरावर का ही दल था। बहुत माल ले गया था, उस घर से।

यशोदा बोली—'जोरावर जब भी गांव में आता है, बाप को बहुत कुछ दे जाता है। वे दाना घर में भले ही न रखते हों, परन्तु बेटे से प्राप्त करने का माल कहीं-न-कहीं गाड़कर रखते हैं। हो सकता है, जोरावर का बाप किसी खेत में गाड़कर आता है। पुलिस ने घर का चप्पा-चप्पा खोद डाला, कहीं कुछ हाथ नहीं लगा।'

विकृत स्वर में चौधरी बोला—'किसी-न-किसी दिन यह जोरावर मारा जायगा। पुलिस ने एक लाख का इनाम घोषित किया है, इसे पकड़ने के लिए सब ओर घेरा डाल रखा है। यहां गांव में रात आने पर पुलिस वाले पेड़ पर चढ़कर बैठते हैं। चालाक जोरावर घर में कम आता है।'

यशोदा बोली—'बहिन के यहां कई बार गया है उसे बहुत कुछ दे आया है।'

'अजी, इन चार डाकुओं के पास बचता क्या है। औरत, शराब और पुलिस यही सब इनका पैसा खाते रहते हैं। कमबख्त, कभी-कभी तो भूखे रहते हैं।' उसने कहा 'लेकिन इस जोरावर का बहू के पास आना ठीक नहीं। जब तक लड़का था, तो इसका आना निभ जाता था। भाभी-देवर का नाता हममें तोड़ा नहीं जा सकता था। लेकिन अब तो वह विधवा है। जवान है। उसके यौवन की भी कोई कामना है जोरावर मुझे मिले तो मैं उसको कह दूंगा। तुम्हें भी कह देना चाहिए। बुरा मानेगा, तो माने। हमें अपनी प्रतिष्ठा रखनी है।'

यशोदा बोली—'मैंने तो बहू से कहा था। कह देना उसे जोरावर से अब यहां न आये। लेकिन बहू भी तो मेरी बात अनसुनी कर देती है। और अब तो जब से चार अक्षर क्या पढ़े, अपने को मास्टरनी समझ बैठी है।'

चौधरी ने बात सुनी तो हंस दिया। वह खिलखिलाकर बोला—'अब तुम्हारी बहू बच्ची नहीं। मैं स्कूल में गया था। अध्यापिका बताती थी, चौधरी तुम्हारी बहू सबसे होशियार है। अब छोटे कपड़े सी लेती है। इसकी किताब शुरू करेगी। बड़ा मन लगाती है।'

यशोदा उठ चली। चौधरी बोला—'रोटी खाकर आना। एक चिलम और भर देना। अब रात में नींद नहीं आती। कुछ देर के लिए

आख लग गइ, तो बस !

यशोदा बोली— अब बुढापा है । जवानी तो गई । उस समय की नींद अब कहा मिलेगी । वह मौसम तो गया । वह बहार गई । अब तो पतझड़ है । सब ओर सूखे पत्ते उड रहे ह ।

चौधरी हस पडा—'अरी ! वाह ! वेदान्ती जी !

यशोदा बोली नही, घर म चली गई । तब तक बहू सब काम से निपट चुकी थी । बतन भी माजकर रख दिय थ ।

पत्नी के जाते ही, सहसा चौधरी रामदास काप उठा । उस समय उसकी जिन्दगी का पाप बोलने लगा ह । यह घर किसी जवान की चिता क समान धू धू करक जल उठेगा । उसी समय लाठी टककर चलता हुआ कोइ बूढा उधर से निकला । दखकर चौधरी बोला— कौन ?'

मैं हू भगवाना । तुम्हारी जूतियो का दास !'

'अरे भगवाना तू ! इस अधेरे म ! किधर म आया ?

भगवाना चौधरी के चबूतर के सामने खडा हो गया । तभी बोला चौधरी यह रहमान है ना, उसक पास गया था । उसन जूतिया ठीक कराइ थी । उसे दो रुपया देने थ ।'

'तो ले आया रुपये ?'

'नही, चौधरी ! कह दिया आज पसा पास नही । वह बोला 'इस रात म मैं न आता । चला भी नही जाता । लकिन आज निराहार रहकर हो दिन निकालना पडा ।

अरे राम ! राम ! आ बठ जा । म दखता हू कोई रोटी ह या नही । और चौधरी ने यशोदा को आवाज दी । वह तो आई नही बहू आई ।

चौधरी बोला— बहू यह भगवाना चमार भूखा है कही गया था, अपना उधार मागने । वह मिला नही । रोटी हो तो दे । खा लगा पानी पी लेगा ।'

गुखिया लौट गई । अभी उसन रोटी नही खाई थी । वे सब रोटी और साग उठा लाइ । भगवाना को दखकर बोली— खा लो । पानी पी लेना ।

जब रोटी खाकर और पानी पीकर भगवाना चलन का उद्यत हुआ तो बोला—'अब तो तुम मंदिर पर जात हो। चौधरी। मैं दूर बठा देख लेता हू।

चौधरी ने कहा—'हा, भगवाना ! मुझे लगा कि वहा जाकर मन को कुछ शाति मिलती है।'

भगवाना बोला—'चौधरी, तुमने भक्त रैदास का नाम तो सुना होगा। वह भी गँवार था। वे पढा था। परन्तु भगवान का मान बना तो बडे-बडे पडित उसे अपना गुरू मानत ह। एसी ही महिमा है उस भगवान की।' उसने कहा—'यह भी उस परमा मा का प्रताप था मैं उस रहमान क पास गया इसके रास्त से लौटना भी उसी तरफ स था। परन्तु इधर आ गया। तुम्हार मन म दया आई और मेरा खाली पेट भर दिया। आज तो आखा म प्राण उतर आये थे।

चौधरी बोला—'तू इधर आ जाया कर।

'तुम्हारी दया है, चौधरी।' भगवाना बोला—मुझे भरोसा है, वह खाली पेट उठाता है और पेट भरकर सुलाता है। वह बडा दयालु है।

उसी समय यशोदा बाहर आई। भगवाना को देखकर बोली 'अरे, तूने रोटी खाई थी क्या ! वह सब-की-सब ल आई। उसा अपने लिए रखी थी। अभी खाई नही थी।

'भगवाना बोला—'चौधरन, ब की एसी ही इच्छा होगा।

'अरे यू कहना भगवान की इच्छा थी। यशोदा बोली—'वह ने भी ठीक किया। एक दो जाती तो तेरा पेट भी न भरता। भगवाना चुप रह गया।

तभी चौधरी बोला—सब कुछ भगवान की मर्जी मे होना है। उसके बगर पत्ता भी नही हिलता।

यशोदा मुस्करा दी—'अब तुम सचमुच पडित बन चल हो। उसी भाषा म बोलत हो।'

चौधरी ने कहा—अब मंदिर पर जाता हू, तो तू मेरा मजाक करती ह। हँसी करती है। मैं सोचता हू यह सृष्टि यह गाँव-जगत उसी परमात्मा की कल्पना है। उसी की इच्छा है।

यशोदा बोली—'ऐसा कोई सोचता तो नहीं। सब अंधेरे में मूढ है। पंडित भी अपने मन के अहंकार की छाया में इस जिंदगी को देखते हैं। अमीर और निर्धन इसीलिए तो दूर दूर खड़े हैं।' उसने कहा—यह भगवाना था। उसकी घरवाली कितनी सतायी गयी, इस गांव के जमींदारों में। एक बार तो किसी ने इतनी मारी कि अधमरी समझकर खेत के डौल पर छोड़ दी थी। बेचारा भगवाना पुलिस में रिपोर्ट भी नहीं लिखवा पाया। (डर गया) सोच लिया होगा, जल में रहकर मगर से बैर हो, इस धरती पर पशु अधिक हैं, इंसान कम। जिसे देखो, वह पशुता का व्यवहार करता है। राक्षस बना है।

उस समय मुखिया भी बाहर थी दरवाजे की आड़ में खड़ी थी। वह चुपचाप रहकर सास-ससुर की बात सुन रही थी। यशोदा बोली—बहू खड़ी है कुछ कहना है, क्या?

चौधरी ने मुंह उठाकर देखा और कहा—'अरी, बैठ ना बहू! तेरी मास्टरनी कहती थी कि तुम्हारी बहू का दिमाग अच्छा है। जल्दी सिलाई का काम सीख जायगी। कहती थी कपड़े की कटाई का काम कर में आता है।' वह बोला—'अच्छा है बहू, जो कुछ सीख लेगी यह तेरे काम आयेगा। देख तो सही है तू, हम दोनों बूढ़े हुए। यह घर तेरी ओर देखता है। तेरे मन में कुछ हो, तो देता देना। तेरी इच्छा को मारना मैं पाप समझूंगा। अब मैं अनयवादी बात नहीं करूंगा।

यशोदा बोली—कैसी बात करते हो, तुम। तेरे मन में क्या होता? दुनिया में और भी बहुत है, सधवा है तो विधवा भी है। इस धरती पे फिसलन पर सब तो नहीं फिसलती। अपने धर्म पर बहुत हो रहती है।

चौधरी आतुर हो उठा—'हां, हां धर्म की शाखा बड़ी है। उसे पकड़ कर कोई भी इस भवसागर से पार हो सकता है।

उसी समय आंधी का तेज झोंका आया। आसमान में बादल आये। यशोदा बोली—'शायद वर्षा होगी।

किंतु तभी चौधरी चौंका—कौन!

आगन्तुक ने पैर पकड़े—मैं हूं, जोरावर!' उसने बाहों में पकड़ा

एक रहा बच्चा पास खड़ी सुखिया की ओर बढ़ा [illegible]
पा ना। अपना ही बेटा समझना, किसी गैर का नहीं। और तब [illegible]
बच्चा सौंपते ही हवा के समान गायब हो गया। कहीं दूर गोली चली
देर तक चलती रहा। चौधरी रामसिंह और यशोदा [illegible]
भीषण विवाद सुनते रहे और सहमे हुए, [illegible] दृष्टि से [illegible]
को देखते रहे'

7

मन से और तन से जोरावर विशाल नदी के दो किनारों के समान दिखाई देता था। अनेक प्रयत्न करके भी सुखिया इस रहस्य को नहीं समझ पाई कि जोरावर क्या है और क्या नहीं। वह दिन सुखिया की आँखों के सामने सदा घूमता था कि जब वह विवाह के बाद स्वसुर गृह में प्रविष्ठ हुई थी चूंकि जोरावर डाकू था, इसलिए पुलिस के भय से बारात में नहीं गया था। परन्तु जब सुखिया पति के घर में आ गई, तब सहसा, एक सुन्दर, जवान युवक उसके समक्ष आ खड़ा हुआ। वह सुखिया के पैर पकड़कर बोला—'मेरा नाम जोरावर है। तुम्हारा दास हूं। मलखू का छोटाभाई हूं।

उसी समय, सुखिया की सास यशोदा पास आकर बोली, 'बहू, यह तेरा देवर है। मलखू बड़ा भया है, इसका। यह मेरे देवर का लड़का है।'

जोरावर ने रेशमी रूमाल में बंधे हाथ के दो कंगन सुखिया की ओर बढ़ा दिये—'यह मेरी भेंट है। स्वीकार करो।'

तब सहज भाव से सुखिया मुस्करा दी—'मैं क्या हूं।'

'अपना स्नेह! अपना प्यार! भाइया को मुझे भाभी मिल गई यह मेरे लिए बहुत है।'

यशोदा तब तक प्लेट में मिठाई ले आई—'बहू अपने इस देवर का मुंह झुठा दे। यह मिठाई खाने को दे।' वह लौट गई।

मुखिया ने मिठाई का एक टुकड़ा लिया और ज़ोरावर के मुंह की तरफ बढ़ाकर कहा—'लो, खाओ देवर जी।'

जोरावर ने वह मिठाई का टुकड़ा खा लिया और खड़ा होकर बोला—अब जाता हूं। मैं खानाबदोश हूं। इस जिन्दगी की डगर पर भटक गया हूं। आ सका तो फिर आऊंगा। विवाह में नहीं गया था। इसलिए आज आना पड़ा।

मुखिया ने एक ही सांस में अपने मन की अनुभूति उंडेल दी, तुम्हारे भैया ने मुझे सब बता दिया है लेकिन मैं चाहूंगी, इस भाभी के पास आना न भूलना। इसे भी देवर चाहिए। ऐसा मनाना और प्यार से पगा देवर मुझे दूसरा नहीं मिलेगा।

जोरावर मुस्कराया और उस घर से चला गया।

यह बात दिन दिन पुरानी हो चली थी। परन्तु मुखिया और जोरावर भगवान जाने किस भावनावश एक दूसरे की ओर खिंचे जा रहे थे। जोरावर डाकू था, शराबी था, क्रूर और बर्बर इंसान के रूप में समाज के समक्ष खड़ा था किन्तु मुखिया के प्रति वह क्यों समर्पित था इसे न तो स्वयं जोरावर जान पाता था न मुखिया। यह स्पष्ट था मुखिया यौवन के जिस प्रखर आलोक से प्रभावित थी, कदाचित उसी के अनुरूप जोरावर भी जवानी के चढ़ते सूरज से तप रहा था। गांव में उस जैसे सुन्दर और यौवन से पूरित युवक बहुत कम थे। और जब वह घोड़े पर चढ़ा, हाथ में बन्दूक लिए किसी मुहिम पर जाता, तो लगता कब्र में दफनाए गए सिकन्दर की आत्मा ने जोरावर के शरीर में प्रवेश पा लिया था। वह जिधर भी निकलता लोगों के सांस रुक जाते। दम रुक जाते। औरतें दरवाजे की ओट लेकर उसे देखती और भ्रमित बन जातीं। परन्तु वही जोरावर जब मुखिया के पास जाता तो उसके पैरों की रज अपने माथे में लगाता। तब मुखिया कहती थी मुझे लाज आती है, अपने पैर छुवाते। लेकिन जोरावर मुस्कराता 'भाभी तुम्हारे पैर छूते मेरी आत्मा को सुख मिलता है। जानती तो हो तुम मैं खूनी हूं, इन्सानियत से दूर खड़ा हूं। परन्तु जब-तक तुम्हारे पास आता हूं, तो मन से स्वतः ही गुहार उठती है कोई दैवी वाणी फूट पड़ती है तुम देवी हो

देवी स्वरूपा हो।

इतना सुनती तो सुखिया खिलखिला पड़ती। उसके मन में बात आती। आदमी इसी तरह की बात करता है, किसी नयी नवेली को अपने जाल में फँसाने के लिए। किन्तु ऐसी अशुभ बात वह मुंह से नहीं निकाल पाती। कदाचित इसका कारण था, उसके सामने आये जोरावर के चेहरे पर झलकता सारल्य भाव। सुखिया को लगता कि जोरावर जो कुछ भी हो, मेरे लिए न तो चोर है, न बदमाश! यहां आकर इसकी दस्यु वृत्ति भी मुंह नहीं उठा पाती। शायद यहां आते-आते लाचार बन जाता है। जोरावर की जगह कोई और हो जाता है।

ऐसे ही समय एक बार जोरावर ने बताया था, मलखू भैया ने मुझे सदा प्यार किया, उसने कभी भी मुझसे नफरत नहीं की। सबने मुझे त्याग दिया, लेकिन मलखू ने नहीं। वह मेरे कर्म से घृणा करता था, मुझसे नहीं। जोरावर ने अपनी एक पुरानी बात दोहराई 'भाभी एक बार मैं बीमार पड़ा था। बड़ी खराब जगह टिका था। वहां जहरीले जानवर रेंगते थे, शेर चीते भी पछाड़ते थे। परन्तु मलखू उसी जगह मेरे पास जाता। रात के अंधियारे में जाता। मेरे लिए फल ले जाता, दवा पहुंचाता। जब कि उसे पता था, उस भयावह स्थान के आस-पास पुलिस की गश्त लगती थी। वहां अनेक डाकू रहते थे।

उसी समय सुखिया ने कहा—'तुम्हारे भैया ने कभी भी मुझसे तुम्हारी बुराई नहीं की। मुझसे यह भी नहीं कहा, तुम्हें यहां आने से रोक दूं।'

जोरावर ने बताया—'मैं जानता हूं। ताऊ और ताई को मेरा आना पसन्द नहीं आता होगा।'

सुखिया बोली—'यह उनके मन की बात होगी। मुझसे कुछ नहीं कहा।'

वह भी कैसे! मैं उनका सगा सहोदर हूं। बेटा हूं। नालायक हूं लेकिन ताऊ-ताई का भक्त हूं।

यह बात पुरानी हो चली थी। जोरावर यदा-कदा आता और कुछ-न-कुछ सुखिया भाभी को देकर चला जाता। फलस्वरूप उस यौवनमयी

भी स्कूल खोल सकेगी। आमदनी का एक जरिया बन जाएगा। चौधरी वाला—'बड़ी समझदार है वह मास्टरनी। कहती थी, जब तुम्हारी बहू अपने काम में लगेगी तो कुछ और सोचने की सुध नहीं रहेगी। समझ गई न तू यशोदा, उसका इशारा था जवानी में औरत और मर्द फिसल जाते हैं, तुम्हारी बहू को ऐसा मौका नहीं मिलेगा।'

यशोदा ने लम्बी सांस भरी—'हाँ, बात तो उसकी ठीक थी। वह का मन भी सिलाई में और पढ़ाई में लगता है। रात में दीये की रोशनी में भी पढ़ती है। पिछली बार जोरावर आया था, तो कुछ किताबें दे गया था।'

रामदास बोला—'मैंने वे किताबें देख ली हैं। मेरी बहू के कमरे में जाना अच्छा तो नहीं था, लेकिन जब वह स्कूल गई थी तो तभी मैं घर में चला गया। वे किताबें सामने अलमारी में रखी थीं, मैंने उठा लीं। सब धार्मिक किताबें थीं। मैं तो उन्हें पढ़ा नहीं पाया, लेकिन समझ गया, जोरावर अपनी भाभी के लिए उसके अनुरूप ही किताबें ले आया, था। उसमें रामायण थी, भगवत्गीता थी और भारत की महान ऐसी किताबों से ही बहू के विचार बदलेंगे।'

यशोदा बोली—'जोरावर डाकू ही तो है, बुद्धिहीन नहीं। अच्छा पढ़ा लिखा है। डाकू न बनता तो किसी सरकारी दफ्तर का बाबू बन जाता। मास्टर भी हो सकता था।

इतनी बात सुनी, तो चौधरी ने सांस भरी—यशोदा, मैं इस जोरावर को घर आने से नहीं रोक पाता, इसका कारण तो तू समझती है। मैं कह सकता हूं, इस घर की प्राणरक्षा के लिए जोरावर ने गलत रास्ता पकड़ा। रामफल चौधरी के बेटे से तुम्हारे मलखू का झगड़ा हुआ था। जोरावर यदि उस समय खेत पर न पहुंच जाता, तो रामफल का लड़का तुम्हारे मलखू को जिन्दा न छोड़ता। उस समय दो बदमाश भी उसके साथ थे। रामफल बहुत देर से उस खेत पर निगाह लगाए था। पक्का बेईमान और कमीना। मेरे पिता जी ने मेरे विवाह पर पांच सौ रुपए रामफल से लिए थे। उसके बना दिए पांच हजार। हमारे पिता पढ़े लिखे तो थे नहीं, अंगूठा लगवा लिया। कोरे कागज पर क्या

लिया, इसे भगवान ही जानता था।'

यशोदा ने सांस भरी — तभी तो आज उसके पास गांव में बीघा जमीन है। आदमी आगे-पीछे की बात नहीं सोचता। अब जाकर देखो न क्या दशा है उस बूढ़े बाप की। खटिया पर पड़ा सड़ रहा है। हजारों रुपये डाक्टर ले चुका है। उसका बेटा सूरज तो जोरावर की लाठी से मरा लेकिन दो बेटे तो भगवान ने बाप से मर गए। एक पागल हो गया। और बहुएं रांड़ पर बैठी हैं। न कोई पानी देता है न नाम लेता।

रामदास का मन आकुल हो उठा—'ऐसी बात न कहो यशोदा। किसी का घर बिगड़ता देखकर खुश मत हो। अब तो तेरा भी घर बिगड़ गया।

यशोदा बोली—'भगवान का शुक्र था कि सूरज खेत पर नहीं मरा। कई महीने बाद मरा था। लाठी की मार से सिर तो फटा, परन्तु टांके लग गए थे। उसी में मवाद पड़ गया। कीड़े पड़ गए। बहुत तड़पकर मरा था वह सूरजभान। उसी अपराध में जोरावर दो साल कैदखाने में रहा था।

रामदास ने गहरी सांस ली—'वह दो साल का कैदखाना ही उसके लिए काला बन गया। वहां से पक्का डाकू बनकर निकला था। कई सरदार उसके बागी बन गए थे। जब वह जेल से छूटा, तो दिमाग में प्रतिरोध और प्रतिशोध का भाव लिए था। रामफल के घर को तबाह कर देने का भाव उसके मन में था। लेकिन, अब भगवान ने ही उस घर को विपत्ति के घेरे में बन्द कर दिया, तो जोरावर क्या करता? वह चुप रह गया।

यशोदा ने तभी ताना मारा—'लेकिन तुम तो ऐसे दयावन्त बने कि कई बार उस रामफल के पास गए थे। मैंने तो सुना, एक बार कुछ रुपये भी दे आये थे।

तब रामदास सूखे भाव से मुस्कराया—'यशोदा, मुझे देखते ही रामफल रो पड़ा था। मेरी आंखों के सामने ही उसने वह कागज फाड़ दिया, जिस पर मेरे पिता ने अंगूठा लगाया था। उस समय वह बूढ़ा गिड़गिड़ाकर बोला था, सिर्फ पांच सौ रुपये दिए थे, तुम्हारे पिताजी

को, पाच हजार नही। दो हजार स अधिक मेरे पास आ गया। अब न कुछ लेना है, न देना है। जिस खेत को तुम्हारे पिता ने रहन रखा था। उसे पाने के लिए मेरा बेटा मौत के मुह मे चला गया। लेकिन वह खेत जहा है, वही रहगा। वह तुम्हारा था अब भी तुम्हारा है। अफसोस यह है, तुम्हारा मलखू भी इस ससार म नही रहा।'

यशोदा तिलमिला उठी 'अब पछताए होत क्या, जब चिडिया चुग गइ खेत! सुनता हू उसकी एक वहू खराब निकल गई। इसकी बहुओ के भाई जमीन के मालिक बन बैठे ह।

अब ता यही होगा। हराम का माल हराम मे जायेगा। चौधरी रामदास न हुक्के से चिलम उतार ली और वह यशोदा की तरफ बढाकर कहा—'ल, जरा तम्बाखू रख ला। अब ता बहू ने चूल्हे म आग सुलगा ली होगी। आज हुक्का भी नही पी सका। वह फरीदाबाद का नोवतराम था न, आज उसकी तेरहवी थी। वहां गया था। बेचारा भला आदमी था। भगवान की माया है, जम भर तो अभावग्रस्त रहा, अब उतरती उमर मे रुपया आया तो दिल का दौरा पडते ही मर गया। यह ह भगवान का करिश्मा! उसका याय! किसके भाग्य मे क्या लिखा है, कोई नही समझ पाता?'

अजी, फिर भी लोग नही मानत। इस पैसे क लिए भी जुलम करत है। अपन स्वाथ का पट भरने के लिए दूसरो का पेट काटत है। तुम माना या न मानो, वह चौधरी भी कम नही था। वह तो यह कहो, हाथ-पर पटकर भी उसके हाथ कुछ नही पडा। अब भी जो रुपया उसक पास आया, वह सोने की औरत का था। लोग कहत हैं वह विधवा औरत डाकुआ न मारी, लेकिन मुझे भरोसा ह, वह इसी चौधरी की कारस्तानी थी। इसने दो बदमाश किराय पर किए थे। रात के अधियारे म वह बेचारी मार दी गई।

रामदास कड़ुव भाव स बोला, 'नही, नही।'

तुरत ही यशोदा बोली—'राम कसम! उस गाँव की दो औरतें इस गाव मे हैं। एक दिन खेत पर उन दोनो से बात चली थी। तभी कली खुली। एक तो चौधरी के पडोस की रहन वाली है। उसका तो यह भी

रहता था कि चौधरी ने पुलिस को भी रुपया चढा दिया था ।'

मास भरकर चौधरी बोला — 'कई लाख की जायदाद थी ।'

यशोदा बोली— वह भी नही खा सका । साल की विधवा सुबह के समय चक्की पर आटा पीसने बैठी थी तभी गडासे से उसका सिर काट दिया गया । जब उसने भैंस को चारा डालने के लिए दरवाजा खोला, तो तभी से बदमाश घर में घुस गये थे । उसने सास भरी—'तुम बहुत हो, वह दिल का दौरा पडने से मरा न, मैं कह उस रुपय को, और जायदाद का हजम नही कर पाया । साल की द नों में उसका लडका गोद तो लिया, लेकिन वह लडका भी पागल बना है । गाव के गलियार में फिरता है । कभी फटेहाल कभी नगेहाल

चौधरी बोला— नही वह सिर के ऊपर दूर आसमान की ओर देखने लगा । यशोदा चिलम लेकर घर में चली गयी । जब वह चूल्हे के पास जाकर चिलम में आग रखने लगी, तो तभी सुखिया बोली—'आज बहुत बात की पिताजी में ! मैं तो एक बार गयी, तो लौट आई ।

यशोदा बोली- -'अरी बहू ! कोई नयी बात तो थी नही, वही पुरानी घिसी-पिटी बातें । तू समझ ले, इस दुनिया में कहीं चैन नहीं । यह औरत मर्द का समाज कहने को भगवान का भक्त है आत्मा-परमात्मा को समझता है, परन्तु मैं देखती हू, यह निरा कसाई है बर्बाद और क्रूर है । अपने स्वार्थ का पेट भरने के लिए आदमी को तिनके की तरह तोड देता है ।

सुखिया ने बताया—'आज स्कूल में एक औरत बता रही थी कि कोई औरत बच्चा पैदा करके खेत में छोड आई थी । जानवरों ने वह खाया था ।

यशोदा का मन तिलमिलाया—'हा, हा, यह पाप भी इस धरती पर होता है । क्या पता, वह किसी विधवा का था या क्वारी का । उसने सास भरी ओ हा, वह पाप था । किसी ने छुपाया था ।

सुखिया बोली— यह तो निर्मम हत्या है । जघन्य पाप है ।'

अरी बहू ! इसे कौन मानता है । यह तो कुत्तें-कुतियों का समाज बना है । आखो का पानी उतर गया । धर्म को लोगो ने चुल्लू में भर-

कर पी लिया। अब तो न औरत लगती है, न आदमी। जब वह चिलम लेकर जाने लगी, तो बोली—'भैंस की सानी कर देना। आज शायद मुकेश भी आएगा। कल रविवार है वह तो छुट्टी मनायेगा।'

सुखिया बोली—'मुकेश आया, तो उसे लड्डू बना दूंगी। सुबह बिना कुछ खाय स्कूल जाता होगा।'

यशोदा बोली नहीं, बाहर चली गयी। जाकर देखा, उसका छोटा पुत्र मुकेश शहर से आ गया था। वह पिता के पास बैठा था। माँ को देख वह खड़ा हो गया और पैर छूने नीचे झुक गया। यशोदा बोली, 'खुश रहो, खूब पढ़ो। आओ, भाभी के पास। उसके पैर छूकर अशीर्वाद प्राप्त करो।'

तब मुकेश अपना झोला उठाकर घर में चला गया। वह जाते ही भाभी के पैरों में झुक गया।

8

जिस शिशु को जोरावर उस सुखिया की गोद में डाल गया, वह एक रहस्यपूर्ण दृश्य तो था ही, अज्ञेय भी था, जोरावर आँधी के समान आया और उसी तेज झपाटे में सुखिया से दूर हो गया। जिस कपड़े में बच्चा लिपटा था, उसी में एक पत्र और कुछ रुपया था। घर में जाकर जब सुखिया ने वह पत्र पढ़ा, तो वह स्तब्ध रह गयी। एकाएक कुछ सोच नहीं पाई। तभी यशोदा ने घर में जाकर कहा—'अरी, बता तो, क्या लिखा है, पत्र में। किसका है, यह बच्चा! कहाँ से लाया है। क्या धन-दौलत को लूटने वाला यह डाकू अब दूसरी औरतों के बच्चे भी उठाने लगा। हाय, राम! बड़ा नृशंस और क्रूर बन गया है, यह जोरावर!'

लेकिन उस समय सुखिया मौन थी। स्तब्ध भी बनी थी। सारा समूचा ब्रह्माण्ड उसकी आँखों के समक्ष घूम उठा था। वह बच्चे को अपने पास रखे या नहीं, इस बात का निश्चय करना भी उसके लिए

दूभर हो गया था। अनाप्त, अनिश्चय की उस अवस्था में ही, उसने लम्बी सांस भरी और आसमान की ओर अपना मुंह उठा दिया। यशोदा घर के दूसरे कामों में लग गयी थी। कुछ देर बाद ही वह फिर पति के पास जा बैठी। घर में वह बच्चा क्या आया, यशोदा के लिए भी एक समस्या बन गयी थी। उस अवस्था में ही वह दुरूह बनी थी। पास जाते ही पति से बोली—'इस बहुत है, आकाश से टूटी हुई आफत! मुझे लगता है, पुलिस से हुई मुठभेड़ में जोरावर भी मारा गया। अब तो बन्दूक की गोली का स्वर नहीं सुन पड़ता।'

चौधरी रामदास स्वयं सहमा हुआ था। कातर बना था। पत्नी की बात सुनकर बोला—'हां मुझे भी ऐसा लगता है, जोरावर नहीं रहा। वह पुलिस की गोली से मरा होगा, तो उसकी लाश पुलिस के साथ गयी होगी। उस पर तो एक लाख का इनाम था।'

यशोदा बोली—'कैसी अचरज की बात है न तो जोरावर की मां गया घर से बाहर आई, न बाप। वे सोये नहीं होंगे, भाग रहे होंगे।'

रामदास बोला 'यशोदा, यदि पुत्र काला नाग बनकर समाज को डसने लगे तो मां बाप भी उससे दूर रहेंगे? तुझे पता तो है, जोरावर का बाप यादराम आये दिन थाने में बुलाया जाता है। घर का चप्पा चप्पा खोद डाला है पुलिस ने। तू भूली नहीं होगी एक-दो बार मुझे भी थाने में बुलाया गया था। वह तो यह कहो, थानेदार मुझे जानता था। दो-चार बात करके मुझे लौटा दिया। यादराम को तो एक बार हवालात में बन्द कर दिया था। पुलिस ने मारा-पीटा भी था।'

लम्बी सांस छोड़कर यशोदा बोली—'औलाद सभी कुछ करा सकती है। आसमान में बैठा सकती है और धरती में भी गाड़ सकती है। मुझे तो इस जोरावर का इस घर की ड्योढ़ी पर आना पसन्द नहीं। बहू ने एक दो बार कहा भी कि वह दे उस डाकू से, इस घर पर दया करें। हमारा बुढ़ापा न बिगाड़।' उसने फिर सांस खींची—'भगवान जाने, बहू ने उससे कुछ कहा या नहीं। उससे कहती, तो वह रुक जाता इस दरवाजे पर न आता।

रामदास हुक्का पी रहा था। उसका धुआं छोड़कर बोला—'यशोदा,

यह भी नहीं हो सकता। गोश्त से नाखून कैसे अलग किया जायेगा। जोरावर मेरा भी गोद खिलाया है। भाई का पुत्र है। इसी घर के आगन म खेलकर बडा बना है। उस न बहू रोनेगी, न तू ! हिम्मत हो, तो तू ही कहकर देख ले। शत बदता हू, जो तू उसे रोक दे।'

यशोदा बोली नहीं, चुप रह गयी।

उसी समय एक व्यक्ति उधर से निकला। रामदास को घर के चबूतरे पर बैठा देखकर बोला—'चचा राम-राम !' उसने कहा—'आज तो खूब भिडन्त हुई, पुलिस मे और जोरावर मे। कई पुलिस वाले घायल हो गये। जोरावर को भी गोली लगी या नही, भगवान जाने।

'हा,—र, लखपत ! यह कैसे हुआ। क्या जोरावर ?"

लखपत बोला— जोरावर का पता नही कि वह मारा गया या बच गया।'

उसी समय दो-तीन व्यक्ति और उधर आ गये। उन्ही मे से एक बोला—'जोरावर बच निकला। वह आधी के अधड का लाभ उठा बैठा। जसराम के बारह बीघा खेत पर यह मुठभेड हुई थी। जोरावर ईख के गन्नो की आड मे था। पुलिस ने उसका पीछा तो दूर से किया था।

दूसरा बोला—'जोरावर बचा नही। एक बार वह चीखा चिल्लाया था।'

अरे, भैया ! वह तो पुलिस के सिपाही की चीख थी। मैं तो वही पास मे अपने कुए पर था। आधी मे कुछ दिखाई नही दे रहा था। वह कछावर जवान जोरावर एक-दो पुलिस के आदमी की गर्दन मरोड सकता था। वह तो खूखार भेडिया है। जिसके दात मारेगा उसका गोश्त उतार लेगा।'

एक व्यक्ति बोला—'इसे कहते हैं एक मछली समूचे तालाब का पानी गन्दा कर दे। इस जोरावर के कारण गाव म पुलिस ने अपना स्थायी डेरा डाल रखा है।'

उससे कहा गया— लेकिन लाभ क्या, जोरावर तो आजाद बना रहता है। गाव म आता-जाता है। लोग समझते होंगे कि जोरावर अपने

घर नही आना। अपने इस ताऊ से आकर नहा मिलता वह सब जगह जाता है। क्या मजाल, जो कोई उसके खिलाफ अपना मुह खोल। सबको अपनी जान प्यारी है। जोरावर का भरा पिस्तौल कभी भी, कही भी आग उगल सकता है। वह तो आजाद पछी है। कभी धरती पर दिखाई देगा कभी आसमान म

एक-एक करके व सब आगे बढ गये। उस समय आसमान साफ था। तारे निकल आये थे। हवा म ठण्ड थी। यशोदा बोली—'कही बूदें पड़ा है।

रामदास बोला—आजकल ओले भी पड सकते ह। दिन म गरमी अधिक थी।'

यशोदा न अपने मन की बात फिर उठाइ—हा बताया नही इस बच्चे का क्या होगा। यह गाव है ? शहर नहीं। मर्द-औरत कहेंगे, विधवा न अपने पेट से बच्चा जन्मा है हा, किसी का मुह नही पकडा जायगा। तब हमारे पास कहने को क्या रहेगा। या कहो तो, जोरावर की मा को बुलाकर बच्चा सौंप दे।'

रामदास बोला—"वह क्या कहती है ? पहले उसका मत लो।

अजी, वह क्या कहेगी। मैंने बात की, तो चुप बठी रही। जब उसके पास गयी तो बच्चे को रुई के फाहे से दूध पिला रही थी। जसे उसी का बच्चा हो, बडी ममतामय निगाह से उसे देख रही थी। सिर पर हाथ फेर रही थी। मुझे लगता है, यह बालक अभी भी दो चार दिन का है।'

रामदास बोला'—अभी चुप रहो तल देखो तल की धार देखो।

यशोदा मुस्करा दी—सच कहा है किसी ने बुढापे मे भी इन्सान औलाद और धन म मुह नही मोडता। लगता है तुम्हे भी लालच आ गया।'

रामदास बोला नही हुक्का पीने लगा। यशोदा की बात म कितना तथ्य था वह उसकी गहराई मे खो गया। तब उसने मान लिया कि बुढापे म ममता का वेग बढ जाता है। आदमी उसी म खो जाता है। जिस वाणप्रस्थी की या सयासी की बात प्राय कही जाती ह उस

प्रत्यक व्यक्ति स्वीकार नही कर सकता, इस जीवन का दामन छोडना सुगम नही, बडे-बडे महार थी इस रास्ते पर जाकर हार मान चुके हैं।

तभी बलात यशोदा बोली—'क्या सोच रहे हो ? यह आधी कोई-न कोई रग जरूर लायगी। आज पडो के छोटे-छोटे आम गिर गये होंगे। ऐस ही समझ लो, यह आया हुआ अधड इस घर मे भी कूडा करकट बढ गया है मेरा मन कहता है, जोरावर जिस बच्चे को द गया वह मानो खुद उसी का है, या उस नारी का, जिसकी हत्या करके वह भागा था इस आधी म यहा तक आया था। पुलिस पीछा न करती होती, तो वह कुछ देर रुकता। बच्चे का इतिहास बताता। वह जान-बूझकर बहू की खाली गाद भर गया। यह भी हो कि पुलिस पीछा न करती, तो दूसरी जगह जाता।'

रामदास ने हुक्का अलग कर लिया। वह उठ बठा। तभी बोला—यशोदा, तू किस उलझन म पडी है। चोर-डाकू तो नित्य इसी तरह के कुकम करत ह। किसी का बच्चा उठात ह किसी का धन ! ऐसे बेरहम इन्सान न भगवान को मानत ह, न भावना को। वह तो पत्थर है, पत्थर ! उस पर पानी नही टिकता।'

यशोदा ने सास भरी और छोड दी। वह सहसा कुछ कह नही पाई।

तब चौधरी रामदास बोला —'मलखू की मा, मैं तो गवार हू, पढा-लिखा भी अधिक नही। लेकिन मेरे मन म प्राय यह बात आती है कि इन्सान भगवान तक को नही मानता। दूसरो को तो धोखा देता ही है, अपने को भी देता ह उसे देखो न, लाला धनपत राय को। बूढा हो गया, मदिर पर जाकर शिवजी की पिण्डी पर जल चढाते हुए। गाव मे सबसे बडा भजनानन्दी बना है। मदिर पर रुपया भी लगाता ह। आये दिन ब्राह्मणो को खिलाता है। तीथ स्थानो की भी यात्रा कर आया है। लेकिन क्या कभी उसके अपने मनप्राण मे भगवान का स्वरूप आया है। उस भावना को समझा है। हर सुख की औरत सिर पटककर मर गई, लेकिन लाला ने उसका रहन रखा खेत नही लौटाया। दो ही साल मे बीस हजार का माल हडप गया।'

यशोदा बोली—'सैंकड़ा औरतों का जेवर उसने अपने यहां गिरवी रखा है। जब डाका पड़ा तो एक बड़ा सन्दूक डाकू उठाकर ले गए थे। लोगों का कहना है कि उसमें सोने-चांदी के जेवर भरे थे। वे सब गिरवी रखे थे।'

हां, हां, यही तो। लाला की बातें मेरा मन सालती हैं। ऐसा लगता है कि कोई जहरीला जानवर मेरे प्राणों से कोई तरल पदार्थ उलीच उलीच कर बाहर फेंक रहा है। रामदास बोला—'मैं गंवार हूं या, मंदिर पर जाकर पूजा करनी भी नहीं जानता, लेकिन मैं इतना जरूर समझता हूं इस संसार को बनाने वाला, इस जीवात्मा का निर्माता कोई-न कोई है जरूर। उसी ने चींटी से लेकर हाथी तक का निर्माण किया है। जो संत महात्मा निर्माण पद को प्राप्त हुए हैं, मरने के बाद भी पूजे जाते हैं, उसके जीवन में कोई न कोई ऐसी सुगन्ध जरूर थी कि जिससे इन्सानी समाज सुगंधित बना। उस पावन गंगा में गोता मारकर अपने अपने को पखारना चाहा।'

यशोदा बोली—'हम देवी देवता या संत महात्मा की पूजा कर सकते हैं, स्वयं वैसे नहीं बन सकते। हम तो भगवान के कीड़े हैं सड़ांद में पड़े रहना ही पसंद करते हैं लाला धनपत राय भी एक कीड़ा है जहरीला। इन्सान को काटे तो वह बचेगा नहीं। बहुत से स्त्री-पुरुष मारे हैं इस लाला ने।'

रामदास ने लम्बी सांस खींची—सभी ऐसे हैं। भगवान का पूजन करना भी एक ढोंग है। अपने को धोखा देना है। समाज को ठगना है।

यशोदा बोली'—'अजी तुमने सुना नहीं गंगा-यमुना में पेशाब-पाखाना बहाया जाता है। उस पवित्र दरिया को भ्रष्ट कर दिया है लोगों ने। अब गंगा में स्नान करना धर्म का नाम नहीं।' उसने कहा—'हमारा मलखू एक बार हरिद्वार गया था। कहता था, जब मैंने हाथों में गंगा का जल लेकर पीना चाहा तो तभी पाखाने का एक टुकड़ा उस जल में आ गया था। तब से वह गंगा नहीं गया।

चौधरी बोला—'मलखू की मां, यह इन्सान भी एक पावन दरिया है। गंगा है। लेकिन इसके जीवन में भी अवसाद भरा है। गन्दगी से

मराबार है। जान कितना जमा न मुफलधावर इमान मन्त महात्मा प पद को प्राप्त होता है। वह अपने जीवन की गगा म स्वय गोता मारता है, बल्कि जन जन को पखारना चाहता है। वहा भगवान है। इन मन्दिरा का निर्माण इसीलिए ता किया कि इन्सान जन-जन के मैल धाने के साथ अपने आपको भी निखार द। उस सुन्दर मूर्ति क अनुरूप अपन को बना ल।'

तभी सहसा यशोदा मुखला उठी—'यह नही होगा। इन्सान नही बदलेगा। यह तो कूडी का ढेर बना रहगा।'

उसी समय महगा चौधरी चीख उठा। देखा, सुखिया उह द्वार पर आकर खडी थी। वह यशोदा को बुलाकर कह रही थी पर म आजा अम्मा? रोटी भी बनानी है। उस बच्च को तुम ल लो।

रामदास बाला—'यह तूने क्या सोचा है? अब यह तू पालगी। तू सहजेगी।

सुखिया अब ससुर से बोलन लगी थी। घूघट ना कम काढती थी। स्वय रामदास का यह निर्देश था। स्वसुर की बात सुनकर वह बाली—'हा पिताजी! अब मैं स्वय पालूगी, इस बच्च को! समझ लो, यह मेरा है।

एकाएक रामदास बाला नही, चुप रह गया। तभी यशोदा बोली—'खूब सोच समझ ले बहू! बच्चे का पालना आसान नही। और तू अपना आग भी देख ल। तू विधवा है, कच्चे धाग मे तरी जिन्दगी बधी है।

रामदास न कहा—'हमारी बहू मूख नही, समझदार है। अपना भला-बुरा समझती है।'

सुखिया बोली—'पिताजी जोरावर मुझे यह बच्चा द गया है समझ लो, सौंप गया है। वह आयगा ता ल जाएगा। नही ता यह मेर पास रहेगा।

यशोदा बोली—'जोरावर अब नही आएगा। आज वह पुलिस की गोली से मारा गया होगा। वह नही बचा होगा।

लेकिन सुखिया न इस बात पर अपना मत व्यक्त नही किया। उसन यह भी नहा बताया कि जोरावर अपने पत्र म क्या लिखकर द

गया है।

किन्तु यशोदा ने पूछा—'वह पत्र भी तो दे गया था। क्या लिखकर दे गया ?'

मुखिया ने कहा— कोई खास बात नही थी। यह लिखा था, बच्चा सौंप रहा हूं, इसे पाल लेना ? किसी को मत देना। इसी घर का बनकर रहेगा।

वाह-वाह ! बड़ा तीर मारा हरामजादे ने। रामदास बोला— उसने इस समूचे घर को फसा दिया है। बहू को बदनाम कर देना चाहा है।

तुरंत ही यशोदा बोली—'और नही तो क्या। चोर डाकू का धरम तो होता नहीं। ऐसे लोगो के मन से न न्याय होता है, न दया। इन्सानियत का भाव तो उनके पास आय ही क्या। वे खूनी और लुटेरे हैं।

उस समय सुखिया को सास की बात पसन्द नही आई। वह तुरन्त बोली—'अम्मा, यह बात चबूतरे पर बैठकर नही कही जाती। घर में चलो। मैं रोटी बनाती हूं, पिताजी को खिला दो।'

यशोदा उठ तो चली परन्तु सुखिया की बात उसे चुभ गई। उसे लगा इस बहू को बच्चे से ओरावर मे जरूर कोई लगाव है। उसके प्रति ममता है। कदाचित यह बात चौधरी के भी मन में आई। तब सुखिया अपनी बात कहकर घर में लौट गई थी। चौधरी ने पत्नी को टकोरा सुन ली बहू की बात। समझ ले, हाथी के दांत बाहर निकल आये हैं। खतरे की घंटी बज चुकी है।

यशोदा झुंझला पड़ा। वह कुण्ठाग्रस्त बनकर बोली— अब तुम्ही देख लो। सिर पर तुमने चढाई है इस बहू को। यह तो बोल भी नही पाती थी। अब टपर-टपर बोलती है। एक की चार सुनाती है।

अरी भाग्यवान ! अब कब तक चुप रहोगी। उसे भी बोलना है। अपने मन का भाव व्यक्त करना है। यह बुरा नही। घूंघट काढ़कर घर में बैठी रहना शोभाप्रद नही।

यशोदा ने आंख तरेरी— मेरी बात सुन लो। यह हालत रही तो

यह सीधी-सादी बहू तुम्हारी नाक काट लेगी।'

'मेरी नाक तो कट गई, यशोदा। ओरंगजेब ने कहा [illegible] का लड़का है तो, मेरा है तो, कोई अन्तर नहीं। पेट के [illegible] आता है, मैं देखता हूँ। मैं अन्धा नहीं। मेरे मन की आँखें भी [illegible] माथे की भी। जा, घर में। रोटी दे। भूख लगी है।'

तब यशोदा घर में चली गई।

9

वस्तुतः चौधरी रामदास का जीवन कभी भी सभ्य नहीं रहा। परन्तु जब से उसके पुत्र मलखू का प्राणान्त हुआ, वह बड़ी तेजी के साथ बदल चला था। पहले के समान ईर्ष्यालु, दम्भी और महत्त्वाकांक्षी नहीं रह गया था। अपनी जवानी के दिनों में रामदास लड़ाकू प्रवृत्ति का था। मुकदमेबाज था। किन्तु उसका जवान पुत्र क्या गया, रामदास का पिछला जीवन ही चला गया। अब वह घर दालान के समान मंदिर पर जाकर बैठता और वहाँ पर आए आगन्तुकों का भगवान के प्रति श्रद्धा भावना को देखकर स्वतः ही विहँसता। गाँव के छोटे बड़े के नर-नारी मानो उसकी दृष्टि में अजूबा थे, अलौकिक थे और वे सब उस मंदिर पर आकर कोई अलभ्य वस्तु पाने के आकांक्षी बने थे। तब सोचता रामदास क्या इस पत्थर की प्रतिमा में कोई इसकी जीवात्मा होगी। वह इन दर्शनार्थियों को आशीष प्रदान करती होगी। किन्तु रामदास के मस्तिष्क में और मन में इस प्रकार की अकल्पित बात नहीं उतर पाती थी। वह लोगों की उस महत्त्वाकांक्षा की कल्पना करके कभी हँसा तो नहीं, किसी के प्रति उपेक्षा का भाव भी प्रदर्शित नहीं कर पाया, परन्तु वह स्वतः ही विस्मित था। इस ऊहापोह में लगा था, आखिर यह सब है क्या। लोग किस प्रेरणा से इस मंदिर की ओर खिंचे चले आते हैं। जबकि गाँव का वह देव मंदिर भव्य भी नहीं था। सौ-पचास वर्ष पूर्व वह बना

था। एक जमींदार ने बनवाया था। अब वह भी नहीं था। उसका समूचा घर ही समाप्त हो गया था। रामदास को पता था कि उस जमींदार की पत्नी धर्म परायणा थी। हरिद्वार, काशी और त्रिवेणी प्रायः जाती थी। उसी की प्रेरणा से मंदिर बना था। स्वयं जमींदार न देव भक्त था न धार्मिक भावना का पोषक। वह रात दिन शराब के नशे में रहता। अनेक औरतों से संबंध रखता। समूचे गांव की आधी जमीन का वह स्वामी था। हाथी रखता घोड़ी रखता और सुंदर बैलों से सज्जित रथ में बैठकर निकट के शहर में जाना उसका प्रिय व्यसन था।

एक दिन जब मंदिर पर बैठे उस जमींदार का इतिहास रामदास के मन में उभरकर आया तो तभी वह अत्यंत विपर्ल भाव में मुस्कराया, जमींदार क्रूर था और उसकी पत्नी धर्मात्मा। कितना बड़ा अंतर था दोनों में। समझ गया कि उस जमींनदार के वट पात गए स्वयं भी गया। उस जमींदार का वैभव भी श्मशान में जलती चिता के समान धू धू करके समाप्त हो गया। अब उस जमींदार का विशाल भवन खण्डहर बना था। जहां कभी रंग रेलियां मनती थी, वहां अब गांव के किसान अपने बैल बाछे गाय भैंस बांधते। उस भूखंड का अब कोई स्वामी नहीं था। वह धरती अपने स्थान पर थी परंतु उसका स्वामी नहीं था। जिस व्यक्ति का एक दिन गांव में दबदबा था अब उसका न कोई नाम लेवा था न पानी देवा

चूंकि रामदास कभी मंदिर पर नहीं आया गया इसलिए जब वह वहां जाकर बैठने लगा पंडित द्वारा पठित कथा सुनने लगा तो तब उसे वह मन कौतुक का विषय लगता था। वह यह देखकर भी चकित था कि सभी इन्सानों के समान वह भी सीमाबद्ध है। गांव में रहकर भी उस छोटे से मंदिर का रहस्य नहीं जान पाया। यशोदा यदा कदा वहां जाती और लौट जाती। उसने भी कभी अपने पति को मंदिर पर जाकर देव-दर्शन करने के लिए प्रेरित नहीं किया। कदाचित उस समय भी उसे मंदिर के प्रति अधिक अनुराग नहीं था। केवल रस्म पूरा करती थी। किसान की बेटी किसान के घर में आई, तो सुबह से शाम तक उसे घर-बाहर के धंधों में फंसे रहना पड़ता। मंदिर पर जाने की फुरसत नहीं

थी।

उन दिनों मन्दिर पर एक साधु आया हुआ था। रामदास देखता कि उस साधु के पास छोटे-बड़े सभी जाते थे। स्त्रियां भी आतीं। कुछ ऐसे भक्त भी उस साधु के पास गए थे कि जो साधु के पास जाकर बैठते और उसके लिए सुलफे की चिलम तैयार करते। सर्वप्रथम साधु ही उस चिलम को पीता। उस चिलम में लौ निकालता। बहुत सा धुआं मुंह से बाहर फेंककर वह चिलम अपने भक्त की ओर बढ़ा देता। चूंकि रामदास भी गाँव का एक विशिष्ट व्यक्ति था, इसलिए आगन्तुक उसे देखते और मन में कहते अब इस चौधरी को भी भगवान की शरण में आना पड़ा है। एक न एक दिन भगवान के दरबार में सभी को आना पड़ता है। किन्तु चौधरी की निगाह में अब भी यह नाटक था। जिसका कोई दृश्य सुहावना था, कोई रहस्यात्मक। वहाँ भगवान है या नहीं इसी औत्सुक्यता में वह उस स्थान पर जाकर बैठता और सब देखता था।

एक दिन जब चौधरी रामदास वहां बैठा था तो तभी उसका पड़ोसी नरायण वहां आया। वह नित्य नहीं आता था, कभी कभी आता था। चौधरी के पास जाकर वह बोला—'यह साधु पहुंचा हुआ फकीर है। आओ तुम भी। दो बात करो। साधु खुश हो, तो अपनी धूनी की राख देकर ही पागल कर देगा।'

चौधरी रामदास का ध्यान उस समय कहीं और था। जब पड़ोसी नारायण ने अपनी भावना व्यक्त की तो वह सहज भाव से मुस्कराया—'उसके नरायण, यह साधु तो सुलफाबाज है। आंखों से आग निकलती है। शरीर पर भभूत मिलता है, तो लगता है जैसे कोई प्रेत हो। सिर की जटाएँ भी इतनी बढ़ा ली है कि धरती छूती है। यह नंग धड़ंग साधु जो जरा सी लंगोटी लगाये बैठा है और अग्नि से प्रज्वलित हुई धूनी पर बैठा सुलफे का धुआं उड़ाता है, मुझे तो यह सब समझ नहीं आया। यह त्यागी साधु नहीं, बोझ है समाज के ऊपर। मैं कहता हूं, कोढ़ है, इन्सानियत का।

चौधरी की बात सुनते ही, नरायण को मितली-सी आई। वह रुष्ट भी बना। फिर भी वह अपने मन की बात रोक गया। वह साधु का

भक्त था। पिछली सध्या म वह पास द कस्बे म गया और वहाँ से साधु महायज्ञ के लिए सुलफा खरीदकर लाया था। वह उसकी जेब म था। जब उसने चौधरी की बात सुनी, तो बोला—'यह तो अपनी-अपनी भावना है चौधरी! मानो तो इसान भगवान है, नही तो माटी है। इन साधुओ का त्याग तो देखो, सर्दी, गर्मी और बरसात नगे बदन पर उतार देते हैं। किसी से कुछ माँगत नही भक्त स्वय ही भेंट कर जात हैं।

चौधरी बोला— मैं तो कभी इस मन्दिर पर आया नही। लेकिन अब आकर देखता हू तो लगता है तुम्हारे इस भगवान के दरबार म किसी वस्तु का अभाव नही रात तेरे पडोस की कल्लू की माँ बता रही थी गाव की औरतें इस साधु के लिए हलुवा, पूरी और खीर घर स तयार करके लाती है किसी दिन इस साधु न कहा होगा कि पकौडी देर से नही खाइ। तो कोइ औरत घर मे पकौडी बनाकर न आई'

नरायण एक प्रौढ व्यक्ति था। चौधरी की बात सुनकर बोला—'इन साधुओ के लिए किसी वस्तु का अभाव नही। य भगवान के भक्त ह। दूरदर्शी है। कभी बात करो उस साधु से, तो पता चलगा कि यह कितना पहुचा हुआ फकीर है। वह रामगुलाम है ना उसकी औरत के बच्चा नही होता था। बहुत इलाज कराया सब बेकार गया। लेकिन इस साधु की एक चुटकी न बेचारी का अभाव दूर कर दिया

चौधरी रामदास मुस्कराया—तूने भी भभूत की चुटकी ली। कुछ अपना उद्धार किया ?

नरायण क मन का स्वत्व जाग उठा—मैं कुछ मागने नही आता चौधरी! य साधु भगवान के दूत ह, इनकी सेवा करना ही अपना धम मानता हू आओ चलो तुम भी! साधु महाराज स मिलो। बोलत कम हैं आख ब द किए रहत हैं।

चौधरी हँसा—अरे मूख! सुलफे का नशा बोलन नही देता। आखें देखो तो सुलफा क जलत अँगार जैसी! तू जा! म भी कभी जा बठूगा।

नरायण साधु के पास चला गया। चौधरी रामदास मन्दिर पर देर

म बैठा था, उठकर जंगल की ओर चल दिया। उन दिनों फसल कट रही थी, इसलिए खेतों की तरफ जाना भी जरूरी था। मलखू की मृत्यु के बाद यशोदा ने खेतों की देख रेख का काम स्वयं करना आरम्भ कर दिया था। रामदास आशक्त हो चला था। पुत्र के बिछोह का दुख भी उसके पौरुष और पुरुषत्व को छान बैठा था।

जब चौधरी अपने एक खेत के डौले पर जाकर खड़ा हुआ, तो तभी, उसके मन में बात आई कैसा उलझदार मामला है इस धर्म भक्ति का, इन साधुओं का, इन मन्दिरों का! मैं तो उस रहस्य को समझ नहीं पाता एक साधु आया था इस मन्दिर पर। गांव की कई औरतों को भ्रष्ट कर गया। एक लड़की को भगाकर ले गया। बाद में सुना, वह सुलफा तो पीता ही था शराब का भी सेवन करता था। गांव में कुछ व्यक्तियों ने चाहा भी कि पुलिस में उसकी रिपोर्ट कर दी जाय, परन्तु धर्म के ठेकेदारों ने किसी को भी थाने की ओर नहीं जाने दिया और तो और, वह जवान लड़का राधेश्याम इसलिए कुछ लोगों ने मारा कि वह इन साधुओं का गांव में आना अशुभ मानता था। वह तो यह कहो, लोगों ने उसे बचा दिया, नहीं तो जान से मार दिया जाता बोलो, यह भक्ति है क्या? यह भी नशा है? जाति बिरादरी और धर्म ये ऐसे जहरीले घूंट हैं कि पेट में जाते ही, आदमी अपनी वास्तविकता खो बैठता है। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो वह आदमी भी नहीं रहता, पशु बन जाता है

खेतों से लौटकर जब काफी दिन चढ़े चौधरी रामदास घर लौटा तो तब तक सुखिया बहू स्कूल चली गयी थी। यशोदा घर के आंगन में बैठी गेहूं साफ कर रही थी। पास जाते ही रामदास बोला—'उंह बुढ़ापा तो आ गया लेकिन घर का यह धन्धा नहीं छूटा। बहू तो स्कूल गयी होगी।'

यशोदा बोली—-मेरे भाग्य में आराम नहीं। जो थोड़ा-बहुत था वह कुछ भगवान ने छीन लिया, कुछ तुमने! भला कोई सुने तो क्या कहे, बहूरानी तो स्कूल जाने लगी और सास घर का धन्धा सहेजने बैठ गयी। बोलो—'मैं आराम कैसे करूं? कोई समय है मेरे लिए, खटिया पर बैठने का!'

उस समय चौधरी रामदास के मन मे घर की बात नही थी। वह देर से मन्दिर की और साधु की बात म अटका था। तभी बात बदलकर बोला—'तुम मन्दिर पर गयी थी न, उस साधु से मिली थी ?'

यशोदा ने दो-टूक जवाब दिया—'मेरे पास इतना समय नहीं जो लुगाडो मे मिलने जाऊ। वह साधु क्या है मुझे तो कोइ लुगाडा लगता है। जि ह बेटा लेना हो या धन पाना हो वह जाये उस साधु के पास। अब मुझे क्या लेना देना मेरा तो हाथी सरीखा बेटा चला गया। हाथ खाली ह, मरा। तोता उड गया।' यशोदा का स्वर भारी हो गया। गला रु ध गया।

चौधरी चुप रहा। बाहर की ओर जाता हुआ बोला— पाच बीघे का खेत अब कटाई पर आ गया ह। जरा सी आग चिलम म रख दो। वह जात जात रुककर बोला—मैं भी आजकल मन्दिर पर जा बैठता हू। देवता की पूजा तो नही कर पाता परन्तु वहा बठने का मन करता है। लगता है, स्वत ही, मन से हुप या फौव्वारा छूटता है। मैं तो यह भी नही जानता कि भगवान ह भी या नही, लेकिन जब मर्द-औरत मन्दिर पर श्रद्धा के साथ जात ह, तो लगता है कुछ न कुछ ह जरूर। उस देव-प्रतिमा म भगवान है। वह हसता है, मुस्कराता ह।

यशोदा बोली - 'तुम मानो या न मानो भगवान तो है। यह आसमान, यह धरती, य जीव-जन्तु उसी ने तो बनाये ह। देखो हमारे दरवाजे पर गुलमोहर का पेड, किस तरह फल फूल रहा है। फूलो स भरा ह। अभी कुछ दिन पूव उस पर एक भी हरा पत्ता नही था। सब झड गये थ। अब फिर बहार आई है उस पेड पर। यह है, कुदरत का खेल। बच्चा पेट म पनपता ह। पैदा होता है। बडा बनता है। यह सब भगवान का ही तो देन है। उसकी लीला है।

चौधरी ने सास भरी 'शायद'।

यशोदा ने स्वर पर जोर दिया—'शायद नही, सत्य !' वह बोली—तुम मन्दिर पर जाया करो। मलखू गया है, तो तुम्हारा कमर टूट गया। बुढापे का आराम छिन गया। मन्दिर पर जाकर शान्ति मिलगी।

लेकिन चौधरी बोला नही, बाहर चारपाई पर जा बैठा। वह तब

भी भ्रमित विस्मित था। जब यशोदा चिलम भरकर लाई, तो बलात् चौधरी ने कहा—'सुनो यशोदा! किसी ने ठीक कहा है, वृद्धावस्था में घर से दूर हो जाना चाहिए। भगवत भजन करना चाहिए। मन शान्त रहता है।'

यशोदा विकृत हो उठी—'तुमसे कुछ नहीं होगा। तुम अब भी माया के चक्कर में पड़े हो। अब तो तुम रात में भी सोते से उठ बैठते हो। जाने क्या मन में लिये हो!'

चौधरी बोला—मुझे प्राय मलपू स्वप्न में दिखाई देता है। अभी एक दिन वह स्वप्न में आया और बोला—'जोरावर से कुछ न कहना। वह डाकू तो है, लेकिन दिल का साफ है।' उसने यशोदा की ओर देखकर कहा—'भला यह भी कोई सपना था। एक दिन पूर्व कहा था कि जोरावर और सुखिया मन में स्नेह रखते हैं, एक दूसरे के लिए। तो, वही बात मलपू ने सपने में कह दी। उसने बता दिया जोरावर अपनी भाभी से प्यार करता है तो करने दो। यह पाप नहीं। दोनों एक दूसरे को समझते हैं। ठगी में नहीं आयेंगे।

यशोदा ने सांस भरी—'भगवान जाने, क्या होगा? मुझे तो तुम्हारी इस बहू पर भरोसा नहीं। अब तो जोरावर भी दिखाई नहीं देता। रात आई थी उसकी मां, रो रही थी। कह रही थी, मेरा मन कहता है, अब जोरावर जीवित नहीं। पहिले आता रहता था। लेकिन अब इतने दिन में उसकी कोई खबर-खबर नहीं।'

रामदास बोला—अच्छा है, वह मर जाय। इस धरती का थोड़ा पाप तो कटेगा। कलंक मिटेगा।'

अजी, तुम ऐसा मत कहो। आखिर है तो वह हमारा अंश! हम दोनों के सदा पर छूता है।' वह बोली—'देख लो, लड़का कैसा गोरा-चिट्टा है। अब तो फूला-र कटरा हो रहा है। मुकेश कस्बे से दूध का डिब्बा लाता है, बहू उसी का दूध पिलाती है।

'क्यों, भैंस का दूध तो है?'

'अजी यह भारी है। बच्चे का पेट बरदाश्त नहीं करता।' वह घर में लौट गयी।'

उसी समय सुखिया स्कूल से लौट आयी। वह गोद में लिए बच्चे को रामदास की ओर बढ़ाकर बोली— अब बड़ा शैतान हो गया है। अम्मा से हिला है।

रामदास ने बच्चा गोद में ले लिया। वह उसे दुलराता हुआ बोला, क्या बे! अब शैतान हो गया है, तू! मैं समझ गया, किसका बेटा है तू! और उसने फिर बच्चे को सुखिया की ओर बढ़ा दिया।

10

सुखनन्दी से सुखिया बनकर भी चौधरी रामदास की पुत्र-वधू अपने आप में सन्तुष्ट थी। उसके शरीर का यौवन अभी ज्यों-का-त्यों बना था। जवानी के उस चढ़ाव को बन सँवर कर रखना मानो सुखिया ने सीखा नहीं था। सिर के बाल बिखरे रहते। रंग गोरा था, गालों पर

लाली थी, लेकिन, उसे कभी साबुन से साफ करना उसने नहीं सीखा। कभी-कभी यशोदा उसे टोक देती और कहती, 'तू दो लोटे पानी से स्नान कर लेती है, कभी साबुन भी नहीं लगाती। मैं तुझे बालों में तेल लगाते भी नहीं देखती। भगवान का दिया यह शरीर है, इसे सभालकर रखना जरूरी है। यह उसकी देन है।'

तब सुखिया सहज भाव से मुस्कराती और हस देती। जब वह हसती तो लगता, श्वेत मोती बखेरती हो। एक दिन जब सास-बहू में यही बात चली तो तभी, सुखिया बोली—'अम्मा, इस औरतजात के लिये कभी चैन नहीं। साबुन से शरीर धोय, तो मौत, न धोय तो भी। मैं बालों में तेल नहीं लगाती, तब तो औरतें कहने से चूकती नहीं कि मैंने किसी योगिनी का रूप बना रखा है। यदि तेल लगाऊ, तो तब, यही कहा जायगा, मैं किसी मरदुवे को अपने जाल में फासने चला हूं। किसान की बेटी बनकर भी शहरातियों का मात करती हूं।

ससुराल के घर में वह पहिला दिन था, जब कि सुखिया ने अपने मन का रोष और दर्द सहसा व्यक्त किया था। सुखिया इतना भी समझती है और मह पाती है, यशोदा ने उसी दिन समझा था। वह बलात् सहम गयी। कुछ विस्मय में उस बहू को देखकर बोली—'बहू, कहने वालों के हाथ पकड़े जा सकते हैं, मुह नहीं पकड़ा जाता।

लेकिन सुखिया ने फिर तीर मारा—अम्मा, बाहर का जहरीला साप पकड़ा जा सकता है, घर में मारना आसान नहीं। उसके घूमने के बहुत रास्ते हैं।

यशोदा सहम गयी। वह कुण्ठा से भर उठी। उसे लगा, कि इस सीधी-सादी बहू के मन में कोई बात है। जैसे कोई काला साप फन उठाये बैठा है। वह फूत्कार कर रहा है। किसी को काट लेना चाहता है। और वहा उस घर में सिवा उसके कोई दूसरी औरत तो थी नहीं, जो उसके विरुद्ध थे, विषवमन करती हो। कदाचित इसी सम्भावना से भरकर वह बोली—'किसी ने कुछ कहा क्या? तूने कुछ सुना?'

सुखिया बोली—'औरतों के स्कूल में बीस-पच्चीस औरतें आती हैं। सबके अलग-अलग घर हैं। सबकी बातें और घातें भी अलग-अलग।

मुझसे रहा जाता है, मैं अकेली क्या हूं, इस जवानी को क्या मारती हूं। जब तेरी सास तुझ पर भरोसा नहीं करती तो भला दूसरी औरतें मुझ पर क्या विश्वास कर लेंगी किन्तु इसी तरह सती-साध्वी बनकर जीवन बिता दूंगी हां यह बच्चा भी जाने तू कहां से उठा लाई? पता नहीं, किस डोम चमार का है हां, आजकल पाप बढ़ गया है ना, आये दिन खेत खलिहान में बच्चे पड़े मिलते हैं कोई क्वारी का, कोई विधवा का और तू बताती नहीं यह बच्चा कैसे मिला, कहां से मिला

यशोदा ने सांस भरी— बहू, यह तो गांव है, शहर नहीं। यहां तो पल पल की खबर एक दूसरे को मिलती है। घर से घर मिले है, खेत से खेत

मुखिया और खुली—'लेकिन इस घर की बात तो हवा की तरह उड़ती है। तुम एक की दस बातें बना आती हो, गांव की औरतों में!' आखिर उसने गोला दाग दिया।

हाय, राम! आग पड़े, तुम पर! तो तू समझती है, मैं यह सब बातें फैलाती हूं। यशोदा लाल हो उठी—'कलमुही, तूने मेरा बेटा तो खा लिया, अब इस घर को भी खत्म कर देना चाहती है। सच कहा है किसी ने *रांड, सांड, संयासी इनसे बचे तो सेवे काशी*

उसी समय चौधरी रामदास घर में आया। वह पत्नी को देखते ही बोला—'क्या चीखती है, भाग्यवान! तेरा तो बेटा गया, इस बहू का तो पति चला गया औरत का सुहाग गया, सब कुछ गया तेरा तो एक बेटा और है, इस बहू का क्या है!

लेकिन यशोदा चीख उठी—'मैं इस कुल कलंकिनी की सब बातें जानती हूं। तुम समझते होगे कि मैं अंधी हूं जोरावर क्यों आता है, इतना पर मैं अपनी अक्ल से सोचती हूं।

इतना सुनना था कि चौधरी रुष्ट हो उठा। वह लाठी धरती पर रखकर बोला—'राक्षसी, चुप नहीं रहोगी। सिर तोड़ दूंगा। मेरा बेटा तो गया ही तुझे भी समाप्त कर दूंगा।

तब भी यशोदा पीछे नहीं हटी। वह तड़प उठी—'ले मार मेरे सिर में लाठी। तू भी मन की निकाल ले। यह डायन सबको खा जायेगी।

घर की आवाज बाहर पहुच रही थी। दो-तीन औरतें आ गयी। एक दो आदमी भी।

उसी समय सुखिया ने अपना मुह ऊपर उठाया और करुणाद्र बनी अपनी आखें चौधरी के मुह पर टिकाकर कहा—'पिताजी, मुझे मुक्त कर दो, मैं डायन और चुडल हू। तुम्हारा एक बेटा खा बैठी तो दूसरा भी खा सकती हू। मुझे बाप के घर पहुचा दो। मुह से कह दो, मैं स्वय चली जाऊगी। यहा दम घुट रहा है। सास रुक रहा है। बडी घुटन है, इस घर मे। सवेदनशीलता अपनी सीमा लाघ बैठी है।'

किन्तु चौधरी रामदास गरज उठा, चुप रहो ! चुप रहो ! इस घर का बरबाद होने से बचा लो, बहू ! यह यशोदा दो लडको की मा तो बनी, लेकिन मौत की तरफ जाती-जाती भी औरत के मन की मलिनता, तुच्छता नहीं छोड पायी। यह विषैली नागन है। कालुष भरा है, इसके मन म।

पति के स्वर के अनुरूप यशोदा भी तडक उठी 'हा, हा, मै कमीनी हू। डायन हू।'

रामदास ने लाठी उठा ली। वह जैसे ही यशोदा के सिर पर मारनी चाही, कि तभी, सुखिया बीच मे आ गयी। लाठी का वार उस पर पडा। गनीमत यह थी कि वह सिर के मध्य मे न लगकर एक तरफ लगी। खून निकल आया। सुखिया धडाम से पछाड खा गयी। घर के आँगन मे खून फल गया।

एक औरत चीख पडी 'हाय राम ! यह तूने क्या किया, चौधरी ?'

दूसरा व्यक्ति बोला—'घोडे की बला तबेले के सिर हा, मारने चला था, घरवाली को, बीच मे आ गयी बहू ! चलो, झगडा शान्त हो गया। अब चौधरन अपनी भूल मान लगी।'

यशोदा ने उस व्यक्ति की ओर घूरा 'दीनू तू बात नही समझता।'

दीनू बाला—'चाची मैं सब समझता हू। इस बहू का इतना कसूर है कि अभी जवान है। देखने-सुनने म भली लगती है। अपने घर की चर्चा तू चलाती है कोई और नही।'

उस समय चौधरी रामदास अपराधी के समान खडा था। एक औरत

न रेशम का कपडा जलाया था और बहू की कनपटी मे गास हुए जख्म म भर दिया। उसे चारपाई पर लिटा दिया।

एक अन्य औरत बोली—'दूध म हल्दी डाल कर दो। अब पडी रहने दो। रघुवीर डाक्टर अभी गाव मे होगा, उसे बुलाकर दिखा दो।'

चौधरी रामदास ने पास खडे युवक की ओर देखा। उससे कहा—'जरा देखो तो, डाक्टर को। घर पर हो, तो बुला ला।'

युवक चला गया। उसी समय एक औरत यशोदा का लक्ष्य करके बोली—'चौधरन, जमाना खराब है। सोच-समझकर बोला कर। घर की बात बाहर मत निकाल। अब यह बहू इस घर की आबरू है। यह चाहे तो पलभर म सब कुछ मिटा दे। लडका गया, तो तेरा भाग्य फूट गया। चलो, भगवान की यही कृपा है, दूसरा और है तेरा लडका। अब उसे सहेज। भगवान से प्रार्थना कर। बहू का छाती से लगा।'

चौधरी तब भी चुप था। यद्यपि उसके मन म बात थी कि यह यशोदा भगवान की पूजा क्या करेगी घर की आबरू पर कीचड उछालेगी। परन्तु वह बोला नहीं, बाहर चला गया। चबूतरे पर पडी चारपाई पर जा बैठा, उसकी इच्छा थी कि कोई चिलम मे आग रख दे और वह तम्बाखू पीले। परन्तु उस समय तो घर मे कोहराम उठा था। कोई चौधरी को अपराधी मानता था कोई चौधरन को। डाक्टर आया, उसने सिर के खून की सफाई करके दो-तीन टाके लगाये और खाने का दवा दी। तभी एक व्यक्ति ने रामदास को बताया—आज तुम पर और इस घर पर बहुत बुरी गीरह आई थी बहू मर जाती और तुम दोनो पति-पत्नी गिरफ्तार कर लिये जाते। जानते ना हो। औरत की बुद्धि दूर तक नही देखती। तुम तो मद-मानुष हो सोचकर चलत। औरत पर लाठी क्या उठायी किसी मद पर उठाते। बूढे हो गये बदले नही।

आश्चय चौधरी रामदास तब भी चुप था। वह सिर झुकाए बैठा था।

घर मे से एक औरत बाहर आइ और बोली—ऐसा होता है, औरत का दिल, अब चौधरन बैठी रो रही है। कहती है, 'सब मेरा अपराध था। उसने कहा—औरत की जात ही ऐसी होती है। अपना हो या

पराया, बुराई करने से नही चूकती। यह चौधरन भी अपनी बहू का नही समझती। अब जगराम के अहाते मे औरतें कीर्तन करने लगी हैं। सौ-पचास औरतें आ जाती हैं। तो वहा भी राम-नाम के साथ, एक-दूसरे पर कीचड उछाली जाती है। उसकी बेटी ऐसे रहती है, और उसकी बहू ऐसे बस यही पुराण वहाँ बाचा जाता है। पहले मंदिर पर कीर्तन होता था, तो वहा दस आदमी आ बैठते थे। इशारेबाजी करते थे। तभी तो वहाँ से हटाकर दूसरी जगह रखा गया। समाज बेशर्म हो गया है, शांति से औरत को नही रहने देता।'

पास खड़ा एक व्यक्ति बोला—'चाची, उस कीर्तन में भी आशिकाना गजलें और कव्वालियाँ होती हैं। जवान लडकियाँ फिल्मी कलाकारों की तरह नाचती हैं।'

'हां, हां, यह भी चल पडा है, भया! जगराम चौधरी की बैठक मे टी० वी० लग गया है। उसके परदे पर औरतें जिस प्रकार का नंगा नाच नाचती हैं, वह सब गाँव की जवान लडकियाँ और बहुए देखती हैं।'

'अरे, खाक पडे उस टी० वी० पर। जितना व्यभिचार और भ्रष्टाचार बाकी रह गया है, वह टी० वी० फैला देगा। सरकार रुपया कमाती है और समाज की बहू-बेटियों का चरित्र जाता है। भला क्या मिलता है इस टी० वी से?'

तब कहा गया—'चाची, टी० वी कुछ तो देता है। ज्ञानवर्द्धन करता है। मनोरंजन देता है।'

'यू कहना, टी० वी० बनाने वाले कारखाने रुपया कमाते हैं और सरकार विज्ञापनों से रुपया प्राप्त करती है। मैं भी कई बार देख आई हू, उस टी० वी के प्रोग्रामों को। अब तो गांव मे दूसरे भी लगाना चाहते है। लडकी के विवाह मे टी० वी० जरूर दिया जायेगा। लडका भी अपने विवाह मे टी० वी० प्राप्त करेगा।'

'अब हवा का रुख दूसरा है, चाची! पहली बात गयी।

सब एक एक कर उस घर से पलायन कर गये। तभी पडोस के एक लडके को देखकर चौधरी बोला—'जा, चिलम भर ला। जहा दूध गरम होता है, वहीं पर तम्बाखू होगा।'

लडका चिलम लकर चला गया। तभी चौधरी न साँस भरी—'इस महत हैं, दोनो बलवान है। अब क्या हो जाय, पता नही ? मैं भी मूख बन गया, लाठी चला बठा सचमुच

चौधरी का सिर चकरा गया। आखो म अधेरा छा गया। सामने गुलमोहर और नीम का पड खडा था। दोनो बहार पर थे। गुलमोहर पर लाल लाल खुशनुमा फूल खिले थ और नीम पर ताजी निबा लिया, उस पर भी फूल आ रहे थे। किसी समय डाक्टर न चौधरी को बताया था कि नीम के फूल की सब्जी बनाकर खाय जा सकत हैं। स्वास्थ्यप्रद रहते है। खून साफ करत हैं।

लडका चिलम भर भर ल आया। जब चौधरी हुक्का पीन लगा, तो पडौस की रामप्यारी बुढिया बाहर आई और बोली—'अर तू यहा बठा हुक्का बजाता है। घर मे जा। सास बहू को समझा। अब दोनो रो रही है। सास अपना अपराध मान रही ह। लेकिन बहू कहती है, न, अम्मा! दोष मेरा था। मुझे सब-कुछ नही कहना था।'

चौधरी रामदास न तम्बाखू का धुआ मुह से बाहर निकाला और बोला—'चाची, उन दोनो को अकेली छोड दो। जहरीला पानी आखो के रास्ते निकल जायेगा। दोनो स्वय शान्त हो जायेंगी। मलखू की मा बहू पर कीचड उछालती है। मैंने भी एक-दो जगह सुना है। और मैं कहता हू, बहू देवी है। ऐसी औरत हजारो मे नही मिलेगी। इसकी होती तो अब तक भाग जाती। मेरे मुह पर कालिस का पोता फेर जाती। लेकिन यह सुखिया बहू तो गऊ है, सती-साध्वी है। इतने दिन म कई किताबें पढ चुकी है। सिलाई मे कई तरह के कपडे तैयार कर देती है। कुछ दिन म कसाई भी सीख लेगी।'

'हा, हा, तेरी बहू भली है। बस समझ ल तेरे घर म देवी आकर बैठी है।

चाची अब तो घर का सभी काम बहू करती है। भैंस का चारा-दाना भी देखती ह। सुबह को नौकर खेत पर जाता है तो उसे रोटी बनाकर देती है। फिर दो वक्त घर का खाना बनाती है। मलखू की मा तो अब कुछ नही कर पाती। मलखू क्या मरा वह भी मर गयी। कमर

टूट गयी।'

'हा, भया ! वह मा है। उसका जवान बेटा गया है।

रामदास बोला—'लेकिन बहू का तो सोहाग छिना है। उसका जीवन-साथी गया है। उसका ता जन्म-भर का रोना है।'

बुढ़ा ने सास भरी और उस मकान के चबूतरे से उतर गयी।

जब रामदास अकेला रह गया, तो वह देखने लगा भैंस खडी है। उसकी ओर म चारा नहीं। एक घण्टे बाद ही उससे दूध लिया जायेगा तभी नौकर चारा सिर पर रखे जगल से लौटा। चौधरी ने उसकी ओर देखकर कहा—'सरजू भैंस के आगे चारा डाल दे। भूखी खडी है। और उससे पूछा—'कटाई कब शुरू होगी, गेहू की ?'

सरजू बोला—'अभी तो एक सप्ताह चलेगा। अभी पकने म देर है।'

चौधरी बोला—अब तेरा काम बढ गया है। रात को एक दो चक्कर लगा आया कर। गाव म सौ दुश्मन है, सौ दोस्त ! सुना है, किसी ने रामभजन का खेत काट लिया।'

'हा चौधरी ! खेत भी काटा और मशीन से अनाज भी निकाल लिया।

'यह पता नहीं चला कि किसका काम था ?'

'अजी, पता तो सब चल गया। और कौन होता, छोटा भाइ था। वह पिछले साल ही अलग हुआ था। शराबी है, जुआरी है। अलग होकर भी बड़े भाई को सताता है।'

'बडा भाई भला है। भजनानन्दी है। जब देखो तब मन्दिर पर बैठा मिलता है।'

'हा, चौधरी। वह तो देवता है। अब भी छोटे भाई के बच्चे उसी के पास खाते हैं, सोते है। सरजू बोला—'छोटे भाई की बहू लडाका है। फिर भी बडा भाई इतना उदार है कि पिछले दिनो छोटा भाई पुलिस ने जब गिरफ्तार किया, तो बडा भाई थाने म गया था। छुडा लाया। अपराध इतना था कि जुआ खेलते पकडा गया। सुनता हू, बडे भाई के पैर पकडकर कसम खा बैठा है, न जुआ खेलेगा, न शराब पीयेगा।

अरे, सरजू ! यह शराब डायन है। जिसके मुह लगी, उसे चौपट कर बैठी। जुआ भी ऐसा ही रोग हैं। तपदिक है।'

'सरजू बोला नही। वह भैंस को चारा डालने आगे बढ गया। जब वह घर मे से बाहर आया, तो बोला—'बहूरानी खाने के लिये बुलाती है। जाओ घर मे।

चौधरी रामदास बोला नही। वह लाठी पकडकर घर के चबूतरे से नीचे उतर गया। सरजू से कह दिया, अभी भूख नही। यदि घर पर जाकर बैठूगा। सुनता हू, कोई व्यक्ति आया है। अच्छी कथा कहता है। आज दिमाग खराब हो गया, वहा जाकर थोडी शाति पाऊगा। वह लाठी हाथ मे पकडे आगे बढ गया।

11

उन दिनो सुखिया के मन मे बार-बार यह बात उठती थी कि जोरावर बहुत दिनो से नही आया। कई मास हो गये थे कि बच्चा सुखिया की देख रेख मे पल रहा था। मानो वह उसी का बच्चा था। आश्चर्य की बात यह थी कि न तो सुखिया ने और ना ही उसकी सास यशोदा ने जोरावर की मा से इस बात का उल्लेख किया कि जो बच्चा उनके घर आ गया है वह जोरावर से प्राप्त हुआ है। किन्तु जोरावर ने बच्चा देने के साथ जो पत्र सुखिया को दिया था, वह मानो जोरावर के चरित्र का तो वर्णन करता ही था, बच्चे के निकास का इतिहास भी बताता था। सुखिया के नाम लिखे पत्र मे जोरावर ने व्यक्त किया था यह बच्चा मेरा है। मेरी प्रेमिका का है। हम दोनो ने मन्दिर मे बैठकर विवाह कर लिया था। किन्तु इस बच्चे के प्रसव मे वह मालती नही रही। डाक्टरो ने उसे बचाने की चेष्टा की परन्तु वह रुकी नही, चली गयी।

जोरावर ने बताया, मुझे चिन्ता है कि इस बच्चे का पोषण कैसे हो? तुम्हारे अतिरिक्त मेरा कोई विश्वासी नही। पुलिस का घेरा भी

अब सख्त हो गया है। मालती चाहती थी कि मैं डाकू का पेशा छोड़ दूं। अब मुझे उसकी स्मृति जीवित रखनी है, तो इस पथ से दूर हो जाऊंगा। या तो साधु बनूंगा या पुलिस के समक्ष आत्म समर्पण कर दूंगा।

पत्र में, जोरावर ने यह लिखना भी अनुपयुक्त नहीं समझा कि वह मुखिया का मन से आदर करता आया है। उसे अपना जीवन अर्पित कर सकता है। जब मुखिया ने पत्र का वह अंश पढ़ा, तो वह अनायास ही अपने मन के भावनालोक में खो गयी। उस समय वह इस बात को नहीं छुपा सकी कि वह स्वतः ही, जोरावर को अपना हितू मान बैठी थी। भले ही, उसे अपना प्रेमी न माना हो, किन्तु अपने प्राणों की अनुभूति, ममता अनायास ही जोरावर को अर्पित कर चुकी थी। मुखिया को पता था कि जोरावर डाकू तो बना, परन्तु संस्कारगत मन में पैठी हुई पुनीत भावना वह नहीं त्याग सका था। वह अनेक रातों में छुपकर मुखिया के पास आया और देर तक उसके पास बैठकर एक बच्चे के समान कहने में समर्थ बना था कि परिस्थिति ने मुझे डाकू और क्रूर बनाया, लेकिन, मेरे मानस का स्वरूप नहीं बदला। मैं तुम्हारे पास आकर एक अजीब प्रकार की अनुभूति प्राप्त करता हूं, भाभी! मलखू भैया सा गया, परन्तु तुम्हारे पास बैठकर भी, लगता है मैं जीवन की पुनीत और शुभ भावना का स्वरूप देख पाता हूं। उससे मैं नया जीवन प्राप्त करता हूं। तभी, मुखिया कहती, तो बताओ न, मैं क्या करूं तुम्हारे लिये? मैं पास बैठी हूं। अर्पित हूं।'

किन्तु जोरावर का एक ही मत था, तुम सदा फूलती-फलती रहो, मैं यही चाहता हूं। मैं तुम्हें पथ भ्रष्ट नहीं करूंगा, भाभी! जब-जब मैं परेशान बनता हूं, तभी तब, तुम्हारे पास आ जाता हूं। यहां बैठकर मैं नैसर्गिक सुख पाता हूं। लगता है, किन्तु सबसे बड़ी सम्पदा मुझे मिल चुकी है। मैं उसका उपभोग कर रहा हूं उसका स्वामी बना हूं।

तब आल्हादित होकर मुखिया [illegible] विपाहित हो उठती है [illegible] इस सम्पदा के स्वामी बन [illegible]। तुम इसे पा सकते हो।

किन्तु उस पत्र में जोरावर ने अपनी मानसिक स्थिति को

दिया था—'भाभी मालती नाम की जिस तरुणी से मैंने रात के सन्नाटे मे देवता के समक्ष उसे वरण करने की प्रतिज्ञा की थी, यह सब तभी हुआ कि जब मैं तुम्हारी दुनिया में खो गया था। मुझे लगा, मुझे एक औरत चाहिए। ऐसा न हुआ, तो मैं अपनी कमजोरी तुम्हारे समक्ष पटक दूंगा। मैं तुम्हें अपना सहारा मानकर पकड़ लूंगा। और उसने बताया, मालती से मेरा दूर का सम्बन्ध था। उसके पास बैठकर मैं शांति पाता था। वह बड़ी सरल थी, सहृदय थी। मैंने उसे बता दिया था कि मैं डाकू हूं बर्बर और दुर्दान्त हूं। किन्तु वह इतना सुनकर भी, सदा मुस्कराती और कहती मैं तुम्हें क्रूर इन्सान नहीं रहने दूंगी। तुम्हारे हृदय की ममता किरोद किरोद कर बाहर निकालूंगी। मैं उसमें गोता मारूंगी। उसने ही मुझे विवश किया था कि मैं विवाह कर लूं। अपने नाम की छाप उस मालती के हृदय पर लगा हूं। मैं तेजी के साथ तुम्हारे रूप रस में डूब रहा था। कभी-कभी तो मुझे ऐसा लगता, जब जब तुम्हारे पास जाकर बैठता, तो मेरा अस्तित्व नगण्य बनता जा रहा था। इस पत्र से मैं तुम्हें इतना और बता दूं कि मालती गरीब घर की बेटी थी। मैंने उसे ठगा नहीं। उसे प्यार किया था, छला नहीं। मैं तो उसका कहीं अन्यत्र विवाह करा देने की बात सोच रहा था। परन्तु जब तुम्हारे समीप पहुंचा मैं वासना का दास बनने को उद्यत था तो तभी उस मालती को मैंने अपनी पत्नी बना लिया था। किन्तु खेद है। भगवान ने उसे इस धरती पर नहीं रहने दिया। अपने पास बुला लिया। मैंने उस मालती से तुम्हारा उल्लेख अनेक बार किया था। जब प्रसव काल में उसकी अवस्था बिगड़ी, तो तब उसने मेरा हाथ पकड़कर कहा था, मैं समझ गई, तुम उस दुखिया को भी प्यार करते हो। मेरा यह बच्चा उसी को सौंप देना। कह देना, वह विधवा बन गई है तो क्या एक बच्चे की माँ तो कहलायेगी। इस बच्चे को सहेज लेगी। उसी मालती का कथन मैं पूरा कर रहा हूं यह बच्चा तुम्हें सौंप रहा हूं अब आगे मेरी क्या स्थिति होगी, नहीं जानता। केवल इतना कह सकता हूं अब मैं डाकू का जघन्य कृत्य नहीं करूंगा। अपने हथियार गंगा में फेंक दूंगा। साथियों को विदा कर दूंगा।

सुखिया ने वह पत्र अनेक बार पढा और अपने बक्स के अन्दर सुरक्षित रूप से रख दिया। मानो वह एक कीमती दस्तावेज था। उसे देखकर सुखिया को आनन्द प्राप्त होता था। जिस दिन स्वसुर की लाठी से उसके सिर में चोट लगी, तो उस रात में भी सुखिया ने वह पत्र बक्स से निकालकर पढा था। अब यह स्पष्ट था कि वह जोरावर के लिए प्रतीक्षारत थी। उससे कुछ कहना चाहती थी, कुछ सुनना चाहती थी। उसकी कठिनाई यह थी कि जोरावर के विषय में वह किसी से भी कुछ नहीं कह पाती थी। न सास से, न जोरावर की मा से। किन्तु एक दिन सहसा पडोस की एक लडकी सुखिया के पास आई और चुपके से बोली, 'भाभी, आज शाम के झुरपुटे में तुम शेरू के कुए पर पहुच जाना। वहा जोरावर आएगा। तुमसे मिलेगा।

अकस्मात उस बात को सुन, सुखिया ने उस यौवनमयी लडकी की ओर देखा। मानो उसे समझना चाहा। जोरावर ने उसके द्वारा ही क्या सन्देशा भेजा, यह भ्रमक विचार भी उसके मस्तिष्क में बिजली की तरह कौंध गया। किन्तु लडकी ने स्वय ही सफाई दी—'भाभी, भया जोरावर हमारी बहुत मदद कर चुका है। तुम्हे तो शायद पता न हो मेरा पिता कई मास से बिस्तर पर पडा है। जोरावर ने बहुत सहायता दी, पिता के इलाज में। तभी तो अब वह खेत में काम कर पाता है। जोरावर हमारे घर कई कई दिन आकर ठहरता था। पुलिस को हम पर सन्देह नही हो सकता था। आज भी जोरावर खेत पर मिला था। उसने पिता से कह दिया था, मैं शेरू के कुए पर मलखू की बहू की प्रतीक्षा करूगा।

सहमी हुई सुखिया बोली—'वह यहाँ क्यो नही आया?'

लडकी ने कहा—'पुलिस निगाह रखती है उसके मकान पर।'

'लेकिन मा तो जानती है कि जोरावर मारा गया।'

'हा, भाभी! यह सब पुलिस ने प्रचारित किया था। जोरावर की शक्ल से मिलता एक मरा हुआ आदमी पुलिस ने जोरावर के नाम से प्रचारित किया था। जोरावर पर एक लाख का इनाम था, वह थानेदार ने और सिपाहियो ने मिलकर बाट लिया।' लडकी लौट गई।

उस समय सुखिया के मानस में एक अजीब प्रकार की हलचल आरभ

हो गई थी। जिस कुएं पर जोरावर ने उसे मिलन के लिए बुलाया था। वह गांव के बाहर था। घर से जाते समय वह अपनी सास से क्या कहेगी, यह भी उसकी समझ मे नही आ रहा था। बाहर चबूतरे पर स्वसुर बैठता है, वह भी रोकेगा। कहेगा, अंधेरे में कहां जा रही है। किन्तु इस आपदा से भले ही वह छुटकारा पा ले, लेकिन गांव के अन्य लोग तो उसे देखेंगे। कोई औरत मिली, तो वह भी टोकेगी। पुलिस को इस बात का पता है कि जोरावर जब अपने घर आता है, तो मेरे पास भी आता है।

मन की इसी ऊहापोह मे सुखिया ने दिन बिता दिया। जब सन्ध्या का झुरपुटा आया, तो उसने बच्चे को कन्धे से लगाया। यशोदा से कहा—'अम्मा, मैं एक के घर जा रही हूं। जल्दी लौट आऊंगी। वह चल पड़ी। संयोग से उस समय चौधरी रामदास चबूतरे पर नहीं था, मंदिर गया था। निर्बाध रूप से सुखिया शेरू के कुएं पर पहुंच गई। वहां पेड़ अधिक थे। दो-तीन ईख के खेत भी थे। जब सुखिया उस स्थान पर पहुंची, तो देखा, वहां कोई नही था। चारों ओर सन्नाटा था। सांय सांय करती हवा चल रही थी। उस अवस्था मे सुखिया बरबस ही सहम उठी। जब वह लौट चलने को उद्यत हुई, तो तभी, हाथ मे चिमटा और बढ़ी हुई दाढ़ी वाला व्यक्ति उसके समक्ष आ खड़ा हुआ। वह आते ही बोला— इस जोरावर का नमस्ते स्वीकार करो, भाभी! और वह मुस्कराता हुआ अधिक समीप आ गया।

सुखिया सहम भाव मे बोली—'तो तुम हो, जोरावर! दाढ़ी-सी बढा ली। सिर के बाल भी बढा लिए। हाथ मे चिमटा ले लिया। उसने अनेक निरपराध मारे हैं। उनका धन लूटा है। लेकिन तुम अपने को नहीं मार सकते। पुलिस के हाथों ।
बच्चा! देख तो यहां है। तुम मुझे सौंप
अब फला-फूलता यह तुम्हारा बच्चा ।
चलन की सीख दो। जब कुछ सम्भले
करतूतें बता देना इस
हैवान बना। हूँ भला

सहसा, जोरावर ने अपना चिमटा एक कुए की मुडेल पर बजाया और कहा—'भाभी अपने मन का यह गुस्सा मत निकालो। ऐसा तो तुमने बहुत बार कहा। अब मैं डाकू नही। खूनी नही। लुटेरा नही।'

तुरन्त ही सुखिया बोली—'तुम अब भी सब कुछ हो। देवता नही हो। नर राक्षस भले ही न हो, लेकिन अच्छे इन्सान भी नही हो। तुमने मेरा मन तो अपनी ओर खीचा ही, उस बेचारी गरीब मा-बाप की बेटी मालती को भी असमय मार दिया। भला उसने क्या देखा इस दुनिया मे ? जैसी आइ वैसी गई।'

लम्बी सास भरकर जोरावर बोला—'हाँ, भाभी ! म कसूरवार हू। गुनहगार हू। मालती की मौत का कारण मैं हू।'

तदनुरूप, सुखिया ने भी सास भरी और छोड दी। तभी वह बोली—'अब क्या है, तुम्हारे मन मे। क्या सन्यासी बनोगे ? ऐसे ही रहोगे। भला इस भेष म कब तक छुप रहोगे, यह तो तुम्हारा आत्मघात सरीखा कृत्य है। छल है, धोखा है।'

जोरावर बोला—'भाभी, मैं आत्महीन हू, पुलिस के हाथो म नही जाना चाहता हू।'

'और तुम्हे पता है, तुम पर सरकार ने जो इनाम घोषित किया था, वह पुलिस खा बैठी है। तुम्हे मरा हुआ घोषित कर दिया गया।'

'हा, भाभी ! मुझे उसका पता है।' उसने बताया कल ही मैं उस थानेदार से मिला था। विश्वास करो मेरी बात पर, उसने मेरे पैर पकड लिए। गिडगिडाकर बोला—'अभी मरे हुए बने रहो। समूचा थाना गिरफ्त मे आ जाएगा। सबको सजा होगी।'

'और तुम यह पाप कब तक छुपाये रहोगे ?'

'अधिक देर तक नही।' जोरावर बोला—'यह स्पष्ट है, आत्म समर्पण करने के बाद भी मैं जेल से बाहर नही रह सकूगा। लम्बी सजा पाऊगा। यह कह लो, फाँसी के तख्त से बच जाऊगा।'

सुखिया क्षुब्ध हो उठी—'तुम बुजदिल हो। तुम आदमी मार सकते हो, मर नही सकते।'

जोरावर कुछ और आगे बढ आया। उसने अपने झाने से पिस्तौल

निकाल लिया और उसे सुखिया के आगे करता हुआ बोला—'इमम वई गोलिया है। मुझ पर चला सकती हो।'

जी हा ! ममझ ली न कोमल और कमजार औरत ह। यह पिस्तौल नही चला सकती। और तुम्ह इसी पर नाज है। यह लोहे का टुकडा माथी वना है। इसी के बल पर तुमने लोगा का लूटा ह। उनका खून किया ह।' उसने तिरस्कार के साथ जोरावर की ओर दखा—'जब तुम डाकू थे तो मैं तुम्हें अपना प्यार दन को उत्सुक थी। क्योकि तुम जो कुछ थे। समाज के सामने थ। तुम अपनी करतूत छुपा नही सकते थे। परन्तु अब तुम डाकू ता रहे नही, इन्सान भी नही रहे। इस माधु वेष म अपन का धोखा दते हो समाज को दते हो। सबका वता दिया कि तुम जीवित नही, मर चुके हो। जबकि तुम निर्जीव नही। किसी के प्राणघातक नही, तो किसी के पोषक भी नही। कसी दु सह अवस्था है। यह तुम्हारी ! अब तुम मर्द नही नामर्द हो। कायर हो।

एकाएक जोरावर क्षुब्ध हो उठा—भाभी !'

भाभी ने कहा—'देखा, देवरजी ! मैंने भी तुम्हे प्यार किया था। एक दिन ! और मैं आज भी भ्रम मे नही, तुम भी मेरी ओर खिंच आए थे। मेरे रूप और यौवन पर मरने लग थे। आश्चय है कि मैंने तुम्हारे मन की उस अवस्था को अशुभ नही माना। तुमने जो रुपया दिया, वह भी मैंने सहष स्वीकारा था। हालाकि मैं उसे पाप मानती थी। इन्सान क खून म भी रुपया समझती थी। लेकिन तुम्हारी वह भावना, अनुभूति और समपण की भावना मेरी दृष्टि म छोटी नही थी। तुम कहत तो मैं तुम्हारे साथ उस घर से भाग आती। हो सकता है मैं भी डाकू बन जाती। डाकू की प्रेयसि कहलाती। कन्धे-स कन्धा मिलाकर चलती और बन्दूक चलाती। लेकिन अब देखती हू, तुम डर गए। अपने काले कारनामो से स्वय इतने प्रभावित हुए कि काप गए। सहम गए। उस रास्त स भटक गय। मर्द थे, तो पुलिस म लडकर मार जान या आत्मसमपण कर देन। उसन साम [illegible] क्या रहा जीवित रहोग। सहमे रहोग। अपने-आ[illegible] का यह नहीं वना सकाग कि तुम हा जो [illegible]

भेड़िया।

उस समय जोरावर का सिर झुका था। उसके सिर की जटाएं धरती से लग गई थी। दाढ़ी भी काफी बढ़ी थी। सुखिया बोली— 'लो अपने लाल को। इसे चूम लो। प्यार कर लो। इसीलिए तो तुम आए हो। इस बच्चे की ममता तुम्हें खींच लाई है। जाने कहां से आए हो तुम!' और उसने हाथ मे लिए झोले मे कुछ लड्डू निकाले और नमकीन मठरिया। वह सब जोरावर की ओर बढ़ाकर बोली—'मैं समझती तो थी कि तुम कभी न कभी जरूर आओगे। संयोग की बात है कि कल ही यह लड्डू और मठरी बनाए थे। तब भी मेरे मन मे तुम्हारा ध्यान आया था।

जोरावर बोला—'हां, भूख भी लगी है। आज सुबह से कुछ नही खाया। मुझे दूर से आना पड़ा है। जरूरी काम था। यह किताब रखो बैंक की है। इसमे मेरा रुपया जमा है। यह सब तुम्हारे नाम है। इस लड़के का नाम है। उस मालती का एक भाई था, राहुल। इसका नाम भी राहुल रखा है।'

सुखिया ने पूछा 'कितना रुपया है?'

'दो लाख।

'हे राम! इतना रुपया था तुम्हारे पास!'

हां, भाभी! रुपया तो और भी था। वह जहां-तहां दे दिया। जो लड़की तुम्हारे पास गई, उसके बाप को भी दस हजार रुपया दिया था। कई लड़कियों के विवाह मे रुपया लगा दिया। एक बार मलखू भैया ने मुझसे कहा था कि गरीब विद्यार्थियों की भी मदद करना जरूरी है। इसके नाम से एक ट्रस्ट है, उसके माध्यम से विद्यार्थियों की सहायता की जाती है। आज बताता [illegible] तुम्हें, मलखू भैया के मरने के बाद मैंने शराब पी। गोश्त नही खाया। मैं बाजार की किसी औरत के पास नहीं [illegible] पिछले वर्ष जितने डाके डाले, उनका सब रुपया धर्मार्थ [illegible] गया। पांच लाख रुपया मैंने प्राप्त किया था, उसमे से एक [illegible] अपने ऊपर व्यय नही किया। भैया मलखू की मौत ने मुझे [illegible] प्रदान किया था।

सुखिया मौन थी। गम्भीर भी। उसे लगा कि अनुपम व्यक्ति उसके समक्ष खड़ा था। वह अपने कृत्य का वर्णन कर रहा था। तभी सुखिया ने एक लड्डू आगे बढ़ाया और कहा— लो भाभी के हाथ से खा लो।'

जोरावर ने लड्डू खा लिया। तभी बोला—'मैं अब दूर जा रहा हूं भाभी! आया तो मिलूंगा। हिमालय की गोद में अनेक डाकू छुपे हैं। वे सभी सन्यासी हैं। त्यागी हैं। अब वे मानवता के अनुरागी हैं, अपने आपमें नहीं। मैं उसी टोली में जाकर मिलूंगा। उनसे पथ निर्देश करूंगा। और उसने नीचे झुककर सुखिया के पैर छू लिए और कहा— 'जो कुछ तुमने कहा, वह सब मेरे प्राणों में उतर गया। वह तुम्ही का कहना था किसी और को नहीं। अब जाऊंगा। नमस्ते!

सुखिया स्तब्ध थी। उसके देखते-देखते जोरावर अंधेरे पथ पर अदृश्य हो गया था। उसे लगा एक पुनीत मानव उससे दूर हो गया था

12

रघुनाथपुर गांव में जहां चार आदमी एक स्थान पर बैठ कर हुक्का पीते होते, अन्य चर्चाओं के साथ प्रायः चौधरी रामदास का नाम भी आ जाता। लोगों का मत था कि रामदास अपने बड़े पुत्र की मृत्यु से जितना दुःखी हुआ, तो उसी का यह परिणाम है कि अब न तो खेत-क्यारी की बात सोचता है, न घर गृहस्थी की। जब देखा, तब मन्दिर पर बैठा दिखायी देता है धर्म के नाम पर कभी एक पैसा भी खर्च नहीं करता था, परन्तु अब यदि ऐसा कोई आयोजन हो तो खुशी से चन्दा देता है लड़के की बहू को इतनी ढील दे दी कि वह अन्य घरों की बहुओं के समान घूंघट नहीं करती। सास की तरह वह भी आजाद है।

एक बार जब गांव की चौपाल पर इस प्रकार की बात चली, तो तभी उन प्रौढ़ व्यक्तियों के पास बैठे एक युवक ने कहा—'मलखू की बहू

अब गाव की औरतो का पथ-प्रदशन करती है। पिछले दिनो जब गाव मे आय समाज का जलसा हुआ, तो वह मुह खोले उपदेशको और साधु-सन्यासियो को भोजन करा रही थी। गाव की जवान लडकिया उसमे निर्देश पा रही थी।

तब एक अन्य व्यक्ति ने कहा—'ससुर तो मन्दिर पर जाता है। सनातन धर्मी बना है। एक घर म दो खेमे लगे है। बहू पूरब की तरफ जाती है, तो ससुर पश्चिम की तरफ। एक मूर्ति पूजा का खण्डन करती है और दूसरा उस पूजा का समथन।'

—तो कहा गया—'बाबा यह तो एक कची के दो फलक ह। गलत सस्कारो को दोना काटत है।'

एक वृद्ध व्यक्ति बोला—'मेरी रामदास चौधरी स बात हुई थी। वह भी सनातन धर्मियो की बहुत-सी बातें नही मानता, साधु सन्यासियो का महत्व नही देता। पिछले दिनो जिस साधु ने मन्दिर पर आकर धूनी जमायी थी, रामदास ने उसका विरोध किया था। उसन गाव के बहुत से युवको को सुलफा पीना सिखा दिया था। सुनन म तो यह भी आया कि वह शराब भी पीता था।'

उसी समय एक युवक बोला—'मैं एक सूचना देता हू, मलखू की बहू अब अपना स्कूल खोलेगी। सुनने मे आया है कि उसने कपडा सीन की मशीनें मगा ली हैं। कुछ किताबें भी आ गयी हैं। उसन घर घर जाकर अपने मिशन का प्रचार किया है। चौधरी रामदास के मकान मे एक बडा कमरा ह, उसमे क्लासें लगेंगी। अगले महीन श्री गणेश होगा। कोई सरकारी अफसर उद्घाटन करेगा। सरकार स भी कुछ रुपया मिलेगा।'

तब कहा गया—'और यह गाव का स्कूल? क्या बन्द हो जायगा? गाव के लोगो ने ही तो वह खोला था।'

'अजी, उसमे अब दरार पड चली है। जिन्होंने पहल खुशी स चन्दा दिया अब बन्द कर बैठे हैं। बेचारी अध्यापिका को कई मास का वेतन नही मिला। पता चला है, स्कूल का अध्यक्ष चौधरी विक्रमसिंह अपनी पुत्र-वधू का अध्यापन का काय देना चाहता है। उसके मन म लालच आ

गया है। सुना है, अध्यापिका स्कूल छोड़ गयी। वह गाव से पलायन कर गयी।'

ता यह वहा, चौधरी रामदास ने एक तीर से दो शिकार मार हैं। बहू भी काम से लग जायगी और चार पैसे की आमदनी का रास्ता भी खुल जायगा बडा चालाक है, यह आदमी।' एक अधेड आयु के आत्मा ने यह ताना मारा।

तभी दूसरा बोला—'मौजीराम, तुमने इस रामदास को अभी समझा नही। बडा कित्ती है, यह आदमी! जिन्दगी भर इसी तरह के चल से खेलता रहा।

किन्तु उस व्यक्ति से कहा गया— बाप की चालाकी के कारण ही लड़का चला गया। आप देखना, बहू भी हाथ से निकल जायेगी। पर्दा तो उसका उठ ही गया, अब मन का परदा बाकी है। वह भी किसी दिन उठ जायगा। गाव के जवान छोकरे रामदास की बहू को घूर घूर कर देखते है। वह कबूतरी किसी दिन भी किसी दूसरे की छतरी पर जाकर बैठ जायगी।

एक वृद्ध ने सास भरी—'यह तो होगा ही। मने ता आर्य समाज के जलसे मे उस बहू का रग-ढग देख लिया था। अब किसी के लिए लाज शम तो उसकी आखो म रही नही। जब देखो, खिलखिला कर हसती है, घट फट बातें करती है।

तभी वहा पर बैठा एक युवक तुनक उठा—'तुम भी कसी बातें करते हो, बाबा! क्या किसी जवान औरत का हसना या किसी गर से बात करना भी पाप है। चौधरी रामदास के लड़के की बहू गाव की शोभा हैं। उसने सिलाई का काम भी सीख लिया और पढने लिखने म भी अपने को पीछे नही रहने दिया। भला ऐसी कितनी औरतें है इस गाव मे?' उसी समय एक व्यक्ति बोला—'अच्छा जनादन, तू ही बता, आने वाले कल म यदि उस बहू ने कोई गलत कदम उठा दिया, तो क्या गाव के मुह पर कालिख नही लगेगी? चौधरी रामदास भी तब क्या जीवित रह पायगा? भैया, गाव के रीति रिवाज के साथ चलना ही ठीक है।

जनादन शहर के स्कूल में अध्यापक था। बी० ए० तक पढा था।

गांव म उस शास्त्रीजी कहकर पुकारा जाता था। बात सुनकर वह सहज भाव से मुस्कराया—'दुनिया बहुत आगे बढ गयी है बाबा! अब पीछे की ओर मत दखा। अभी बढो। जिसके कदम रुकेंगे, वह एक व्यक्ति हो, या एक जाति, पिछड जायगा। आगे बढती हुई भीड म दब जायेगा। मलखू की बहू न अच्छा रास्ता चुना ह। अब तो वह इतना आगे बढ आई कि पिछले दिनो औरतो की सभा म भाषण दे बठी थी। मैं तो वहा था नही, लेकिन मेरी मा बताती थी दवी स्वरूपा है, वह चौधरी के लडके की बहू। बोलती है, तो लगता है, जैसे झासी वाली रानी हो। मुह पर तेज है। वाणी मे जोश।'

उसी समय एक बुजुग वहा आये। प्रस्तुत वार्ता को न समयकर भी, उसन पूछा—'कैसी चर्चा चल रही है? क्या कोई नयी बात?'

एक न कहा—'अरे ताऊ! वह है न, चचा रामदास के लडके की बहू अब वह इस गाव की नेता बनने चली है। सुधार की बागडोर सम्भाल रही है।'

उस व्यक्ति ने अपना सफेद डाढी पर हाथ फेरा और कहा—'कोई-न कोई नेता तो होना ही चाहिए। सुनता हू, अब तो रामदास भी महाराज बनने चला है सौ चूहे खाय, बिलैया चली हज्ज को।

तभी ठहाका गूजा— वाह, ताऊ! तुमने तो आते ही बात का तोड कर दिया। ऐसे देखी जाती है, किसी इसान की तस्वीर।'

ताऊ अपनी प्रशस्ति सुनते ही, फूलकर कुप्पा हो गया। तुरन्त बोला—'भैया मैं तो और कुछ जानता नही, किसी दिन चौधरी रामदास मूड पकडकर रोयगा। किसी न कहा है न, कौआ चला हस की चाल बाप न मारी मेढकी, बेटा तीरन्दाज रामदास अपनी और पुरखो की बात भूल गया।'

किन्तु जनादन को उस बुजुग की बात पसन्द नही आई। वह तुरत बोला—'ताऊ, इस चौपाल पर यदि इसी तरह की बातें चलेंगी, तो एक दिन यहा विग्रह का अखाडा बन जायगा। लोग अपनी आंख का शहतीर तो देखते नहीं, दूसरे की आख का तिनका देखते हैं यह अच्छा नहीं। कोई यदि ठोकर खाकर गिरता ह, तो उसे सहारा दो, न कि उसकी कमर

पर लात जमा दो।'

'तुम शास्त्री हो, भया ! पढे लिखे हो । हम गवार भला क्या जाने।' वृद्ध चौधरी बोला—'लेकिन यह समझ लो, लीक म हटकर चलना भी अच्छा नही ।'

जनादन बोला— यह बात सब पर लागू नहीं । जिनर पास बुद्धि ह। शक्ति है, वे अपना रास्ता अलग भी बना लेत ह । ऐम अनक सुधारवादी इस देश मे हुए हैं—स्वामी दयानन्द ही को लो ! गाधी को लो । इस देश मे प्रत्यक प्रात म ऐसे महापुरुष पैदा हुए है । उन्होने देश को नया जीवन प्रदान किया ह। यह वैभवपूण विश्व इन्सान का बुद्धि का चमत्कार ह । इन्सान ही देवता है भगवान है ।' उसन कहा—'हमारे गाव म टी० वी० लगे हैं। रेडियो चलते ह । ट्रक्टर काम करत हैं। ट्यूवेल पानी दते ह । खेती म कितनी वद्धि हो गयी है । यह सब इन्सान की देन है ।'

एक व्यक्ति बोला—'यह शास्त्री बच्चा को पढाता है, आदमियो को भी पढाता है । इससे नही जीता जा सकता ।'

वद्ध साऊ बोला—'हा-हा, बहुत कुछ पढा है, इस शास्त्री ने। जमाना भी देखा है । हमारा क्या है, गवई गाव मे पडे हैं । काला अक्षर भस बराबर समझते हैं।' और उसन अपनी तरफ आगे हुक्के के नैचे को अपने मुह से लगा लिया । वह तम्बाखू का धुआ छोडकर जनादन की ओर देखता हुआ बोला— भैया, अब मै अस्सी वष का हो चला हूँ । देखता हू, गाँव म जो रीति रिवाज पहले थे, वे अब नहीं रहे। शराब पीकर नौजवान गलिहारा म घूमते है । जब पनघट पर जवान लडकिया पानी भरने जाती हैं, तो मनचले छोकरे भी वहा जाकर सीटिया बजाते है भद्दे गाने गाते हैं। यह भला क्यो है ? इस रफ्तार को काई रोक पाता है।

जनादन बोला—'यह गाव के समाज की सबस बडी कमजोरी का सबूत है। वे आवारा लडके आसमान स उतर कर नही आये, हमारे-तुम्हारे घरा के हैं । परन्तु जब मा बाप का उन पर काई प्रभाव नहीं, तो भला गाव का कोई आदमी किस तरह इस गन्द प्रवाह का रोक पायगा । साप के बिल म कोई हाथ नही देगा। हालत यह है, न तुम मेरी मत

चहो, न मैं तुम्हारी बहू । जैसा चलता है, उसे चलने दो ।' उसने कहा—'अभी तक तो ये शराबी और मजनू घरों के बाहर अवाजा कशी करते है, वह दिन दूर नही कि जब घरों में घुसकर उन लडकियों को पकडकर ले जायेंगे ।

एक व्यक्ति जो दूर से चुप बैठा था, अपने स्वर पर जोर देकर बोला—'यह आज भी हो रहा है । भले घरों की लडकिया खेतो पर नही जाती । किसान को अपना हल छोडकर, या दूसरा काम रोक कर रोटी खाने घर आना पडता है । दम घुट रहा है, इस गाव के वातावरण मे ।'

जनार्दन बोला— यह गन्दगी भले कहे जाने वाले घरों से आरम्भ होती है । वे लडके यह शैतानी करते है । चोर चोर मौसेरे भाई भला, कौन उन्हे रोके । उनके मा-बाप पुलिस पर प्रभाव रखते हैं, गाव पर रखते हैं । उनके पास पैसा है, चार साथी है ।'

बात गम्भीर हो चली थी । सबके मुह पर उदासी थी । जनार्दन की बात सुनकर एक-दूसरे का मुह देखने लगे थे ।

उसी समय सहसा सब चौंक उठे । एक आदमी वहा आया और अपने स्वर पर जोर देकर बोला—'तुम सब यहाँ हो । जाकर देखो चौधरी रामदास के घर पर गाव इकट्ठा है । पुलिस आयी है ।'

जनार्दन ने पूछा—'क्या हुआ ।'

'हुआ क्या, अब तो गाव-का गाव कमीना बन चला है । वह है ना, रणवीरसिंह का नवाबजादा, शराब पीये रामदास के घर पहुच गया । वहा चौधरी नही । उसकी घरवाली भी नही थी । मलखू की बहू थी । जाते ही उसका हाथ पकडा और बोला—'तू चल मेरे साथ, तुझे अपनी बनाउगा ।'

'अच्छा ! इतना कह बैठा, वह नालायक ।'

'अजी, इतना कह पाता, तो तब भी खैर थी । जब मलखू की बहू ने उसके मुह पर तमाचा मारा, तो वह छुरा मार बैठा । जब वह भागा, तो बहू ने पकड लिया । घर की दहलीज मे सुखिया ने उसे पटक दिया था । खून मे लथपथ थी । मगर उसकी छाती पर चढ बैठी ।

छीन लिया और नाम म भगार बहा—'याल, पान दू, तरा पट ! निवाल दू तरा प्राण—

वाह ! वाह ! उग्वम जनादन बोल उठा—'वह है, मदाना ओरत ?

उमस कहा गया—गश्त लगाती पुलिस उधर आ निकली। वह लडका पकड लिया गया। उसी समय रामदास भी आ गया। उसकी घरवाली भी जगल म लौट आई।'

सब लोग उठ चल। उधर ही बढ गय। जाकर देखा, तो सचमुच, गाव का गाव वहा एकत्र था। सब यह घर क आगन क चार म पडी थी। उसकी बाह म चाकू लगा था। काफी खून निकला। तब तक डाक्टर पट्टी बाध चुका था। दरोगा सुखिया का बयान ले रहा था। उसी स बध मे सुखिया न बताया, जब हमलावर घर म प्रविष्ठ हुआ, तो उसका दूसरा साथी बाहर खडा था। जब वह भागा, तो मैंन देख लिया था।

लकिन दरोगा के ममान, वहा पर एकत्र गाव क अय स्त्री-पुरुष भी चकित थे कि वह युवक सुखिया के रूप-यौवन पर भग्न हो, आसक्त हुआ हो, परन्तु उसका आक्रमण एक अय उद्देश्य के लिय था, वह व्यक्ति गाव के उस जमीदार ने भेजा था कि जिसने गाव म सवप्रथम नारी समाज के लिय सिलाई कढाई का स्कूल खोला था। उमी क बडे पुत्र ने प्रतिरोध व्यक्त करने के लिए सुखिया को निरस्त्र कर दना चाहा था। वस्तुत वह स्वय सुखिया क रूप का लालची था। एक-दा बार स्वय सुखिया से वह भी चुका था। परन्तु सुखिया न सदा ही उसक प्रति उपेक्षा दिखायी। उम तिरस्कृत भी किया उसी समय सुखिया का पता चल गया था कि वह नारी रूप का लाभी इतना कामाध बना कि स्कूल म आने वाली एसी अनेक नवयौवना थी कि जिह पाना वह अपना मानवाय धम मानता था। सुखिया न दरोगा को यह भी बताया कि स्कूल अध्यापिका न केवल त्याग-पत्र देकर उस स्कूल से पथक हुई, अपितु उसने सुखिया को यह सलाह दी थी, वह उस स्कूल म न आये। या तो अपना स्कूल खोल लो या घर बठ जाय।

उस समय चौधरी रामदास की मन स्थिति अत्यंत दुरूह थी। वह वृद्ध ता था, परन्तु उसकी नसो मे अभी खून था। वह चाहता था कि अभी उस जमीदार के घर जाय और उसके पुत्र को पकडकर लाठी से धुन दे। जब गाव के व्यक्ति लौट पडे, वह आक्रामक भी पुलिस द्वारा हथकडी डालकर थाने ले जाया गया, तो तभी एक व्यक्ति न रामदास के पास आकर कहा—'यह लडका तो व्यर्थ मे मारा गया, अपराध किसका था, सजा कौन पायेगा?'

रामदास तडप उठा—'मै ऐसा नही सोचता। यह लडका भी बचपाया है। शराब के साथ पैसा भी इस गाव मे खूब चलता है।

वह व्यक्ति बोला,—'चौधरी, मेरा कहा मानो ता अपनी बहू को रोक दो, स्कूल न चलाय। इस काण्ड की जड म तुम्हारी बहू का स्कूल खोलना है।'

तीखे स्वर म रामदास बोला—'कल को यह भी कहा जायगा कि मैं गाव छोड दू। इस तरह पाप और व्यभिचार के समक्ष अपना सिर झुका दू। रामदास मर जायेगा, लेकिन यह सब नही करेगा। मैं कमीना नही, कायर नही।

वह व्यक्ति चला गया। किन्तु जब रात आई, घरो मे दीये जले, तो तभी एक अन्य व्यक्ति वहा आया और पाँच हजार रुपये की गड्डी रामदास के सामन रख कर बोला—'चौधरी न दिया है, आज का मामला खत्म करने के लिए। उसने सुन तो लिया होगा, उसका लडका भी पुलिस न गिरफ्तार कर लिया।

रामदास ने नोटो की गड्डी उठायी और पास की नाली मे फेंककर कहा—'मैं थूकता हू, इन रुपयो पर! तुम एक लायक आदमी की पैरवी करने आये हो मनोहर! जाकर कह दो, रामदास अभी जीवित है ठण्डी लाश नहीं।'

उसी समय यशोदा घर म बाहर निकल आई। वह आगन्तुक की ओर देखकर बोली—तुम्हे नही आना चाहिए था, मनोहर! यह आग सुलगाई गई है। अब इसे जलने दो। समझने दो।'

मनोहर बोला—चाची, ये दो यार तबाह हो जायेंगे।'

चाची ने कहा—'अब मेरे पास क्या है ? लडका गया। दूसरा है, वह अभी बच्चा है।

किन्तु रामदास तमक उठा—'हमारे पास सब कुछ है। इस घर पर भगवान का हाथ है। अब मैं यही समझ पाया हू। आज मेरी बहू ने बहादुरी का काम किया। मैं उसे हृदय से शाबासी देता हू।

मनोहर बोला—'समूचे गाव मे तुम्हारी बहू की प्रशसा हो रही है। उसे वीरागना बताया जा रहा है।'

यशोदा बोली—पहले तो मैं भी इस स्कूल के खिलाफ थी। परन्तु अब स्कूल जरूर चलेगा। गाँव म गुण्डे पैदा हो गये ह, उनका भी सामना किया जायगा।

मनोहर बोला— चाची, तुम्हारी बहू अदालत म जाकर बयान दे, यह भी शुभ नही होगा।' वह उठा और नाली के पानी म पडे नोटो को उठा लाया।

चौधरी रामदास ने कहा— क्या शुभ ह और क्या अशुभ यह मुझे समझना ह। मेरी बहू ने उस बदमाश को छोड दिया, यह भी अच्छा नही किया। उसका पेट फाड देना था।

मनोहर कडवे भाव से मुस्कराया—चौधरी, घर बरबाद हो जाता। बहू ने बुद्धिमानी का काम किया। उस लडके को शर्म होगी, तो स्वय मर जायगा। गाव म मुह नहीं दिखायगा।' वह उस स्थान से चल दिया।

तभी यशोदा बोली—'क्या सोचा था क्या हो गया। अब मुझे मुकेश की चिन्ता है। वह अकेला है, नदी तट से आना है। नाव भी देर मे आती है।

चौधरी रामदास ने कहा—'यशोदा, अजी अब तो मैंने समझा है कि भगवान है। वह सबका रक्षक है और पालक है। तुम चिन्ता मत करो। वह नीली छतरी वाला सब देखता है।'

तब यशोदा बोली नहीं, घर में चली गयी।

इमानदारी से नहीं कर सकते । मन मोटा, [illegible] [illegible] नहीं । इससे पहला थानेदार कई लाख रुपये इस इलाके से [illegible] था । वह तो यह कहो, ऊंचे अफसरों तक उसकी शिकायत पहुंच गयी थी । इसलिए उसका तबादला किया गया था । डाके और चोरी [illegible] उन्हीं दिनों बढ़ी थी ।

उस समय यशोदा चुपचाप बैठी थी । जब पहले [illegible] की बात चली, तो उसने कहा—'वह दरोगा रिश्वतखोर तो था ही, व्यभिचारी भी था । इलाके की बहुत-सी बहू बेटियां उसके थाने में बरबाद हुई थीं ।' वह बोली—'किसी ने ठीक कहा है, वही छिनरे और वही डाकी से साथ जब रक्षक ही भक्षक बनें तब कैसे भला होगा । पुलिस ऐसी न हो, तो चोरी-डाके भी बन्द हो सकते हैं ।'

'ताई, पुलिस का हिस्सा तो थाने में पहुंच जाता है । एक युवती ने कहा—'वह जगना है न, पक्का चोर है रात में आवाज पड़ती है, उसके घर पर । वह थाने में जाता है और दरोगा की जेब में हाथ डाल आता है । अब वह दूर जाकर चोरी करता है । देखा नहीं, उसकी बहू कैसे ठाठ से रहती है ? पिछले दिनों उसके पड़ोस में विवाह था । मैं भी उधर गयी । देखकर चकित रह गयी, जगना की बहू गोरे या सांवली पहली औरतों में नाच रही थी । माथे पर पड़ा झूमर भी अपनी बहार दे रहा था ।'

एक औरत हंस पड़ी—'हराम का माल था—उड़ाव पास ! पति चोरी करके लाये और बस अपने को न सजाये, भला यह कैसे न होगा !'

एक एक कर औरतें उठ चली । सबसे पीछे जब एक बूढ़ी उठकर चलने लगी, तो वह मुखिया की ओर देखकर बोली—'बहू, जो बात चल पड़ी है, वह बढ़े नहीं । दो लड़ें तो दूसरे तमाशा देखते हैं । मुझे [illegible] है, विक्रम का लड़का गलती तो कर बैठा, लेकिन अब पछता रहा उसके दिल पर गम बैठ गया है । और-तो-और, बहू भी बाप के साथ गयी । उस घर में पैसा है ना तो उसका दुरुपयोग भी होता है । गलत आदमी है । बाप का पाप बेटा भोग रहा है । रात भी [illegible] घर आया था । शायद शराब पीकर और खाना

अपराधी बन है। पाप और पुण्य चुल्लू म लेकर पी

एक प्रौढा बोली—'हां, बहू ! तुम्हारी बात
कानून भी तो अपना काम करेगा। अपराधी को

दूसरी बोली—'कुछ और भी सुना !
हवालात म जमानत पर आ तो गया, परन्तु घर से
यह सुना जाता है कि उसकी बहू अपने बाप के
गयी इस घर म सडाद है, बदबू है। यहां रहते
स्वय आया और बेटी को ले गया। वह तो न
कहता था, मुझे पता नही था कि चौधरी
है। वह तो अपनी बेटी का न्यत्र विवाह
था।'

'अजी, ऐसा भी कही होता है। बार बार
औरत बाजारू नही जो एक को छोड दूसरे के

'हा हा, यह बात तो ह। परन्तु उम
भटरा रह ह। विरम का लडका थान म
ऊट जब तक पहाड के नीचे से नही
म जब पुलिस ने उसे हवालात म बन्द किया,
पीटा भी गया। थानेदार ने बहुत भद्दी बातें
पर गम बैठ गया। भय से ग्रस्त बना कमर
कभी चारपाई से उठकर चल देता ह।
है। उसकी छाती म भय और लज्जा का

राम ! राम ! इसे कहते ह मार
आती ह तो वह आधी के झोके की तरह
सुना है चौधरी ने दरोगा को मोटी रकम।
नही ली गयी। उसन चौधरी पर दया की,

'हा जी ! इसम क्या झूठ है। लडका
दरोगा है। सुना है बडा सख्त है। इस इलाके म
हटान के लिए इस नये दरोगा को यहा भेजा गया

'अजी वह नया खार गुण्डागर्दी हटायगा।

ईमानदारी से नहीं कर सकते। सब मोटा पैसा कमाते हैं, सुना नहीं पिछला थानेदार कई लाख रुपये इस इलाके से कमाकर गया था। वह तो यह कहो, ऊँचे अफसरों तक उसकी शिकायत पहुँच रही थी। इसलिए उसका तबादला किया गया था। डाके और चोरी [illegible] समय में [illegible] थीं।

उस समय यशोदा चुपचाप बैठी थी। जब पहले थानेदार की बात चली, तो उसने कहा—'वह दरोगा रिश्वतखोर तो था ही, व्यभिचारी भी था। इलाके की बहुत-सी बहू बेटियाँ उसने थाने में बुलायी थीं।' वह बोली—'किसी ने ठीक कहा है वही छिनाले और वही डोली के साथ जब रक्षक ही भक्षक बने तब कैसे भला होगा। पुलिस ईमानदार हो तो चोरी-डाके भी बन्द हो सकते हैं।

'ताई पुलिस का हिस्सा तो थाने में पहुँच जाता है। एक युवती ने कहा—'वह जगना है न, पक्का चोर है रात में आवाज पड़ती है, उसके घर पर। वह थाने में जाता है और दरोगा की जेब में रुपये डाल आता है। अब वह दूर जाकर चोरी करता है। देखा नहीं, उसकी बहू कैसे ठाठ से रहती है? पिछले दिनों उसके पड़ोस में विवाह था। मैं भी उधर गयी। देखकर चकित रह गयी, जगना की बहू सोने की तगड़ी पहन औरतों में नाच रही थी। माथे पर पड़ा झूमर भी अपनी बहार दे रहा था।

एक औरत हँस पड़ी—'हराम का माल था—उसके पास। पति चोरी करके लाये और बस अपने को न सजाये, भला यह कैसे न होगा।'

एक एक कर औरतें उठ चलीं। सबसे पीछे जब एक बूढ़ी उठकर चलने लगी, तो वह मुखिया की ओर देखकर बोली—'बहू, जो बात चल पड़ी है, वह बढ़े नहीं। दो लड़ें, तो दूसरे तमाशा देखते हैं। मुझे लगता है, विक्रम का लड़का गलती तो कर बैठा, लेकिन अब पछता रहा है उसके दिल पर गम बैठ गया है। और-तो-और बहू भी बाप के साथ चली गयी। उस घर में पैसा है ना तो उसका दुरुपयोग भी होता है। विक्रम स्वयं गलत आदमी है। बाप का पाप बेटा भोग रहा है। रात भी छोटा थानेदार उसके घर आया था। शायद शराब पीकर और खाना

ग्रावर गया था । बडा थानेदार अभी नया है । वह किसी बडे बाप का नदा है । वही कुछ खाता-पीता नही ।'

मुखिया ने कहा—'वह ईमानदार है, भला आदमी है । छोट दरोगा ने रुपया खाया है, बडे ने नही । वह रिश्वत लेना पाप मानता है ।'

लेकिन बहू, तू औरतजात है । आदमी की तरह ' थप्पड का जवाब घूसा, ऐसा मत समझना । तू तो दया, ममता ही इस गाव का देना । आज लोग तेरी तारीफ करते हैं ।'

यशोदा बोली— चाची यह बहू ता खुद कहती है, झगडा मिटाना चाहिए बढाना नही । कल बडा दरोगा आया था । कहता था, किसी स डरना नही । अपना बयान खुलकर देना । अपराधी को अपराधी बताना । इस गाव म जहर फैला है, उसे मिटाना जरूरी है ।

वृद्धा न कहा—'पुलिस तो अपना मुकदमा बनाती है, उसे बिगाडती नही । वह दरोगा तो यहा आज है कल नही । कभी भी दूसरी जगह चला जायेगा । देखती हो, कितन मुकद्दमेबाज पदा हो गय ह इस गाव म । घर-के घर बरबाद हो गये । गाव का पसा शहर के वकीलो की जेब म जाता है या पुलिस क पास । कोई न शकर म खा पाता ह, न पहन पाता है । गाव के आधे घर कर्जदार बन हैं साहूकार के ।

यशोदा ने सास भरी—'हा बुरा हाल है इस गाव का ! घर घर म आग सुलगी ह ।

वृद्धा लौट गयी । यशोदा भी घर के काम म लग गयी । उन दिना उस अधिक व्यस्त रहना पडता था, उस समय चौधरी रामदास खेत पर गया था । गेहू की कटाई शुरू हो गयी थी । जब वह लौटा तो तब तक यशोदा न रोटी बनाकर रख दी थी । उसी समय मुखिया न यशोदा का आवाज दी । जब वह निकट पहुची, ता मुखिया बाली— अम्मा, नर्मदा नाई की बात तुमन भी सुनी ! मैं समझती हू, बहुत अच्छी बात कह गयी, ताई ! जैसी पकी उमर है उसकी, वस ही विचार ह । आज सुबह रामवती आयी थी । वह भी बताती थी कि विक्रम चौधरी का लडका नयमात सा बना ही निर्मा रोग म ग्रस्त बना है । शराब न उस मौत क मुह म झोक दिया है । खून की उल्टी कर रहा है ।

आतुर बनकर यशोदा बोली—'तो तेरा दोष क्या है। तुझे क्या करना है?'

सुनकर सुखिया चुप रह गयी। उसी समय रामदास घर में आया। मास-बहू को बात करती देख, वह पास जाकर बोला—'क्या बात है? यशोदा! बहू की कैसी तबियत है। आज मैंने शहर से कुछ फल मंगाये हैं अनार, सन्तरे! यह बहू को देना।'

यशोदा बोली—'अजी तुम्हारी बहू को तो आज एक और रोग लगा है। विक्रम का लड़का बीमार है ना, तो इसे चिन्ता है, उसके जीवन की! चलो पूछो इससे, तुम्हें क्या? मरे तो, जियें तो। जो जैसा करेगा, भोगेगा। हमारे घर का तो वह सत्यानाश करने पर तुला था। बाप के पास हराम का पैसा है। बड़ी जायदाद है। बाप बेटे की आखें आसमान की ओर उठी हैं। उन्हें क्या जरूरत है धरती की ओर देखने की। कौन पीड़ित है, कौन दुःखी है, कौन भूखा है, कौन नंगा है, विक्रम और उसका बेटा—यह सब नहीं देख पाएंगे।'

चौधरी ने सांस भरी—'हां, मसखू की मां, यह पैसा जहां पुण्य है, पाप भी है। यह इन्सान को भरमाता है, रास्ते से दूर फेंक देता है। उसने कहा—अभी खेत पर शम्भूनाथ मिला था। भला आदमी है। पढ़ा लिखा है।' उसने भी मुझसे कहा—'झगड़ा बढ़ाना मत, घटाने का प्रयत्न करना।' उसने बताया—'विक्रम अभी तक किसी चक्कर में नहीं फंसा था। अब लड़के की मूर्खता के कारण फंस गया है। बात इतनी बढ़ी कि लड़के को बहू पर छोड़ गया। उसका पिता ऊंचे विचारों का आदमी है। पैसे वाला है।'

तभी यशोदा आतुर हो उठी—'मूल बात करो, क्या कहता था शम्भूनाथ!'

रामदास स्वयं विचलित हो उठा—'कहता था, दरोगा से मिलकर मामले को खत्म करा दो। विक्रम चौधरी के लड़के को अभयदान दो।' उसने कहा—'भला यह कैसे होगा? थूककर नहीं चाटा जाता। जब हमारी बहू पर घातक प्रहार हुआ, तो भला हम किस प्रकार चुप बैठे रहें। मुझे थप्पड़ का जवाब घूंसे से देना होगा। मैं विक्रम को दिन में

आसमान के तारे दिखा दूंगा।

'अच्छा अच्छा, अब तुम स्नान कर लो। रोटी तयार है।' यशोदा ने कहा—'यह आदमी सदा ऐसी ही बात करता आया है। रात बाल बाल मेरी भैंस बच गयी थी। दो आदमी भैंस के पास आकर खड़े थे। वह तो यह कहो उसी समय मेरी आंख खुल गयी। बाहर गयी। मुझे देखते ही वे नौ दो ग्यारह हो गये। वह शम्भू है न, आज सुबह ही मुझसे आकर कह रहा था चाची विक्रम बूढ़ा तो हो गया परन्तु उसके दांतो का जहर अभी नही गया। अपनी बैठक में बैठा कह रहा था, रामदास का घर बरबाद कर दूंगा बता दूंगा उस बड़ का, बड़ी तीसमार खां बनी है। उसका भी नाम निशान नहीं रहेगा

तुरन्त ही चौधरी तेज हो उठा 'हां हां मैं सब जानता हूं। वह अपनी बैठक में बैठकर क्या कहता है। उसे सुन लेता हूं। लेकिन इस समय वह प्रतिशोध लेने की बात नही सोच रहा। उसकी औरत रात दिन परेशान रहती है, अपने लड़के की हालत देखकर। कल ही बाहर से डाक्टर आया था। विक्रम भी याचक बना है, अपने लड़के के प्राणों के लिए। उसका दस हजार रुपया खर्च हो चुका है।' वह सुखिया के कमरे से बाहर निकल गया। यशोदा भी दूसरी ओर बढ़ गयी।

उसी समय, सुखिया चुपचाप अपने बिस्तर से उठी और चादर ओढ़ कर घर से बाहर निकल गयी। जब देर बाद यशोदा उसके कमरे में गयी, तो देखकर चकित हो उठी कि सुखिया की चारपाई खाली पड़ी थी। उसी क्षण वह पुकार उठी—'अरे मलखू के चाचा!'

'क्या है?' चौधरी पुनः कमरे की ओर बढ़ आया—'क्या कहती है तू!'

यह देखो! खाली पड़ी है यह चारपाई। जाने कहां गयी है, यह बहू! यह हमें कहीं का न रखेगी। जीते-जी मार देगी। यह नागन है हम पर का डस लेगी।'

चौधरी हतप्रभ हो उठा। वह स्वयं खिन्न बनकर बोला— भाग्य वान शांत बन! बिगड़ी बात को और मत बिगड़ने दे। अपने साथ मेरा बुढ़ापा आग की भट्टी में मत झोंक दे।

यशोदा बोली—'मुझे लगता है वह विक्रम के घर की तरफ गयी होगी। तुम बैठो मैं जाती हू।'

'नही, मैं जाऊगा। वहा गयी तो उसका सिर फोड दूगा।

'हा-हा, तुम तो यही करोगे। सिर तोड सकते हो, मोड नही सकते।' वह चल पडी। चौधरी रामदास भी लाठी पकडकर पीछे हो लिया। घर दूर नही था, पास था। दोनो उस भवन मे प्रवेश कर गये। चौधरी के मन मे क्रोध था। उसके हाथ काप रहे थे। पैर भी भारी पड रहे थे। किन्तु जब दोनो उस भवन मे पहुचे, तो चौधरी रामदास के हाथ से लाठी छूट गयी। वह चकित हो उठा। यशोदा के साथ उसने भी देखा। विक्रम का पुत्र सजय पलग छोडकर नीचे धरती पर बैठा था। उसने मुखिया के पैर पकड लिए थे और रो पडा था। आश्चर्य! उस समय मुखिया भी अपने मन का उद्वेग नही रोक पायी। वह भी रो पडी थी। विक्रम और उसकी पत्नी पत्थर की मूर्ति के समान एकटक उस करुण दृश्य को देख रहे थे। सजय कह रहा था। 'मैं अपराधी हू। मुझे दण्ड दो। मुझे मार दो।' और मुखिया उसके सिर के बालो पर हाथ फेरती हुई फफक पडी थी। रोती हुई कह रही थी, 'उठो शान्त बनो। इन्सान भूलें करता है और अपने को सुधारता है।

उस समय मुखिया के सास ससुर भी मूर्तिवत बने खडे थे। मानो वे निरुपाय बन गये थे। अब? आखो मे आसू आ गये थे।

14

घर लौटकर जब मुखिया जब फिर बिस्तर पर पडी, तो वह नि शक्त हो चली थी। अपने स्वभाव के विपरीत बनकर यशोदा ने पास आकर कहा—यह तूने क्या किया बहू! औरत की सब मान मर्यादा त्याग दी।'

तभी रामदास भी घर मे आ गया। उसने यशोदा की बात सुन ली।

वह बोला—'इस बहू ने मर्यादा ही नहीं त्यागी, हमारी नाक भी काट दी। आज समूचे गाव में यह बात फैल गयी। अब औरत, मर्द अपने मुह की बात रोकेंगे नहीं, सबको सुनाकर कहेंगे, चौधरी रामदास के लड़के की विधवा बहू ने अपनी भी उतारी, सास-ससुर की भी उतार दी। उसने कहा—'मन में आता है इस औरत के टुकड़े कर दू। लाठी का एक ऐसा हाथ मारू कि इसके प्राण निकल जाए।'

उसी समय सुखिया ने अपने मुह का कपड़ा हटाया। वह रो रही थी। श्वसुर की बात सुनकर और अधिक फुफक पड़ी। उसी अवस्था में बोली—लो, मुझे मार दो। तुम मेरे श्वसुर हो, मेरे पिता हो, अपने आधे भार को खुलकर उपयोग करो। यही मौका है, तुमने। इस अन्याय की जिन्दगी में यही समझा है।

यशोदा पति के और समीप आ गयी – 'तुम जाओ यहा से ! झगड़ा मत बढाओ। देखते हो, विपत्ति की काली घटा इस घर पर छायी हुई है। विषाद का धुआ भरा है हमारे प्राणों में। यह बहू इस घर का सफाया कर देगी। मेरा लड़का तो चला ही गया, अब यह हम पर भी आग के अगारे छोडेगी।'

इतना सुनते ही सुखिया चीख उठी— अम्मा ! मुझ पर दया करो। मुझे अकेला छोड़ दो। अब मैं जीवन नहीं चाहती, मुझे शान्ति से मरने दो।'

उस समय रामदास कुछ और कहने चला था कि तभी गाव की दो तीन वृद्धाए वहा आयीं। उन्हीं में एक थी विक्रमसिंह की चाची। वह गाव की एक सम्माननीय महिला थी। वृद्धा थी। घर के आगन मे आते ही बोली— अरी, रामदास की बहू

'हा, चाची ! आओ। बैठो।

'कहा है तेरी बहू ! मैं भी तो देखू उसे। आज इसने कमाल कर दिया। चाची बोली— सुनती हू, तेरी बहू शक्ल-सूरत की अच्छी है और मन की भी अच्छी है। इस गवई-गाव की एक औरत गाव को जलन से बचा बैठी है मैं उसके चरणों में अपना सिर रखूगी।' उसने दूर खडे रामदास की ओर देखा—'आज तेरी बहू देवी स्वरूपा बनकर गयी थी,

विक्रम के घर पर। चार दिन मे सजय न आज कुछ खाया है। अब वह मरेगा नहीं, बच जायेगा। डाक्टर का कहना है, यही इलाज था उसका। अमृत दे आयी है।'

वृद्धा अन्य औरतो के साथ सुखिया की चारपाई के पास पहुच गयी। तब सुखिया न मुह पर कपडा डाल रखा था। तब भी उसकी आखे भरी थी। पास जाते ही यशोदा बोली—'अरी बहू पर छू इनके।'

किन्तु उस चाची ने कहा—'नही नही, पैर मुझे छूने चाहिए। कल ही तो मदिर पर कथा बाचता हुआ पडित कह रहा था, छोटी उम्र का आदमी या औरत कोई भली बात कहे या करे, तो उसका भी सम्मान करना चाहिए। उसके चरनो की रज माथे से लगानी चाहिए। वह बोली—'रामदास की बहू, तूने यह बहू क्या पाई हीरा पाया है। यह तेरी बेटी भी है, बेटा भी है। आज समूचा गाव इसकी तारीफ कर रहा है। अभी गाव मे बडा दरोगा आया है, तो वह भी कह रहा है, एक सामान्य किसान की औरत इतनी बुद्धिमान हो ऐसी कल्पना मैं नही कर सकता था।'

तभी रामदास बोला—'चाची, इसे वहा नही जाना था।

'क्या नही जाना था, रे! क्या इस गाव को जलने दिया जाता। तुम दो घरो मे झगडा चलता, तो गाव बैठ जाता। विक्रम का पैसा पानी की तरह बहता। और तू भी अपने खेत बेचने के लिए तैयार हो जाता। लोग राख का ढेर बना देते, इनके घरो को वाह, री बहू! शाबाश! भगवती आ बैठी थी, इसके मन म।'

उसी समय गाव के कुछ व्यक्ति भी वहाँ आये। वहा दरोगा भी आ गया। वे सब घर के आगन मे आ गय। वहा आते ही दरोगा बोला—'चौधरी रामदास! किसी जन्म के पुण्य प्रताप स तुम एसी बहू पा गय। तुम्हारे सब पाप धुल गये। बहू का उस घर जाना मानवीयता का सबसे शुभ उदाहरण है।' ऐसा पाठ मैंने कभी किताबो मे पढा था। सुना है तुम्हारी बहू कुछ अधिक नही पढ़ पायी। निपट गवार है।'

एक व्यक्ति बोला—'अजी कहा पढ पाती! बेचारी विवाह के कुछ समय बाद ही विधवा बन गयी। सास भी नही से पाई। जिन्दगी भर

बोझ सिर पर आ पड़ा है। सास-ससुर भी अब बूढ़े हो चले है। यह चौधरी रामदास अपने समय का बड़ा अच्छा सठन था। एक बार डाकुओ से अकेला लड़ा था। लेकिन अब क्या रहा, बूढ़ा हो गया। सिर के बाल सफेद हो गय, कमर झुक गयी।

दरोगा ने अपने बग से एक कागज निकाला और उस रामदास की ओर बढ़ाकर कहा—'इस पर हस्ताक्षर कर दो। तुम्हारा मुकदमा समाप्त कर दिया। जो लड़का जेल गया है वह भी आ जायेगा।

विक्रम की चाची बोली—'दरोगा जी, बहू को समझा दो। अब भी रो रही है। कहती है, सास-ससुर को उसकी बात अच्छी नही लगी।

दरोगा युवक था। चकित हो उठा—'ऐसा क्या। क्या चौधरी मुकद्दमा लड़ना चाहता था।' वह बोला—'पानी मे रहकर मगरमच्छ से बैर नही किया जाता, चौधरी! पुलिस का आदमी ऐसी बात करना नहीं चाहता। कागज तुम्हारे हाथ म है, दस्तखत न करना चाहो, तो मत करो। मुकद्दमा लड़ो। लेकिन यह समझ लो, तुम इस बुढ़ापे म अपनी दुर्गती करा बैठोगे। पता नही तुम्हारी बहू को किसने ऐसी सीख दी। जो बात इसने की वह अनमोल थी। उसकी कोई कीमत नही थी। अब विक्रमसिंह और उसका पुत्र सजय सिंह तुम्हारी बहू के सराहनीय गुलाम बन चुके है। उनका सिर झुका है। उन्होने समूचे गाव के समक्ष अपने को अपराधी स्वीकार किया है।'

रामदास ने एक व्यक्ति का कलम लिया और कागज पर दस्तखत कर दिया। तभी वह बोला—'अन्तत मैं गवार हू, दरोगा जी मेरी औरत भी गवार है। लेकिन अब मैं समझ गया, इस बहू ने गगा की धारा बन कर हम सबको पखार दिया सचमुच बड़ा उज्ज्वल चरित्र चित्रन हुआ है, इस बहू क माध्यम से।'

उसी समय मुखिया उठ बैठी। उसने ससुर के पैरों म झुककर कहा, 'पिताजी, मैं नही जानती किसकी प्रेरणा स म उस पर पहुच गयी। जरूर भगवान ने ही मुझे आदेश दिया था।'

दरोगा उस कमरे स बाहर निकल चुका था। मुखिया की बात सुनकर बोला—'बेशक! वह भगवान का निर्देश था। अब रोओ मत

बहू ! भगवान का नमन करो। उसने तुम्हें और इस घर को आग में जलने से उबार लिया। यदि ऐसा न होता, तो गांव में विग्रह फैलता। तुम्हारा और अधिक अपमान होता। पुलिस समाज में एक सीमा तक अपना अधिकार रखती है। वह जन-जन की दरबारी नहीं कर सकती। यहां नापदान के कीड़े उछलते। बदबू फैलाते। तुमने चमकते सूरज की तरह सब कुछ साफ कर दिया।'

उस समय देखा, चौधरी रामदास रो पड़ा था। उसकी पत्नी यशोदा भी अपनी बूढ़ी आंखों से खारी पानी बहा बैठी थी। देखकर, विक्रम की चाची ने कहा—'यह सब नहीं। अपनी दुर्बलता व्यक्त मत करो। शांत बनो। बहू को भी आराम दो।' और वह अन्य औरतों के साथ वहां से लौट पड़ी।

जब घर में एकांत हुआ, तो रामदास ने पत्नी की ओर देखकर कहा—'अब बहू के खाने-पीने की सुध ले। मुझे बुद्धि तो आई, लेकिन देर में आई। आज जाने क्या होने वाला था, इस घर में। या तो बहू न रहती, या मैं न रहता।'

यशोदा बोली—'तुम तो नाक पर गुस्सा रखते हो। बात को समझते नहीं।'

जी, हां ! तू समझती है। पानी में आग तो तू लगाती है। तूने ही मुझसे कहा था, बहू ने नाक कटा दी। अब कट गयी वो जोड़ ले। छोरा भी समझदार है। किसी अच्छे घर का लगता है।'

'अजी, यह कहो, आंधी आई थी, टल गयी। तुम बैठ जाओ। मैं दूध लाती हूं, बहू को अपने हाथ से पिलाकर बाहर जाना। अभी इसके मन में गुस्सा है। हम दोनों ने सभी कुछ तो कह डाला। न आगा देखा, न पीछा, तुमने लट्ठ-सा मार दिया। जाने मंदिर पर जाकर क्या सुनते हो, क्या समझते हो ?'

चौधरी बोला—'वहां कुछ नहीं मिलता, मलखू की मां का कोरा दिखावा है। अब मैं खेत पर काम तो कर नहीं सकता, समय बिताने मंदिर पर जा बैठता हूं। वहां लुच्चे-गुण्डे सभी को देख पाता हूं। जुल्फी छोकरे अब बहुत पहुंचते हैं। वहां औरतों का कीर्तन होता है।'

यशोदा सुनक उठी—'यान कीतन होता ह। जवान बहुए बन-सवर कर वहा जाती हैं। अब तो गाव मे लिपस्टिक-पाउडर भी चल पडा है। आखो पर काजल माथे पर बिन्दी पता नही, य बहूए किस यार को रिझान जाती हैं, उस मदिर पर! वहा पर बैठे जवान छोकरे भी ही ही और हा-हो करके हसते हैं। बेशम कही के।

वह दूध की हडिया से गिलास मे दूध ले आई। दूध म चीना घालती हुई बोली—'अब मुकेश भी आता होगा। वह अपनी भाभी के लिए सेब-सतरे लायेगा। आजकल अगूर भी आने लग ह। कुल दस रुपय दिय थ तो सब कुछ ल आयेगा।

चौधरी बाला—'आजकल दस रुपये म क्या आता है? बहुत को दस रुपये जाता ह और माल एक रुपय के बराबर नाम बडे और दशन छोटे

यशोदा दूध का गिलास कमरे म ल गयी। रामदास भी साथ था। वह गिलास को लेकर बाला—उठ बहू! दूध ले। आज मुझे भी गुस्सा आ गया। जाने क्या बक गया?'

'अच्छा, अच्छा, अब गडे मुर्दे मत उखाडो। बहू को दूध दो।

सुखिया बोली—'मेरी इच्छा नही, अम्मा!

'नही! बेटी! दूध पी!' यशोदा न उसे उठाकर बठी कर दिया। तभी रामदास ने गिलास उसके हाथा म दे दिया। जब वह बाहर जाने लगा तो बोला—'मलखू की मा, मेरी चिलम म आग रख देना। आज सुबह स तम्बाखू नही पी सका।

यशादा बोली—आज तो मैंने भी मुह म दाना नही डाला, पेट की आतें कुलबुला रही हैं। सुबह मुकेश को चार पराठे बना दिये थ एक रख लिया था राहुल क लिए। वह खा गया और खेलन चला गया।

रामदास बोला—वह कही नदी पर न चला जाये। एक बार भामराज का लडका नदी पर पहुच गया था। नाव म बठकर शहर जा पहुचा था। वह तो यह कहो, लोगो ने पहचान लिया कि किसका बच्चा है। आजकल नदी चढी है। बडे जानवर भी तर आते हैं।

यशादा बोली—एक बार मगरमच्छ दखा था। कुछ औरतो ने नदी

मे पैर रपत और नहात भी डर लगता ह ।'

रामदास बाहर जा बैठा। उसी सशोदा ने मुखिया के मूखे बालो पर हाथ फेर कर कहा—'बहू, आज सिर मे तैल लगाना। तू जरा भी ध्यान नही रखती, अपन शरीर का। देख ता, इसके घरो की बहुए किस तरह मन सवर कर रहती हैं।'

तुरन्त ही सुखिया बोल पडी—'मैं किसके लिए शृगार करूगी, मा! तुम्हारा बेटा ता गया। सम्बध तोड गया। वह सुदर पछी अब जाने किस डाल पर जाकर बठा होगा?

यशोदा ने सास भरी—'हा, बहू! अब वह पछी लौटकर नही आयेगा। भगवान का यह भी अजीब करिश्मा है। यहा जो भी आता है, नाटक के पात्र की तरह अपना खेल दिखा जाता है। जब जाता है तो लौटता नही। न मा का नाता याद रखता है, न बीबी-बच्चो का।'

मुखिया बोली—'अम्मा, मैं भी आजकल इसी प्रकार की बात सोचती हू। कभी-कभी ता मन म एसा वैराग्य आता है कि सब कुछ छाड कर कही भाग जाऊ। कही जाकर छुप जाऊ।'

यशोदा बोली—'कहा जायेगी बहू! कहा छुपोगी। उस भगवान की दृष्टि सब तरफ जाती है। चीटी से लेकर हाथी तक उसकी नजर मे रहत हैं।'

सुखिया बाली—'अम्मा वह मास्टरनी भी विधवा थी। उसका पति वेदान्ती था। विद्वान था। एक बार उसी मास्टरनी ने बताया था। जीवन की सान मदिरो मे नही मिलता, जन-सेवा मे मिलता है। नर-नारायण का दशन निधन और पीडित की झोपडी म किया जा सकता है।'

यशोदा ने सास भरी—'हा, बहू! सच यही है। मैं तुझे आज बताती हू, वह जगनदेई चमारी थी मा! जब उसका पति मर गया, तो वह मजदूरी करके अपना और बच्चो का पेट पालती थी। मेरे पास प्राय आती-जाती। कुछ काम कर जाती, कुछ ले जाती। पिछले दिनो जब वह दर तक नहीं दिखाई दी, तो एक दिन खेत से लौटती हुई मैं उसके घर जा पहुची। वहा देखकर, मेरे पैरो की माटी निकल गयी कि जगनदेई

खटिया पर पड़ी थी। बीमार पड़ी थी। बच्चे रो रहे थे। भूख से बिलबिला रहे थे। तब जाने क्या आया मेरे मन में, उसकी बड़ी लड़की को साथ ले आई। पाँच सेर अनाज दे दिया। आटा दे देती, वह था नहीं। उस दिन मेरे मन को बड़ी राहत मिली। ऐसा लगा, मैंने कोई शुभ काम किया था। दो दिन बाद ही सुना कि जगनदेई नहीं रही। वह मर गयी। तब मैं जाने किस प्रेरणावश उसके घर गयी। घर से कफन का कपड़ा ले गयी। वहाँ जाकर लोगों में वह आई। चिता के लिए मेरे घर से कपड़े ले आयें, लकड़ी ले आयें। बाद में सुना उसके बच्चे मामा ले गया। वह घर बन्द हो गया।

सुखिया ने कहा—'अम्मा, गरीबी का, दरिद्रता का और पीड़ा का कोई अन्त नहीं। मैंने गरीब घरों की लड़कियों को सिलाई का काम सिखाना है। किसी से कुछ लेना नहीं।'

उस समय यशोदा के मन में बात आई कि जब किसी से कुछ लेगा नहीं, तो काम कैसे चलेगा। परन्तु वह मन में उठी बात रोक गयी। वह फिर चूल्हे के पास पहुँच गयी। तभी सुखिया के मन में आया, सचमुच, एक तूफान आया था, इस घर पर, वह हट गया। मैंने भी नहीं समझा था कि छोटी-सी घटना कितना बड़ा काम करेगी वह चिंगारी दो घरों को तो फूंक ही देती, समूचे गाँव में आग लगा देती विक्रम मालदार है, गाँव का जमींदार है। गाँव के लोग उसका तो साथ देते ही, कुछ समझदार और नैतिक भावना के पोषक इस घर के भी मददगार बनते

उस समय आँगन की धूप चली गयी थी। अँधेरा आ चला था। तभी द्वार की ओर देखकर सुखिया चौंक उठी—'अरे, तुम तुम जोरावर '

और जोरावर तब उसके पास आ गया था।

15

जिस रहस्यपूर्ण ढग मे जोरावर उस घर मे प्रविष्ट हुआ, उसे देख कर मुखिया विस्मित भाव मे उसे देखने लगी थी। किन्तु पास आते ही, जोरावर बोला—'आज मन करता है कि तेरे चरणो मे अपना सिर झुका दू। ऐसा ज्ञान तूने कहा से पाया, यह देखकर भी चकित हू। तूने तो किसी बडे धर्मात्मा को मात कर दिया। आश्चर्य तो यह है कि खुद विक्रम तेरे सामने झुक जाने को विवश हो गया। वह तो बडा जल्लाद है, क्रूर भावो से भरा है। तेरे समक्ष इसका लडका भी ऐसा कायर बना, भयातुर हुआ, यह भी एक चमत्कार था।

मुखिया ने व्यस्त बनकर कहा—'यह सब छोड। यह पता, इस समय कैसे आया? अभी तो पुलिस गाव मे है। अभी तो रात भी नही आई, उजाला है।'

जोरावर बोला—'मुझे आना था। मा ने सदेशा भेजा था। उसके पास मेरा पता था। तेरे साथ जो कुछ हुआ, यह भी उस आदमी ने बताया, जो मेरे पास गया था। मैं तो विक्रम के पुत्र को समाप्त करने आया था।'

'दुष्ट कही का! तू व्यर्थ ही सन्यासी बना है। अपने को धोखा दे रहा है। तेरे मन का पशुभाव ही अभी ज्यो-का-त्यो बना है। गगा मे गोता तो मारा लेकिन मन का मैल नहीं धो पाया।'

उदास बनकर जोरावर बोला—'वह मैल इस जन्म मे साफ नही होगा। वह कलुष भाव बहुत गहरा है। मैंने बहुत खून किए हैं। इन्सान के खून की लाली अब मेरे दिल पर जम चुकी है।'

'ओह दुष्ट कहीं का!' मुखिया ने क्षुब्ध बनकर कहा — जब तेरा यह हाल है, तो मेरे पास आना व्यर्थ है। अपना दिया हुआ रुपया ले जा। अपना पुत्र भी सम्भाल। अब वह पैरो से चलता है। जब बाप डाकू है, तो बेटा भी पिशाच बनेगा, इन्सान नही। वह तेरी छाया है समझा।'

किन्तु जोरावर तीखी बात सुनकर भी, उदास बना था। मानो

कायर हो चुका था। उसने बड़े सहज भाव मे कहा—'आज तू मुझसे नाराज है, सुखिया भाभी !' उसने सास भरी—वह ले जा तुझे कहना है। यह तेरा अधिकार हैं। मैंने स्वय ही तेरे समक्ष आत्म समर्पण किया है। मैं तो मा का सदेश पाकर आया था। मा ने जिस आदमी को भेजा उसने सब कुछ बताया। जिस लड़के ने तुम्हारे छुरा मारा, मैं उसे भी जान से मार देने की बात सोच बैठा था। किन्तु मा ने जो कुछ बताया उससे मेरे मन के रोष पर घड़ो पानी पड गया। तू इतनी महान निकलेगी इतना सोचना मेरे लिए कठिन था। मा ने बताया, विक्रम के घर तुम्हारा जाना समूचे गाव की दृष्टि मे एक अलौकिक घटना थी। उससे विक्रम का पुत्र तो मौत के मुह से निकला ही, गाव मे आने वाली आधी भी रुक गयी। विक्रम इस घर को सही-सलामत नही रहने देता। मुझे मा ने बताया है कि संजय की बहू भी उस घर को छोड़कर चली गयी। वह भी अलौकिक नारी थी। उसकी आत्मा में बल था।

तभी सहसा, सुखिया ने कहा—'मैं उस नारी को अपना गुरु मानती हू। उसके त्याग की बात सुनकर ही, मैं उस घर जाने की बात सोच बैठी थी। मैंने सुन लिया था कि विक्रम का पुत्र शराबी और व्यसनी बनकर अपनी आत्मा का तेज खो बैठा था। पुलिस ने उसे पकडा और मारा भी तो वह अत्यधिक भयातुर हो उठा था। खून की उल्टी कर रहा था। सचमुच मौत ने उसका पैर पकड लिया था।

जोरावर उस समय अत्यधिक गम्भीर बना था। उसी अवस्था में बोला—'जब गाव का आदमी मेरे पास गया तो मैं हिमालय की तरफ जाने की तैयारी कर रहा था। कुछ देर बाद ही उस स्थान को छोड़ देता।

सुखिया ने कहा—'चलो यह अच्छा हुआ कि तुम आ गये। मिल गये। अब तुम अपने रास्ते की ओर देखो। इस सुखिया को और इस गाव को भूल जाओ। कर सकते हो, तो अपना कल्याण कर लो। देखो, आधा जीवन तो तुमने बरबाद कर लिया।

जोरावर कुछ और पास आ गया और बोला—'भाभी, अब तुमसे दूर जाने को मन नहीं करता।

तो छोड बैठा। अपने साथियों को भी छुट्टी दे दी, लेकिन मैं शान्त नही। मेरे मन का भय दूर नही। मन का कोलाहल परेशान करता है।'

वह भय तुम्हें खा जायगा।' सुखिया बोली—'पिछली बार तुमने कहा था कि हिमालय की कन्दराओं मे बहुत से खूखार डाकू छिपे है। वे भगवान का भजन करते हैं। मैं समझती हू, वे अब भी अपने जीवन को व्यर्थ खो रहे है। उन्होने पुलिस से और समाज से अपने को भले ही दूर कर लिया हो, लेकिन अपने मन मे मेरे पापो के बोझ से पृथक नही हुए। वही अवस्था तुम्हारी है। किये गये वीभत्स कर्म तुम्हे चैन नही लेने देंगे। तुम्हारे हृदय को छलनी बना देंगे। तुम जीवन भर अशान्त रहोगे। रात के अन्धेरे मे पहाड का पत्थर भी तुम्हे भरा देगा। वह भी तुम्हारा शत्रु दिखायी देगा।

'तो मैं क्या करूं भाभी! सचमुच मैं परेशान हू।

पत्थर के समान कठोर बनी सुखिया बोल पडी—'तुम्हारा एक ही मार्ग है। यदि तुम उस पर जा सकते हो, तो जाओ। तभी तुम निर्भय होगे।'

सहसा जोरावर बोल उठा—'वह कौन-सा मार्ग?

'आत्म समर्पण का मार्ग! निग्रह का मार्ग।'

बच्चे जोरावर तीव्र हो उठा—भाभी!

'हा, देवरजी! सुखिया के स्वर मे जैसे शहद घुला था—'तुम मुझे प्यार करते हो न। अपनी प्रेयसि बनाना चाहते हो। तो मैं ही तुमसे यह बात कह सकती हू। तुम्हारे रोग का उपचार यही है। यह जहर भी है और अमृत भी। कुदरत ने तुम्हारे समक्ष ये दोनो प्याले रख दिये हैं, जिसे चाहे ग्रहण कर लो।'

निश्चय ही उस समय जोरावर कुण्ठाग्रस्त बना था। सभी बोला—तू तो पंडितो सरीखी बात करती है भाभी! बोल तो, यह कहां सीखा! किसने यह सबक दिया।

सुखिया बोली—मैं जानती हू तुम्हारे संस्कार अच्छे नही। अभी और तुम्हें विपत्ति के दिन देखने हैं। लगता है तुम जीवन भर ... पथ भ्रष्ट राही की तरह इधर-उधर मारे-मारे फिरोगे। ...

का ता जीवन समाप्त किया ही, अब मुझे नष्ट करने पर आमादा हो। लेकिन म तुम्हे प्यार कर सकती हू, आत्म-समपण नही कर सकती। समय-समय पर तुमने जितना रुपया मुझे दिया है, वह ज्यो-का-त्यो रखा है, उसे मैं अपने काम मे नही लाऊगी। वह या ता तुम्हारे पास वापिस जायेगा, या तुम्हारे पुत्र के काम आयगा।' उसने कहा— मैं तो चाहूगी कि तुम्हारा यह भ्रष्ट पसा राहुल के भी काम न आय। वह पैसा उससे दूर रहे। वह पैसा इन्सान के खून स भरा है। उस पसे का सात्विक भाव नष्ट कर दिया गया। काश ! तुम आदमी बनते। तुम भी इन्सानियत का सबक सीखते। तुम भी यह जानते यह धरती का इन्सान कितना संघर्ष करता है, दो रोटी पाने के लिये। इसीलिये इसान देवता बना है भगवान बना है

जोरावर चीख उठा—'भाभी ! उसने थाल म पिस्तौल निकाल लिया। वह सुखिया की ओर तान कर बोला—'मैं तुझे भी समाप्त कर दूगा, औरत ! तुझे प्यार क्या किया, गले म एक साप डाल लिया। तूने मुझ पागल कर दिया है। मूख समझ लिया है।

उस पिस्तौल को देखत ही सुखिया ने अपनी छाती की बॉडी के बटन खोल दिये। छाती नगी करके बोली—'ले, मार द गोली, चला दे। तू खूनी है ना, तुझे खून करने की आदत है। इन्सान का खून पीना ही तूने सीखा है। मेरा भी खून पी ले।'

उसी समय कमरे के बाहर चौक म यशोदा आ गयी। वह बोली—'अरी बहू ! क्या है। कौन है। किसस बात करती है, तू ?'

सुखिया ने तुरन्त स्वर पर जोर दिया—'अम्मा कोई नही।'

यशोदा कज्जे मे व्यस्त थी। फिर बाहर चली गयी। तभी सुखिया बोली—'मारना है, तो मार दो। यहा स जाओ। फिर कभी आना और अपने सभी पसे ल जाना। पुत्र को भी ले जाना। मैं बहुत बोली हू। अब थक चुकी हू। चुप रहना चाहती हू।' वह पड गयी। मुह पर धोती का पल्ला डाल लिया। उसी समय सुखिया को लगा जोरावर न अपना सिर उसके पैरो पर रखा था। जब उसने फिर मुह से धोती हटायी, तो तब तक जोरावर उस कमरे से जा चुका था। वह दीवार फादकर अपने घर

मे पहुच गया था।

देखते ही मा बोली— अरे, आ गया तू ! मिल आया भाभी से। यह समझ ले, मुखिया सरीखी औरत कठिनाई से दिखाई देगी। मैं तो जब जब उसे देखती हू, तो लगता है, कोई देवी स्वरूपा औरत मुझे दिखाई देती है।'

जोरावर बोला नही, चुप रह गया।

मा ने कहा—'कुछ खा ले। देख, मैंने तेरे लिये हलुवा बना दिया है। दूध भी ठंडा किये देती हू।'

किन्तु जोरावर गम्भीर बना था। वह कुछ कहने की स्थिति में नही था। अभी कुछ देर पूर्व वह मुखिया के समक्ष जिस अजूबा का प्रदर्शन कर आया वह शूल की तरह उसकी छाती में चुभ रहा था। मा तश्तरी में हलुवा ले आई और गिलास में दूध। जोरावर भूखा तो था ही, खाने लगा। उसके झोले में कुछ रुपया पड़ा था, वह मुखिया को देना था परन्तु ऐसा अवसर नही आया, वह रुपया ज्यों का-त्यों लौट आया। एक बार उसके मन में आया कि रुपया मा को दे दे, परन्तु यह विचार भी हवा की तरह निकल गया। हलुवा खाकर और दूध पीकर जब वह चलने को उद्यत हुआ, तो तब अंधेरा आ गया था। उसके घर के पीछे कोई घर नही था। उसी का खेत था। जोरावर के घर आने-जाने का यही रास्ता था। जब वह उधर बढ़ा, तो मा बोली—'अभी जायेगा, तू ! पिता से नहीं मिलेगा। अब उनसे काम नही होता। नौकर रखा है, तो वह भी ठीक से काम नही करता, आये दिन रुपया मांगता है। अब कब आयगा तू ?

जोरावर बोला— कुछ पता नही। हो सकता है, अब न आ पाऊं।'

मा सम्भल गयी— कैसी बात करता है रे ! तू घर का तो रहा नही, अब बाहर भी नही रहेगा। वह बोली—'मैं अब अधिक जीवित नहीं रहूंगी। मेरे पीछे कुछ भी करना। मुझे दिखायी देता रह। यहां आता रह ! तू आ जाता है, तो लगता है, मेरे सूखे प्राणों में हरियाली आ गयी। मुझे जीवन मिला है।

जोरावर ने सास भरी—'मा, इस जीवन का कुछ पता नही। वह

बोला—'यही क्या पता था कि मैं डाकू बनूगा। खूनी कहलाऊगा, मार्थी कहते है कि मैंने बहुत रुपया लूटा। परन्तु मैं तो सोचता हू, रुपया भले ही आया हो, इन्सानियत का भाव मेरे पास नही आया। कोई भला कम भी मुझसे नहीं हो पाया।'

मा ने कहा—देख, तेरी वहिन राधा भी बहुत याद करती है। जब उसका पत्र आता है, तो तेरा उल्लेख जरूर होता है।'

जोरावर विफ्राक्न हो उठा—'वह मुझे याद नही करती, मेरे द्वारा दिये गये रुपये को याद करती है। तुम भी इस जोरावर को इसलिये याद करती हो कि हजारो रुपया तुम्हे दिया है। तुम्हारे पास इतना जेवर है कि उसका उपभोग नही कर सकती।

तभी मा ने घूरकर जोरावर की ओर देखा। जैसे अपने उस पुत्र को समझना चाहा। पहचानना चाहा। मानो अब तक उसका वास्तविक रूप वह नही देख पाई थी। उसे समझ नही पाई। तभी बोली—'मुझे रुपया नहीं चाहिए बेटा चाहिए। परन्तु तू तो खूनी बना है, डाकू बना है। बोल तो तूने अपनी इस मा के साथ न्याय किया है। तूने पुत्र के धर्म का पालन किया है। मा के जिस पेट से तू पैदा हुआ है, उस पर लात मार बैठा है। मा को घायल किया है। तड़पाया है। ले जा, अपना पैसा। यह सोने चादी का जेवर भी ले जा। दरिया मे फैंक आ। मेरा बेटा मुझे दे जा।'

जोरावर मा के पास पहुच गया। तभी बोला—'मा, तुम बहक रही हो। वास्तविकता से दूर हो। तुम्हे हाड मास का बेटा नहीं चाहिए, पैसा चाहिये। वह मैंने तुम्हे दिया है। खूब दिया है। तुम एक जीवन क्या, कई जीवन भर बैठकर खा सकती हो।' उसने कहा—'मैं जानता हू पिताजी नाम मात्र की खेती करते हैं। पुलिस को और गाव के समाज को धोखा देते है। किसी से यह कहने की हिम्मत नही रखते कि उनके डाकू पुत्र ने बहुत धन दिया है। वह उनके पास सुरक्षित है।

मा कातर हो उठी—'अरे बेटा! आज तू कैसी बातें कर रहा है? तेरे मा-बाप को बेटा चाहिए, डाके का धन नहीं। वह बोली—'जब

बचपन म तू मेरी गाद म बैठता था, ता मैं विहसती थी। आलाडित हाती थी। गव से फूलो नही समाती थी। अपने को भाग्यवान मानती थी लेकिन आज क्या तीन म रही, न तरह म। समाज की औरता को अपना मुह नहीं दिखा पाती। कही आती जाती नही। मैं खूनी और डाकू पुत्र की मा हू न ! तूने मेरा सिर झुकाया है। मेरा सम्मान अपने परा स रौंद दिया है मा का अभिमान छीन लिया है तूने ! समझ ल, मैं तेर दिये धन पर थूकती हू। उस माटी का ढेर मानती हू।

उस समय जोरावर बोला नही, सिर झुकाये खडा रहा। उसकी मा ने जीवन म पहली बार सत्य का उदघोष किया था। अपने पुत्र को खूनी और कायर बताया था। उसी न मुह पर कहा था, तूने समाज के समक्ष मुझे अपराधी बनाया है। मेरा गौरव छीना है। मा का अभिमान पद दलित किया है।

उसी समय मा बोली—सुन र जोरावर ! आज तूने अपने दम्भ का उदघोष किया है। मा स कहा है कि इतना रुपया दिया कि खच नहीं किया जा सकेगा यही ना ? तू अपने रुपये को ले जा और किसी और को दे आ। मैं तो यही चाहूगी कि तू लौट आ। घर का काम देख। विवाह कर। बच्चे पैदा कर। इस घर की वश-बेल बढा। उसे पानी दे। देख, यह घर अब बरबाद हो चला है। तेरे पिता जिस दिन जायेंगे तो उसी दिन यह घर बन्द हो जायेगा। मैं भी अब देर तक नही रहूगी। बुढिया हू, थक चुकी हू। तेरे पिता लाठी के सहार चलते है। शरीर चलता रहे। इसलिए थोडा बहुत खा लेत है।

आश्चय कि जोरावर तब भी पत्थर की मूर्ति के समान खडा था। उस इस बात का पता था कि मा ने पुत्रवती बनने के लिए बडे प्रयत्न किय थे। लेकिन जब पुत्र पैदा हुआ, तो वह डाकू बना, इन्सान नहीं। दुर्दान्त भेडिया। तभी उसने लम्बी सास भरी और मा की ओर देखा। सचमुच उसकी आखें भर आयी थी। उसके प्राणो का कोलाहल बढ गया था। उसकी पीडा चेहरे पर उतर आयी थी। मानो कोई उसके सिर पर हथौडा बजा बैठा था। वह निमम था, व्यथित था।

मा ने कहा—'बेटा, अब भी समय है अपने को बदल दे। नहीं तो,

इस मा का मार द । ममाप्त कर द । इस घर की दुनिया का ।'

जोरावर आगे बढा और मा के पैर छूकर वहा से जाने को प्रस्तुत होता हुआ बाला—'अब यही होगा, मा तुम्हारा कथन सत्य होगा ।' वह दीवार पर चढा और मा के देखते-देखते दूसरी तरफ कूद गया । वहा गाव समाप्त था । चारा ओर जगल-ही-जगल था । जोरावर झाड खखारो मे भरे पथ पर आगे बढ गया था

16

जोरावर जिस ढग से सुखिया के पास आया और बातो-बातो मे अपना पिस्तौल दिखाकर मार देने की धमकी दे बैठा, वह सब सुखिया के लिए अकल्पित तो था ही, घृणा भी था । देर हो गयी कि जोरावर उस घर से पलायन करके अदृश्य हो चुका था । परन्तु देर तक सुखिया के मस्तिष्क मे वह अभद्र दृश्य घूमता रहा । फलस्वरूप, उसका मन भी कसैला बना था । तभी अपनी चाल मे तेजी लिए एक युवती वहा आई और बोली—'क्यो भाभी, तुम्हारे पास एक साधु आया था । अभी अब पुलिस का आदमी आया है वह कह रहा है, शायद जोरावर अभी मरा नही, जीवित है । वह साधु बना है ।'

सुखिया बोली—'यहा कोई साधु नही आया । उसका काम भी क्या था ।'

'अरी भाभी ! यह न पूछ कि उसका क्या काम था । डाकू कही भी पहुच सकता है । छुप सकता है । उस युवती ने कहा—'अभी मेरी मा खेत से भैस के लिए चारा लायी है । उसी ने बताया कि चौपाल पर दरोगा बैठा है । तुम्हे पता तो होगा ही कि पुलिस ने जोरावर को मार देने का दावा किया है, घोषित इनाम भी पा लिया । वह थाने के सब आदमियो मे बट गया । अब बडा थानेदार तो बदल गया, दूसरा आया है । अभी छोटा दरोगा है । कुछ सिपाही भी है । सुनती हू वे भी

बदले जायेंगे। जो साधु गाव म आया, जोरावर से उसकी सूरत मिलती थी। साधु भी शरीर का लम्बा चौडा जवान था।'

सुखिया ने फिर भी अपने मुह पर एसा भाव व्यक्त किया कि मानो वह पूर्ण रूप से अनजान हो। उसने कहा—'मैं तो बिस्तर पर पडी हू। अम्मा भी बच्चे को लेकर कही बाहर गयी है। पिताजी खेत पर हैं। आजकल कटाई चल रही है न इसलिये उनका भी घर पर बठना नही होता। उसने बात बदली—'मढवा, तू सुना अपनी बात ! अब कब जा रही है अपने पिया के घर। पिछले दिनो तो सुना था कि ससुराल वाले लेने आ रहे है।

'हा भाभी ! एसी बात तो चली थी। लकिन उन्हें किसी दूसरे शहर म जाना था, नौकरी का इण्टरव्यू देने के लिये अब शायद अगले महीने आ रहे है।'

सुखिया ने चुटकी ली, अब तो तेरा मन नही लग रहा होगा।

'ऐसी बात तो नही भाभी !'

'अरी मैं सब जानती हू। लडकी का जसे ही विवाह हुआ वह पति की उसके घर की बात सोचने लगती है। असली ठिकाना तो वही है न। लडकी की जात का एसा ही जीवन है। इसकी कोई जाति नही, कोई देश नहीं। जहा गयी, वही की हो गयी। वही उसका धर्म है, वही जाति '

युवती ने सास भरकर कहा—'हा, भाभी ! ऐसी ही स्थिति है, इस औरतजात की।' वह बोली—'तुम सावधान रहना। पुलिस सतर्क है। तुम्हारा तो देवर है ना जोरावर, कभी भी आ सकता है।'

सुखिया ने स्वर पर जोर दिया — यहा क्या आयेगा ! क्या काम है उसका ?'

युवती चलने को उद्यत हुई और बोली—'काम तो उसका है। तुम भाभी लगती हो। सलोनी और सुन्दर हो। भाग्य की बात है कि वैधव्य भी तुम्हे मिला है। जीवन एकाकी बना है। जोरावर डाकू ही तो है वसे सुन्दर है, बलिष्ठ है। आज भी वह जवान औरतो के लिए आकर्षक बना है।

मुखिया को उस यौवनमयी मेनका का कथन ऐसा लगा कि मानो वह उसके मन के बुझते दीपक म तेल डाल रहा हो। उसे प्राणवान बनाने मे समथ हो। पिछले वप ही उस मेनका का विवाह हुआ था। बडी चचल बडा हसोड। विवाह से पूव उसके विषय मे नाना प्रकार की बातें चलती थी। उसे जिस जिस की प्रेमिका बताया गया था। यद्यपि मेनका का रग साफ नही था, कुछ क्लाँस पर था। परन्तु किसी ने ठीक कहा है, जवानी मे गधी भी परी लगती है। यही अवस्था उस मेनका की थी। यौवन उभार पर, आखें बडी-बडी। जैसे कटेली का फूल। उसने सुखिया की मनचाही बात कह दी थी। जोरावर जवान भी था सुन्दर भी था। वह सुखिया के मन मे घुस कर बैठ चुका था। परन्तु दोनो में से एक भी, एक-दूसरे की तरफ बढने को तत्पर नही था। यद्यपि वधव्य पाकर सुखिया एकाकी हो उठी थी, वह रातो-रात जागकर आसमान के तार गिनती थी। परन्तु उसकी संवेदनशीलता नारी की परम्परा और जीवन रेखा का पार करने के लिए तत्पर नही थी। और जब से उसने यह सुन पाया कि जोरावर एक अन्य नारी से विवाह कर बैठा है, उसके अन्तस्थ होने पर बच्चा स्वत ही, सुखिया की गोद मे दे बैठा है, तब से मानो वह सुखिया न तो यौवन मयी नारी रह गयी थी, न रूप रस की खान। वह केवल एक नारी थी। अकस्मात ही उस पर जोरावर न उत्तरदायित्व का बोझ डाल दिया था। उसन स्वत ही सुखिया मे कहा था, अब तू मा है केवल मा ! यह बच्चा तुझे सौपने का अथ ही यह है कि तेरे जीवन का हल्कापन नष्ट हो जाय। तेरे मन म यदि कोई भावना हो, अपेक्षा हो ता भी समय की धारा म डूब जाय

उसने मेनका स कहा - बठ न ! चली जाना। आज तो आई है इतने दिन बाद। अब ससुराल जायेगी, तो भगवान जाने कब लौटना हो। नारी तो पराधीन है। पराजित है।'

मनका बठ गयी और सास भरकर बोली—'हा, भाभी ! सच्चाई यह है।'

सुखिया बोली—'लेकिन औरत इसी म आनन्द पाती ह। पति पाकर मा-बाप को भूल जाती है। बचपन के साथी भी याद नही आत।

घर के आल-दिवाल भी रास्त पर से उतर जात है ।'

सूखे भाव से मेनका मुस्कराई—'बेशक । वास्तविकता यही है ।'

सुखिया बाली —'तुझे पति अच्छा मिला है । पढ़ा लिखा है । किसी दफ्तर मे काम करगा ।'

मनका बोली—'अभी तक ऐसा ही दीखता है । भाग्य की बात भगवान जाने ।'

'अरी पगली ! भाग्य तो बनाया जाता है । औरत मद दोना प्रयत्न करते हैं । यह जिन्दगी तो सघर्षों का समूह है । औरत मद गाडी के दो पहिये ह । देखा मा, सुदामा का घर ! पति-पत्नी न पति को किस प्रकार ऊपर उठाया । दोनो ने रात दिन काम किया और गाव के समाज म अपना स्थान बना लिया । इसे कहते है पौरुष । सुदामा ने अपने पाप का कर्जा भी उतार दिया । साहूकार के पास रखा अपना खेत भी छुडा लिया । कई साल से उसकी फसल अच्छी हो रही ह । भाग्य साथ दे रहा है ।'

उसी समय यशादा घर म आई । वह राहुल को सुखिया के पास छोडकर बोली—'बहू, अब इसे सम्भाल । बहुत तग करता है । गाव मे अब खोमचे वाल आने लगे हैं तो यह भी जिद् करता है । मलखू के पिता ने चार आने के पानी के बताशे तो खिला दिये, फिर भी उसका पट नही भरा ।

सुखिया बोली—'अब यह चटोरा हो गया है ! पिटेगा ।'

राहुल बोला—'नही मा ! मैं मार नही खाऊगा ।'

'तो जिद् क्यो करता है, नालायक कही का !

तब राहुल अपना मुह सुखिया की छाती पर डालकर कुछ बोला नही चुप रह गया ।

मेनका बाली—अच्छा, भाभी ! अब चलूगी ।

सुखिया बोली—'आज !

तभी यशोदा ने मेनका की आर देखकर कहा—'अरी चौपाल पर भीड कसी थी । दरोगा भी आया बठा था ।

मेनका बोली—'ताई, पुलिस को सन्देह है कि जोरावर आया था ।

वह मरा नहीं, अभी जीवित है।'

यशोदा ने विस्मय के साथ कहा—'इतने दिन हो गये और वह अभी जीवित ह न, न, पुलिस को धोखा हुआ होगा।'

'भगवान जाने, ताई ! बात यही थी।'

यशोदा बोली—'उसके मरने की तो गाव म मिठाई बट गयी। सुनती हू, उस रात बहुतो ने खूब शराब पी थी। पुलिस को भी पिलायी थी।

'हा, बात तो सब हो गयी ताई। मुरदा भी जल गया, उसकी तरहवीं भी हो गयी।' वह उठ चली।

तभी यशोदा के मन में आया कि सुखिया से पूछे—'तेरे पास तो जोरावर नहीं आया।' परन्तु वह मुह की बात रोक गयी। वह जानती थी, वह कुछ नहीं बतायेगी। अतएव वह लौट गयी। बच्चा राहुल भी फिर बाहर की तरफ भाग गया। किन्तु तभी सुखिया के मानस मे भूचाल-सा उठा। वह उस परवस ही, किसी तिनके के समान उड़ने लगी। यह स्वत ही अपने-आप म खिन्न बनी थी। गली जा रही थी कि उसने जो कुछ जोरावर से कहा, वह ठीक नहीं था। मेरी तरह वह भी मुझे प्यार करने लगा था। जब तब मेरे पास आकर बैठता, तो जाने किस गहरी भावना के साथ मेरी ओर देखता था। तभी-तब मैं उसकी उस पैनी दृष्टि को नही देख पाती थी। सहार नहीं सकती थी। मुझे लगता जोरावर की व आखें मेरे प्राणो म घुस रही थी। वहा हा हा कर पैदा कर रही थी। वह मेरे लिए कितना तन्मय था, समर्पित था। इतना मैंने समझ लिया था। और उसकी यह चालाकी किसी भी दूरदर्शी व्यक्ति से कम नहीं थी कि उसने मुझको अपने-आपसे बाधने के लिए अपना बच्चा मेरी गोद म डाल दिया था शायद जोरावर न समझ लिया होगा कि मैं कभी भी चली जाऊगी। इस घर को छोड जाऊगी आश्चय तो यह, उसने एक बार भी अपने मुह से यह नही कहा कि वह मेरे प्रति समर्पित है, जागरूक प्रहरी के समान मेरे जीवन के चारो ओर घूम रहा है मुझे अपनी समझ बैठा है। आश्चय की बात तो यह है कि उसने किसी को भी नही बताया कि उसकी एक प्रेमिका थी विवाहिता थी। यह

राहुल उसी का बच्चा है। कसा झूठा प्रलाप ह यह मेरा कि गाव मे, पडोस मे यह प्रचारित किया है कि नदी के किनारे यह बच्चा मिला था और-ता-और, स्वय अपने सास-ससुर से भी मैंने यही कहा ह राम ! राम ! कसा सफेद झूठ ह, यह। धोखा ह। छल है। इस कपट की नारा म इतने झूठे प्रलाप सुन पाये, लेकिन इससे बडा झूठ भी कोई होगा, मैं नहा जानती। पता नही इतना बडा पाप मैं क्या ढो रही हू। मैं किस अदश्य भावना पर आश्रित हू। मुझे न दिन मे चैन मिलता ह न रात म नींद आती है। ससुर ने मुझे नया मार्ग निर्देश दिया और सिलाई के स्कूल म दाखिल करा दिया। किन्तु उस दुर्दांत लुटेरे जोरावर ने तो सबमे बडा खेल खेला है। मेरे साथ कि मैं उम्मीद बनकर कही का न जाऊ। यौवन के सलाब मे बहकर कहो दूर न निकल जाऊ। जवानी की गहराई म डूब न जाऊ अरे जोरावर ! जाने तू किस दूषित सस्कारवश डाकू बना है। खूनी बना है। इन्सानियत का लुटरा बना है। मैं ता तरी पूजा कर सकती हू। भला किसको पता ह कि तू डाके का रुपया निधना अपाहिजा और अभावग्रस्त लोगो म बाटता ह। कई लाख रुपय का ट्रस्ट बना रखा ह, गरीब विद्यार्थियो के लिए तू मुझे एक प्रतीत सन्यासी ह। तू एक सच्चा मानव है।

मुखिया उठकर बठ गयी। उसन अपन दोनो हाथ सिर के बालो म द लिए। उन बालो को मानो नोचने लगी। उसे यह अच्छा नहीं लग रहा था, मन म तलखी आ गयी थी कि वह जोरावर का जान क्यों-कुछ कह बठी थी। उसे कायर आर बुजदिल बना बैठी थी। काश ! यह अपन का नोच पाती। झिझोड पाती। अपना गला घाट पाती। उन एसा कल्पना करके अच्छा लग रहा था कि यदि जोरावर अपनी पिस्तौल म भरी गोली मुझ पर छोड दता, तो मेरे साथ न्याय करता। मुझे जीवन दान देता। परन्तु हाय ! वह ऐसा नहीं कर पाया। वह भी ममता और मोह का शिकार बना था। मैंने देख लिया था कि जब उसने मुझ पर पिस्तौल ताना तो उसका हाथ काप रहा था। मुझे तो लगा कि वह लोहे का टुकडा उसके हाथ से छूटकर धरती पर गिर पडेगा निसन्देह, वह मुझे मार नहीं सकता था। इतना वसिष्ठ नहीं था। वह डाकू

था। उस आग्नेय शस्त्र से किसी को भी मार सकता था। परन्तु उसका मन शरीर के बल के समान बलवान नहीं था। वह मन से दुबल था प्रतिशोध ले सकता था, दे नहीं सकता था। वह असामान्य नहीं था। सामान्य व्यक्ति के समान अपने जीवन की नाव को खे रहा था। उसकी नाव पुरानी पड चली थी। पतवार भी कमजोर थी। उस लकडी को दीमक ने खा लिया था इन्सान का खून करने वाला पथिक आत्मा से और मन से हीन होगा, बलवान नहीं। यह आसुरी शक्ति टायर में भरी हवा के समान कुछ दूर तक मंजिल पूरी करती है, कभी भी बीच रास्ते में समाप्त हो जाती है

सुखिया खुल पडी। वह रोती हुई बोली—'यदि जोरावर मेरे जीवन की रक्षा के लिए यह बच्चा मुझे सौंप सकता है, तो मैं भी उसे प्राणवान बनाने के लिए वह सब करूंगी जो उसके लिए शुभ होगा। वह मन से रोगी है विषाक्त बना है, उसे स्वस्थ बनाना न केवल उसके हित की बात है अपितु मेरे लिए भी शुभ है। उसने मेरे लिए कुछ त्याग किया है, तो मैं भी अपने आपको उस पर विसर्जित कर दूंगी गाय की घटना सुनते ही वह दौडा आया। निश्चय ही। वह एक-दो व्यक्तियों का खून कर देता। मेरे लिए पागल कुत्ते की तरह जाने किस किसको जहरीले दांतों से नोच लेता '

तभी यशोदा वहा आई। वह सुखिया का रोती देख, एकाएक हतप्रभ रह गयी। तभी आगे बढकर बोली—'अरी, बहू! क्या आ गया तेरे मन में। क्या याद आया।

तभी सुखिया फफक पडी—अम्मा, मैं बडी दुखी हूं। मैं मरना चाहती हूं। तुम सबके लिए बोझ बनी हूं।

अम्मा ने कहा—'तू तो पगली है, देख, मुकेश शहर से आया है। तेरे लिए न जाने क्या-क्या ले आया है। सुबह उसके पिता ने सौ रुपये का नोट दिया था, तो सब खर्च कर आया। राहुल के लिए कमीज और नेकर का कपडा लाया है और तुम्हारे लिए फल मिठाई। एक सूती धोती भी ले आया।

सुखिया ने कहा—'अम्मा, मुकेश तो पगला है। इतना खर्च

आया। यह धोती तुम ले लेना। तुम्हारे पास नहीं है। यह धोती भी फट चली है। कई जगह पवद लगाये हुं।'

'अरी, मेरा क्या है बहू ! मैं तो फटी-पुरानी पहनकर ही गुजारा कर लूंगी।'

उसी समय मुकेश घर म आया। वह मुखिया क पर छूकर बोला—'धाती देख ले भाभी। तुम्हे पसन्द आयगी।

मुखिया बोली—'मुकेश भया, यह धोती अम्मा को देना। देखो, अम्मा के पास दूसरी धोती नही। यह फट चली है। जब ईख का पसा आयगा, तो तब मेरा और तुम्हारा कपडा आ जायगा। पिताजी का भी सिर का सपट्टा फट चला है। कुरता और धोती का कपडा भी चाहिए। पिताजी चार आदमियो म जाकर बठते हैं, उन्ह शऊर का कपडा पहनना जरूरी है।'

मुकेश बोला—'भाभी, तुम सबकी फिक्र करती हो, अपनी नहा।

यशोदा बोली—'बेटा, यह धोती अब तेरी भाभी के लिए ठीक नहीं, अब तो मामूली औरतें भी टेरलीन और रेशम की धोती पहनती ह। और तेरी भाभी तो अब गाव म सभी छोटे-बडे व्यक्ति की निगाह म आ चुकी है। गाव की औरतें भी इसे अजूबा समझती हैं। सभी कहती है तुम्हारे घर में यह बहू क्या आई, आसमान से उतरकर कोई देवी आ गयी।

मुखिया ने कहा—'अम्मा, मुझे आसमान मे मत चढा दो। सब भ्रम मे है। मैंने कोई अजूबा काम नहीं किया। जो लडका मेरे छुरा मारकर भागा था। वह तो खुद शराब के नशे म था। ठोकर खाकर गिर पडा था। उसका छुरा मेरे हाथ आ गया। वह न गिडगिडाता, हाथ न जोडता तो मैं यह छुरा उसके पेट में घुसेड देती। मैं भी उस समय पागल बन चुकी थी। हमलावर का सामना करना मेरा धम था।'

मुकेश बोला—'भाभी, यह बात शहर म पहुची है। चर्चा का विषय बनी है। हमारा प्रिंसिपल कहता था शायद ऐसी बहादुर औरत को सरकार पुरस्कृत करेगी। तभी तो औरतो को बढावा मिलेगा। अब समाज बदल रहा है, अम्मा ! इन्सान करवट ले रहा है। प्रतिरोध और प्रतिक्रिया आरम्भ हो चुकी है। अब इन्सान पहले के समान औरत पर

अयाय नहीं कर सकता।'

सुखिया हस पडी—'अम्मा, हमारे दवर जैसे मसखरा हो गया है।'

यशोदा बोली—'अब बच्चा नहीं रह गया है। सब कुछ समझता है। दो साल बाद घर का बोझ भी उठा लेगा।'

मुकेश बोला—'अम्मा, यू कहो न, मुझे कोल्हू का बैल बनाया जायेगा। हल मे जोता जायेगा।'

मा ने सास भरी—'बेटा, यह सभी इन्सानो का दस्तूर है। औरत भी कोल्हू का बैल बनती है। दिन रात घर के धधो म लगी रहती ह।' वह बोली—'अब तू डाक्टर के पास जा। यही कर जायेगा, तेरी भाभी का अभी जख्म भरा नही, हरा है। याह उठती नही। तेरी भाभी बिस्तर छोडे तो मुझे छुट्टी मिले। मुझे तो घर और बाहर का सब काम देखना पडता ह। डाक्टर के पास से आकर भैस को सानी कर देना। अब दूध कम देती है। आजकल तुझे भी नही मिलता। तेरे पिता को भी नहीं। बहू को भी दिया जाता है, या राहुल को।'

सुखिया बोली—'मेरा दूध बद कर दो, मा! मुकेश का दो। यह पढता है। दिमाग पर बोझ पडता है।'

उसी समय चौधरी रामदास घर म आया और बोला—'मलखू की मा, चौधरी विक्रम आये हैं, बहू को देखने। कमर मे कुर्सी डाल दे।'

लाठी के सहारे विक्रम आया और बोला—'नहीं, नही, यह मेरा घर है, किसी गैर का नही। और उसने फलो की झोला आगे बढा दिया।

17

बूढा विक्रम कुर्सी पर बठ गया। वह मकान पर विहगम दृष्टि डालता हुआ बोला—'कैसी अजीब बात है, इस घर पर कभी नहीं आ पाया। यह छोटा-सा घर है, अच्छा है। यहा बैठने को मन करता है।

उसन कहा—'चौधरी रामदास, जग म जहाँ अच्छाइ है, वहाँ बुराइ भी है। अच्छाई तो यह है कि पैसा आदमी को एक-दूसरे के पास ले जाता है और बुराई यह है दूर-दूर भी कर देता है। ऊच-नीच, छोटा-बडा यह पसा ही सिखाता ह। मेरा पैसा बडा अपराध है कि तुम्हारा मलघू मरा तो मैं यहा तक नही आ पाया। कई दिन बाद मुझे पता चला था।

रामदास प्रस्तुत बात को टाल गया। वह बोला—'दूध लोगे या चाय।

चौधरी बोला— एक प्याला चाय ल लूगा।'

रामदास न कहा—'अब गाव म विग्रह अधिक बढ गया ह। आज की नयी सन्तति सुधारवादी नही, वह सब कुछ न्याय चाहती है। अब तो न सस्कृति की बात सोची जाती है न धम की। गाव क मदिर पर भी गुण्डागर्दी बढ चली ह। और तो-और, गाव के गलियारे म शराब बिकती है। जुआ खेला जाता है। कोई जवान बहू-बेटी निकले तो आवाजकशी की जाती है। आज तुम यहा किस प्रकार आ गये, यही अचरज की बात है। गाव के पच्छमी छोर पर तुम्हारा विशाल भवन है, मैं समझता हू वहा से कभी निकलते नही। अब तो तुम्हारा बुढापा आ गया, जवानी म भी गाव मे किसी के यहा नही आते-जाते थे।

चाय आ गयी और चौधरी ने चुस्की ली। तभी वह चौधरी रामदास की ओर देखकर बोला— तुम ठीक कहते हो, चौधरी ' उसने बिस्तर पर पडी सुखिया की ओर इशारा किया—'तुम्हारी इस बहू न मुझे बुढापे म साख दी ह। कह सकता हू इसने समूचे गाव का पथ प्रदशन किया है। मुझे भी रास्ता दिखाया है। उसन फिर चाय पी और कहा—'मैंने तुम्हारे पास पाच हजार रुपये भेजे थे, वह तुमने नाली म फेंक दिये थे। जिसने मुझसे जाकर कहा, तो तभी, मैंने स्वय अनुभव किया था, तुम स्वाभिमानी हो, सच्चे मद हो। लकिन रुपये तो मैं आज भी लाया हू, रिश्वत क रूप म नही, बहू को शाबाशी देने के रूप मे। ये रुपये स्कूल म लगाना। स्कूल चलाना। नारी समाज मे यह बहू कुछ काम कर सकगी। इसम प्रतिभा है, आज है। गत सजय की बहू भी आ गयी। वह गुसियारा तो है परतु बहुत ऊची बात सोचती है। वह भी

तुम्हारी बहू के साथ राम करेगी। एक-दो दिन में अपनी सास के साथ यहां आयेगी।

चौधरी रामदास बोला—'रुपये न दो। आशीष दो।

'हां, हां यह तो दूंगा ही। अब मैं तुम्हारा हूं, रामदास।' उसने कहा—जीवन तभी से जा रहा है। अस्सी वर्ष का पार कर चुका हूं। कभी भी इस गांव से चला जाऊंगा। वह चाय का अन्तिम घूंट लेकर बोला—'तुम्हारी बहू ने रास्ता दिखाया है। पैसा कुछ नहीं, नगण्य है। वास्तविक बात है तुम्हारी भावना की। अब मैं बूढ़ा हूं न, तुम्हारी बहू आशीष लेकर जा रहा हूं। इन रुपयों को इनाम समझो, मेरी ओर से। पर मुझे पता चला है, बड़े दरोगा ने तुम्हारी बहू की बड़ी प्रशंसा लिख भेजी है, अपने अधिकारियों के पास। हो सकता है, जिले के सदर मुकाम से बड़े अधिकारी आयें। तुम्हारी बहू का पुरस्कृत करें। कुछ और नारियां भी आगे आयें समाज में काम करें, यही बड़े दरोगा की अपेक्षा है। वह भी बड़े घर का है। रिश्वत लेना पाप मानता है।' उसने जेब से पांच हजार रुपये की गड्डी निकाली और मुखिया के सिरहाने रख दी। मुखिया मुंह पर धोती का पल्ला डालकर पड़ी थी। जब चौधरी ने रुपये रखे, तो वह सहसा उठ बैठी और अपना हाथ चौधरी के पैरों की ओर बढ़ाकर हाथ जोड़ने लगी।

विक्रम बोला—'तू बहादुर है। तुझ पर यह समूचा गांव गर्व कर सकता है। अब मेरा संजय ठीक है। कभी आयेगा, इस ओर। अब उसने शराब पीनी छोड़ दी, बड़ी कीमती शराब की बोतलें इकट्ठी कर रखी थीं उसने, सब तोड़ दीं। शराब नाली में बहा दी। उसके साथियों में अब एक भी ऐसा नहीं होगा, जो शराब पीयेगा। मेरा घर नरक बना था वह, तूने स्वर्ग बना दिया।'

चौधरी उठ चला। वह घूंघट काढ़े खड़ी यशोदा को देखकर बोला, 'बड़ी भाग्यवान है तू ऐसी बहू ढूंढ़ने में भी नहीं मिलती। यही तेरी बेटी है, बेटा है। सम्भाल कर रखना इस बहू को, कीमती हीरा है।' वह लौट पड़ा। रामदास दूर तक साथ गया। रास्ते में ही विक्रम बोला—अब हमको बदल देना चाहिए, अपने आपको। तभी गांव का भला होगा। तुम्हारी बहू ने बहुत ऊंचा काम किया है। यह तो स ब ले

काम था। जान कम इसके दिमाग म बात आयी। तुम्हारी बहू मेरे घर न जाती तो लडका नही बचता। पैसा प्रत्येक जगह काम नहीं देता। तुम्हारी बहू का योग्य अजेय था, अनोखा था। अब तुम घर जाओ। मैं चला जाऊगा।

रामदास न कहा — अच्छा राम राम।'

'राम राम, चौधरी'। वह आग बढ़ गया। रामदास भी घर की आग नही लौटा, अपने खेतो का ओर चल पडा। उसने दूर से देखा कि चौधरी विक्रम का फाम लहलहा रहा था। देखकर वह बोला, 'ऐसे गेहू गाव म किसी क नही हागे। भाग्यशाली ह, विक्रम'। वह तजी स आग बढ गया। उसक मन म बात थी कि जब भगवान दता है, तो छप्पर फाडकर दता ह एक समय बहुत बुरा आया था, इस विक्रम का। हाथ से उजड जान वाला था। परन्तु अपन को सम्भाल बठा। यही से रुपय की मदद मिल गयी, तो विपत्ति क उस अधड मे पार हो गया। तब सुना था इसकी ससुराल न मदद की थी। वह घर भी पुराना ह किसी राजा स कम नही। बडी बात समझो कि जो आज बहू का पाच हजार रुपय द गया। अब झगडा तो कोई रहा नही। दरोगा लिख-पढ गया था। कौडी-कौडी पर जान दन वाला आज इतना उदार बना शायद घर वाली ने कहा होगा। हो सकता ह इस काम मे बेटा भी अगुवा बना हो।

धूप तज हो चली थी। चौधरी रामदास एक पड के नीचे खडा हो गया। आखो के सामने ही उसक खेत थ। अब उसके पास अधिक जमीन नही थी। थोडी जमीन मलखू की बीमारी म बेच दी थी। स्वय तो अब काश्त कर नही पाता, बटाइ पर करता था। बटाईदार जितना द दे, वह उस पर निभर था। रामदास जहा खडा था, वही पर उसके गेहू कटकर लाये जाते थे। महीना दाँय चलती थीं। उस समय यशोदा जवान थी। गाँव से पिया के लिए रोटी, छाछ लाती थी। रामदास रोटी खाता और यशोदा के रूप का रसपान करता था। कभी कभी यशोदा झिडकती, रोटी खाते हो या मुझे देखते हो। एक समय मे एक ही काम होता है दो नही।

तब रामदास आकुल हो उठता। वह मस्ती म भर जाता। असहाय्नि

बनकर रहना है, मन करता है, तुम्हें देखे जाऊं। अफसोस तो यह है कि तू औरतजात है। लड़का होती तो साथ में काम करता। कन्धे में कन्धा मिलाकर चलता।'

तब यशोदा हंस पड़ती 'समझ लो, मैं लड़का हूं। कहो तो, साथ काम करूं। मुझे तो घर में जाकर बैठना है नहीं यहां भी काम करना है।

उसी समय रामदास की दृष्टि पेड़ पर एक तने पर गयी, दो पक्षी परस्पर चोंच मिलाये बैठे थे। उनकी आंखें बन्द थीं। न जाने वे दोनों किस नैसर्गिक सुख में खो गये थे। रामदास एकटक दृष्टि से देखता रहा। वह सोचने लगा, काश ! आदमी भी ऐसा ही सुख प्राप्त कर सकता। यहां न अभिमान है, न आशंका है हां, यह विक्रम चौधरी रात में ठीक से सो नहीं पाता। या तो बिस्तर पर बैठा रहता है, या घूमता है। नौकर हाथ में बन्दूक लिये रात भर पहरा देता है। भला पूछे कोई इतना बड़ा विशाल भवन बनवाकर क्या पाया, इसके पुरखा ने ! आज यदि बनवाया जाय, तो लाखों रुपया लगे। ईंटों का भट्टा भी अपना लगवाया था। पैसे की बात है मकान के सामने ही फार्म है। बाग है। तरह-तरह के आम लीची और सन्तरे पैदा होते हैं। शहर के बड़े-बड़े अधिकारियों को डाली भेजता है, जो भी बड़ा अफसर आता है, इसी के यहां ठहरता है

चौधरी रामदास लौट पड़ा। जब वह गांव की तरफ जा रहा था, तो एक व्यक्ति सामने से आता दिखाई दिया। वह भी किसान था। अपना खेत देखने जा रहा था पास आकर वह बोला—'आज कैसे आये चौधरी !'

रामदास बोला—'चला आया था, खेत देखने !'

'इस बार तो तुम्हारे खेत की फसल अच्छी है।

'हां, अभी तक तो ठीक है।

'कौन है, तुम्हारा बटाईदार—रामभरोसे !'

'हां, अभी तक तो वही है।

आदमी तो भला है। नेकनीयत भी है।

'अजी, क्या खाक भला है। मेरे इन खेतों की बदौलत दो भैंसें पालता

ै। दूध बेचता हूं। भैंसों का चारा इन्हीं खेतों में जाता है।'

उस व्यक्ति ने कहा—'चौधरी यह सब तो होगा। घोड़ी घास से यारी करे तो भूखी मर जाय। रामभरोसे की भैंसें दूध इन्हीं खेतों की बदौलत देती हैं। वह बोला—'अब तो तुम्हारा छोटा लड़का बड़ा हो चला है। खुद काश्त कराओ। बटाईदार से कुछ मिलता नहीं।'

'अरे, भैया! मलखू क्या मरा, मेरा, भाग्य फूट गया। मैं निरस्त्र हो गया। बूढ़ा हूं इसलिए काम नहीं होता। छोटा लड़का खेती नहीं करेगा। यह तो मेहनत का काम है। मिट्टी के साथ मिट्टी बनना पड़ता है।'

'हां चौधरी! यह तो सही है। मुझको ही देखो, दोनों लड़के लगते हैं घरवाली लगती है। और मैं भी इन्हीं खेतों के चारों तरफ घूमता हूं। बड़ी मेहनत का धंधा है यह किसानी का।

चौधरी रामदास बोला—'लेकिन किसान फिर भी नहीं सोचता। बैल के साथ काम करने वाला अपना दिमाग भी बैल सरीखा रखता है। बात-बात पर लड़ाई झगड़े और थाना कचहरी इस किसान की मेहनत की कमाई शहर वाला की जेब में जाती है।'

बात सुनकर आगंतुक चुप रह गया। तभी वह अपनी लाठी एक ईंट पर बजाकर बोला— लेकिन चौधरी, तुम्हारे मलखू की बहू बड़ी समझदार निकली। तुम्हारी तो गांव के बड़े घर से लड़ाई छिड़ गयी थी बहू ने वह बचा ली। शिवा की तरह जहर का घूंट स्वयं पी लिया। दोनों घरों को बचा दिया। मैंने सुना है दरोगा भी तुम्हारे पक्ष में था। विक्रम का हजारों रुपया पानी में चला जाता, और-तो और यह भी बात उड़ चली थी कि चौधरी विक्रम का पुत्र पुलिस ने मारा था। वह अपमान को बरदाश्त नहीं कर पाया। खून की घूंटी करने लगा था। लेकिन तुम्हारे मलखू की वह चुटीली बनकर भी बहा गयी। उसके मन में बैठा भय दूर कर आयी शाबाश उस औरत का! जब भी कहीं चार आदमी बैठते हैं, तो यह बात चलती है। अब तो सुनते हैं, विक्रम ने अपने को बदल दिया है। चेता चमार की लड़की का विवाह था। बारात को ठहराने के लिए कोई जगह नहीं था। चौपाल में बारात आकर नहीं ठहरी। लेकिन विक्रम चौधरी ने जब यह बात सुनी, तो चेता को बुलाया। अपना दालान

उन खुनवा दिया। बागान के लिए ट्यूबेल भी चलना था। कुद भी नेता के घर गया और कुछ दे आया

रामदास बोला— अब स्वयं बूढा हो गया है। उन भी जाने चाहिये। शहर में एक बडा बंगला बनवा रखा है, सुना है कि लडका वहा रहता। अब वह गाव मे रहना पसन्द नहीं करता। कहता है, यहा असभ्य और जाहिल लोगो की जमात है। लेकिन उसकी मा इसके खिलाफ है। वह अपने पति को उकसाती है। उसके बच्चे शहर के स्कूल में पढते हैं। उनकी देखरेख के लिए आदमी रखना पडता है। हफ्ते मे मोटर जाती है और बच्चो को ले आती है।

तब उसने कह गया—चौधरी, सब माया का खेल है। चौधरी किसान गाव के लोगो को न अपनी बिरादरी मानता है न किसी से भाईचारा रखता है। वह अपने को श्रेष्ठ समझता है। वह चल दिया।

तब गाव की ओर चलते हुए, रामदास के मन मे बात उठी इस इन्सान मे एकता कैसे हो? भाईचारा कैसे हो। यहा तो सब अलग-अलग है। दिमाग अलग, सोचने का ढग अलग। उसने पैर तेज किये और बोला— 'यह पैसा ही सब विग्रह करता है। हमारे पुरखो ने इस पैसे को अपना मध्यस्थ बनाया, यह अच्छा नहीं किया। आदमी सोने चादी के सिक्कों का सचय करने लगा। अब सरकार ने नोट छापने शुरू कर दिये है, तो व भी जमींक्षेत्र होने लगे सुना नही 'किसी ने कई हजार रुपये के नोट चूल्हे की जड मे गाड दिये थे। जब निकाले, तो वहा मिट्टी का बुरादा हाथ लगा। नोट दीमक ने चाट लिये।

घर जाकर देखा कि चबूतरे पर मुकेश और उसकी मा। उसकी मा ने कहा—'तुम्हारा बेटा पास हो गया। अब कालेज मे जायेगा।

रामदास चारपाई पर बैठ गया और बोला—'कालेज का खर्चा कौन बरदाश्त करेगा।'

यशोदा बोली— बहू कहती है, मुकेश का खर्च वह देगी।

चौधरी तीखी भाव मे मुस्कराया— 'वह कैसे देगी। उसकी क्या अपार काश्त होती है। दुकान चलती है या कारखाना?

यशोदा ने कहा— कुछ भी हो, जब लडका पढना चाहता है, तो

पढ़ाना पड़ेगा। हम अपना घर का खर्च कमकर देंगे। भग ग। दूध बच दिया जाएगा। उसकी आमदनी म मुकेश व' लेगा।

'जी हा ! गत को जरा मा दूध मिल जाय तो तुम यह भी ब'द कर गर्गी। गमदास बोला—'यह बात सुनन म ना अच्छी लगती है, पग्न्तु इसका व्यवहार स्वरूप क्या ह। उसन कहा—'मैं आज मेता पर गया था। फसल अच्छी है। पग्न्तु हम क्या मिलगा। इग भगवान जान।'

यशोदा बोली— अब मैं पहल म अधिक चौकन्नी हो गयी हू। मैं कभी-कभी अन्धेरे म खेत द' आती हू। जब कटेंगे यह, तो अपना अधिक समय वहीं पर दूगी। अपन सामने अनाज का बटवारा करूगी। मैंने देख लिया ह। रामभरोस चालाक है। उसकी बहू भी मक्कार है। और-तो और, उसके बच्चे अन्धेरे उजाले मे सेत मे बरसी काट ल न हैं। तभी ग भस पल रही हैं। कई-कई हजार की ह, वे भस।

मुकेश बोला—'आप न चाह ता मैं पढ़ना ब'द कर दूगा। बस अब खेती मे कुछ मिलता नही। पसा चाहिए आदमी चाहिए। बीज, खा' और पानी के लिए पैसा चाहिए।'

'हा बेटा ! तू ठीक कहता है। अब खेती करना भी एक व्यापार है। सबकी शक्ति इस काम मे भागगर नही हा सकती। तू पढ। बी ए कर लेगा, तो कही किसी अच्छी नौकरी पर लग जाएगा।

मुकेश बोला 'यह भी जरूरी नही पिताजी ! सब सयाग की बात है।'

चौधरी रामदास न पुत्र की ओर दखा, उसे सराहा। लडका शऊर का बात कर रहा था। समझदार हो चला था।

उसी समय एक व्यक्ति वहा आया और हाथ मे लिया अखबार दिखाता हुआ बोला— लो, पढो चौधरी ! पुलिस के सदर मुकाम में जोरावर न आत्म-समपण कर दिया। अपना गोलिया से भरा पिस्तौल पुलिस कप्तान को सौंप दिया

चौधरी रामदास विस्फारित हो उठा। वह कभी उस आदमी को देखता, कभी पास खडी यशोदा को। तब मुकेश वह अखबार लेकर घर म दौड गया, भाभी के पास

किया अपने आपको जीवन की गंगा में डुबो दे। उस दुरूह पथ में अपने को पथक कर ले।

यों रात दिन सुखिया के प्राणों में जहरीला धुआं घुट रहा था। वह स्वत ही तड़पती। किसी घायल पंछी की तरह पर फड़फड़ाती। निश्चय ही उन दिनों सुखिया अत्यधिक पीड़ित थी। उसकी कठिनाई यह थी कि अपने मन की कथा किसी के समक्ष प्रकट भी नहीं कर सकती थी। इस अवस्था में उसे भ्रष्ट कहा जाता। कुल कलंकिनी बताया जाता। और कोई कुछ कहता या नहीं, परन्तु यशोदा नाक नोचकर उसे घायल बना देती। सुखिया को पता था कि उसका ससुर निपट अनाड़ी था। निरक्षर तो था ही बुद्धिहीन भी था। वह गंवार ग्वालिये के समान, आदमी को ढोर की तरह हांकता था। बात-बात में लाठी उठाता था। आये दिन वह यशोदा से लड़ता था। गालियां बकता था। इसलिए घर में और बाहर कोई भी व्यक्ति या औरत ऐसा नहीं थी कि जिससे सुखिया अपने मन की बात कह पाती। वह निपट एकाकी थी। यद्यपि वह गांव था। वहां स्त्री पुरुषों का समाज था, लेकिन सुखिया का अपना कोई भी हितू नहीं दिखाई पड़ता था। वहां ऐसा शुभेच्छु नहीं था कि सहानुभूति के साथ सुखिया की बात सुन ले और उचित राय दे।

किन्तु एक दिन जब सुखिया देर तक चारपाई से नहीं उठी, तो यशोदा उसके पास आई। वह अपने स्वर में नितान्त ममता का भाव लेकर बोली—'बहू, आज उठेगी नहीं। देख, दिन चढ़ गया। चौपाये भी जंगल को चले गये। किसान अपने हल ले गये। तेरे पिताजी भी चाय का एक प्याला पीकर खेतों की तरफ गये हैं। अब गहूंओं की कटाई शुरू हो गयी है। वहां एक का रहना जरूरी है। तू उठ, मुंह-हाथ धो। तेरे स्कूल का भी समय हो जायगा। मुझे भी खेत पर जाना है। दाल रोटी बना लेना।'

सुखिया उठ बैठी। परन्तु वह उदास था। उसकी आंखें भी लाल लाल दिखती थीं। यही देखकर यशोदा बोली—'क्या बात है बहू, आज कल तू उदास रहती है। बोल तो, कुछ मन में लिये है। यह अशान्ति किस लिये आता है। क्या उसमें स्कूल का कोई काम लेती है।'

सुखिया ने बताया—आजकल अशान्ति के स्कूल की छुट्टियां हैं।

वह मुझे कुछ देर के लिए पढ़ा जाता है। वह अध्यापक है, इसलिए पढ़ाई को भला समझता है।'

'हां, यह तो है, बहू! परन्तु उसे भी समझकर रहना है। यह अशोक अंग्रेजी स्कूल का मास्टर है, मुझे तो ऐसे लोगों से डर लगता है।

उस समय सुखिया को यह अच्छा नहीं लगा कि अम्मा सभी पर सन्देह करती है। एक दिन वह जगजीवन आया था, तो उस पर भी शक करने लगी थी। जब तक वह मेरे पास बैठा रहा, मेरे चारों ओर चक्कर काटती रही मरी हुई नाली इस अम्मा के मन में पाप ही भरा है। बदबू है, सड़ांद है। भला पूछे कोई इससे जब किसी के मन में कोई आकांक्षा पैदा होगी, तो क्या यह रोक लेगी चारों तरफ की दीवारें खड़ी करके भी उसे नहीं रोका जा सकता

वहां से जाती हुई यशोदा बोली—'जल्दी कर! अब मुकेश की भी छुट्टी हो जायेगी। वह भी खेत पर आता-जाता रहेगा। तुझे तो वह भी पढ़ा सकेगा। दस जमात पढ़ चुका है, अब ग्यारहवीं में जा रहा है। दो-तीन वर्ष बाद बी० ए० कर लेगा। अब तक तो यह किसान का घर था, लेकिन आगे इसका रूप बदल जायगा। कमरे में मेज कुर्सी लग जायेंगी सोफा और न जाने क्या-क्या हां रात कह तो रहे थे मुकेश के पिताजी, मुकेश की बहू बेपढ़ी नहीं होगी। अब तू पढ़ी लिखी होती तो मास्टरनी हो जाती। हाकिम हुक्काम सभी तो तेरे पक्ष में है। तारीफ करते हैं।

यशोदा बाहर चली गयी। चबूतरे पर किसी से बात करने लगी। उसकी आवाज सुखिया के कानों में भी आती रही। तभी वह स्वतः ही बोली—'न जाने किस धातु का गला बना है इस अम्मा का! जब देखो तब, बोलती रहती है। इस घर में दोनों का गुस्सा तेज है पिता का गुस्सा भी नाक पर रखा रहता है। निपट गंवार हैं दोनों। जिन्दगी पानी में बहा दी। एक बार भी नहीं सोचा कि इंसान किस प्रकार तरक्की करता है। अपना भाग प्रशस्त करता है। लोग कहीं-से-कहीं पहुंच गये और ये दोनों कूप-मण्डूप बने हैं। बाप-दादा द्वारा अर्जित थोड़ी-सी जमीन है। उसी पर इस गृहस्थ की गाड़ी को खींच रहे हैं बेचारा मुकेश फटा कुरता पहने स्कूल जाता था। मैंने जब कपड़ा दिया, तो

दूसरा कुरता मिल पाया। यदि मैं न रहूँ तो जोरावर का लड़का भी भूख से बिलबिलाता फिरे। वह कहाँ जाता है, किसके साथ खेलता है, यह जानने की किसी को आवश्यकता नहीं। मैं तो चाहती थी कि राहुल अपने ठिकाने पर जाये। जोरावर के माता पिता इस बालक को रखें। परन्तु जोरावर को मेरा यह विचार पसन्द नहीं था। वह यह भी नहीं चाहता कि उसके माता पिता को पता चले कि राहुल उसका बच्चा है। संस्कार अच्छे नहीं हैं इन बुजुर्गों के। जोरावर ने जिस लड़की को अपनी पत्नी बनाया, वह किसी अच्छी जाति की तो थी नहीं शायद अन्त्यज थी। ये दोनों परिवार यदि यह सब जान लें, तो इस राहुल को रहने के लिए न यहाँ जगह मिलेगी, न वहाँ जोरावर के घर पर! बड़े म्लेच्छ विचार हैं इन लोगों के। इन्हें पैसा चाहिए, आदमी नहीं। जोरावर की माँ ने एक बार भी आकर नहीं कहा कि मेरा जोरावर अब नहीं मिलेगा इस जीवन में मुझे दिखायी नहीं देगा। खाक पड़े इस माँ बेटे के सम्बन्ध पर! लगता है, यह औरत भी नहीं समझती कि न जाने किस संस्कारवश वह एक बच्चे की माँ बनी है। धर्म और संस्कृति का स्वर अब औरतों के प्राणों में नहीं गूँजता। ऐसी माँ को नहीं झकझोरता। बेटे का मुँह देखने के लिए व्याकुल नहीं करता।

उसी समय पड़ोस की एक युवा लड़की आयी। सुखिया को एकाकी देखकर बोली—'अब तुम्हारा बहुत काम बढ़ गया है, भाभी! चाची तो खेत की तरफ जा रही थी।'

सुखिया ने कहा—'हाँ, कटाई चल रही है।'

'हाँ, भाभी! यही दिन है जब किसान अपनी मेहनत के चार दाने घर में लाता है। बाल-बच्चों की गुजर करता है। इन्हीं दिनों शादी-ब्याह भी किये जाते हैं। अजीब जिन्दगी इस इन्सान की। कशमकश से परिपूरित!'

सुखिया मुस्करा दी 'अब तो तू भी गंगा की धार पर चढ़ा दी गयी है। ब्याह हो गया तो जिम्मेदारी का बोझ सिर पर उठाने को बाध्य होगी।

लड़की का नाम रामी था। वह बोली 'भाभी, यहाँ माँ-बाप के

घर भी क्या धन स रोटी मिलती है। सुबह उठो तो चक्की पर बैठो। फिर चूल्ह पर। झाडू बुहारू दो। एक काम तो नहीं अनेक काम हैं। रात को जब चारपाइ पर पडती हू तो कमर टूट जाती है। ऊपर से तुर्रा यह कि किसी छोटे भाई-बहिन का पास सुलाओ। टट्टी कर द, तो साफ करो। पेशाव कर द, तो कपडे बदलो।'

मुखिया हस पडी— रामी, मा-बाप का घर ही लडकी का स्कूल है। यही से सीख कर जाती है। खाना बनाना भी मा-बाप के घर सीखती उस पर भी, तमाशा यह सास महारानी की दस बातें सुनो। पति देवता को खुश करने के लिए रात की रानी बनो। मांग चोटी करो। माग मे सिदूर भरो। माथे पर बिन्दी और अब तो लिपिस्टिक पाउडर लगाना भी आवश्यक बन गया है। आखो मे काजल लगाना भी जरूरी ह।' वह हस पडी। रामी भी हस दी। वह बोली 'आज पुरानी बातें कैसे याद आ गयी।'

सुखिया बोली—'मैने यह सब नही किया। सुविधा नही थी। माग नही थी। तुम्हारे भया तो सीधे-सादे थे। घर मे हात तो रोटी खाकर पड जात। जब मैं घर के कामो मे लिपट कर जाती, तो खर्राटे भरत होत। मैं जगाती, तो जागत।'

रामी हसती 'असली बात रोकती हो भाभी!'

'अरी असली क्या, नकली क्या? मेरा सोहाग तो कुछ दिन का था। बसन्त की बहार की तरह आया और निकल गया। अब बहार के दिन तो तुम्हारे हैं। सुना, कब प्रोग्राम ह पिया के घर जाने का।'

रामी बोली—'भाभी नयी नौकरी लगी है। वहा रहने को जगह मिलेगी, तो जाना होगा। आजकल शहरो म यह सबसे बडी परेशानी है।'

सुखिया बोली— अब जिन्दगी का मजा नही रहा। सोहाग के दिन भी हवा की तरह आते हैं और निकल जाते हैं। किसी को चैन नहीं। उसने कहा—'मैं स्कूल के काम से कुछ घरो म जाती हू, जब वहा के करुण दृश्य देखती हू, तो अपनी पीडा भूल जाती हू। तीसरी गली मे एक घर है, रामदीन का। उसका लडका महेश अभी कुछ दिन हुए

अपनी बहू को लाया है। लेकिन सिर मुडाते ही बचारे के सिर पर आल पड़े। इधर बहू को लाया, उधर नौकरी छूट गयी। लाला को एक सस्ता आदमी मिल गया। जिस दिन मैं उस घर गयी, दो दिन की भूखी थी उस महेश की बहू। घर मे दाना नही था। सास श्वसुर उसे ताड़ना दे रहे थे, यह कम्बख्त है, दुर्भागी है। तब मुझसे रहा नही गया। बड़ी लताड़ दी, उस महेश के बाप को और माँ को। पाँच रुपये मेरे पास थे, वह दे आई।'

रामी ने कहा—'भाभी, घर घर यही अवस्था है। हर घर के बराबर में एक रहता है। बचारे ने खेत काटा, अनाज निकालने के लिए रखा। किसी ने जलती हुई बीड़ी फेंक दी। रात में तेज हवा चली। सब राख हो गया। वह इन्ही गर्मियो में लड़की का विवाह करने की बात सोच रहा था। परन्तु सब धरा का धरा रह गया। अब रोटी के लाले पड़ गये। रात मेरी मा उसकी बहू को थोड़ा सा आटा दे आयी थी। अब लोग सोच रहे हैं कि परस्पर चन्दा करें और उसकी लड़की के हाथ पीले कर दिये जाए। विवाह की तिथि भी तय कर दी थी।'

सुखिया ने गहरी सांस भरी— हा, बीबी। दुखो की कोई सीमा नही। किस पर किस विपत्ति का पहाड़ टूटे, कोई नही जानता। उसने रोटी बनाकर कटोरदान में रख दी। फिर अपने को तयार करने के लिए चल पड़ी। जब सुखिया स्नान करके और कपड़े बदलकर तयार हुई तो तभी सास-ससुर घर में आये। यशोदा ने घर के चौके में खड़ी होकर कहा—'बहू, मैं तुमसे सुबह कहती थी न, इन आजकल के लड़को का कोई भरोसा नही। देख रामनरायन की लड़की रात से गायब है। वह हिमांशु है न वह उसे पढ़ाता था। रात से वह भी घर पर नहीं।'

सुनकर सुखिया चकित बनी—'पुलिस में रिपोर्ट कर दी होगी'

न बहू! लड़की का बाप रिपोर्ट करने तो जा रहा था परन्तु लोगो ने रोक दिया। लड़का भी तो कुटुम्बी था। एक जाय दिखाए तो नगी दूसरी दिखाए तो नगी

उस समय चौधरी घर में आया। बोला— रोटी दो। भूख लगी है।

तब सुखिया ने रोटी परोस दी और चौधरी के सामने रख दी।

यशोदा बोली—'आजकल गांव में क्या हो रहा है, यह मैंने बहू को बता दिया है।

चौधरी बोला—'तू तो पागल है। इतनी बडी दुनिया है। कुछ-न कुछ तो होगा ही। जब हवा ऐसी चल रही है, तो कौन रोक सकेगा ?' उसने कहा—'अभी चार दिन हुए मन्दिर पर भी एक घटना घटी थी। मन्दिर पर एक साधु आ गया था। किसी ने उसे मन्दिर के पीछे एक गड्ढे में पड़े देख लिया था एक लडकी के साथ। वह लडकी किसकी थी उसका तो नाम लिया नहीं गया। साधु को मारा पीटा। वह बेचारा चला गया।

'तो तुम उसे 'बचारा' कहते हो। उसका गला काट देना चाहिए था।'

'जी हां! तुम्हारा राज हो तो यही सब चलेगा। क्या लडकी का कोई दोष नहीं। जवान लडकियां दीवानी बनी फिरती हैं, गांव के गलियारों में। उन्हें भी तो मजा मिलनी चाहिए। लेकिन चोर चोर सब मौसेरे भाई' की कहावत चरितार्थ हो रही है। घर में बैठकर लोग शराब पीते हैं। बच्चे-बच्चियां सब देखते हैं। मुझे पता चल गया था कि वह लडकी किसकी थी। बाप ने जमाने भर के ऐब हैं। शराबी है, जुआरी है और दूसरों की बहू-बेटियां को हडप जाने वाला

यशोदा ने कहा—'रणजीत होगा?'

'अरी छोड न? तू तो बाल की खाल निकालती है। साला चार था, तुझे क्या!'

'अजी सोचना तो सबका पडता है। गांव की बेटी, सबकी बेटी'।'

'अब वह जमाना नहीं रहा।' चौधरी खडा हो गया।'मुंह साफ करके जब बाहर चला तो कहता गया, चिलम में आग रख देना। और उसने स्वर पर जोर दिया—'बहू तेरे स्कूल का समय हो गया। औरतें आने लगी है। हां, अशोक भी आ गया।'

अशोक' शब्द यशोदा के कानों में अटक गया। परन्तु उसने कहा कुछ नहीं। जब सुखिया सिलाई के कमरे में गयी, तो वह अशोक बोला '

सुखिया ने कहा—'रोटी तो कई दिन से ले जाते हैं। मुझसे तो आज कहा, नहीं तो चुपचाप निकालकर ले जाते थे।'

यशोदा का मन व्याकुल हो उठा। उसे कुछ सन्देह हुआ और चुपचाप घर से निकलकर तोता के घर की ओर चल पड़ी। गांव के बाहर जहां गड्ढा हुआ पानी भरा था, बदबू उठती थी, उसी के समीप तोता का घर था। घर क्या था, माटी का घरोंदा था। कोठरी के द्वार पर जाते ही, यशोदा ने देखा कि उसका पति रामदास उस बूढ़े तोता को बैठाकर अपने हाथ से रोटी खिला रहा था। यशोदा के लिए वह बड़ा ही अकल्पित दृश्य था। आखें भर आइं। वह अत्याधिक अनुभूति से आविभूत हो उठी। उसकी इच्छा आई कि अन्दर जाये, परन्तु वह बाहर से लौट पड़ी। उसे लगा कि उसका पति अब बदल रहा है। जीवन भर वह उसे जिस रास्ते से हटाने का प्रयत्न करती रही, अब वह स्वतः ही उससे हट रहा है। पशु भाव छोड़ रहा है और सात्विक स्थान प्राप्त कर रहा है। उसे पता था कि वह तोता नित्य ही मन्दिर पर जाता और चबूतरे पर एक तरफ बैठा आखें बन्द किये, दोनों हाथों की तालियां बजाता हुआ हरे रामा, हरे राम का जाप करता था। अब अधिक बूढ़ा हो गया है। अशक्त हो चला है। दिखाई भी कम देता है।

घर लौटकर यशोदा ने सुखिया को बताया कि अब तेरा ससुर सींग मारने वाला भैंसा नहीं रहा, सीधा-सादा आदमी बना है। उस तोता को अपने हाथ से रोटी खिला रहा है।'

सुखिया बोली—'अम्मा, समय सब कुछ कराता है। आदमी भी बदलता है।'

यशोदा बोली— मुझसे नहीं कहा और घर से चुपचाप रोटी ले जाकर तोता को खिलाई जाती है।

सुखिया हंस दी—'तुम रोज देतीं अम्मा! रोटी ले जाते देख झगड़ा करती।'

नहीं री! मैं ऐसी मूर्ख तो नहीं। यह तो पुण्य का काम था।

सुखिया बोली—'तुम भिखारी को तो दो चुटकी आटा दे नहीं पाती, रोटी कैसे ले जाने देती।

वात कड़वी थी, लेकिन साफ थी। यशोदा चुप रह गयी, उट नौकर के लिए रोटी लेकर खेत की तरफ चल दी। उसी समय बोली—'तू कहीं जाए, तो बाहर का कुण्डा लगा जाना। लख, तेरा घर घर जाना अच्छा नहीं लगता। अब तुझे घर का काम करने का भी समय नहीं मिलता। इस तरह कैसे काम चलेगा?'

मुखिया बोली—'अम्मा, जब तक काम करना शुरू किया है, तब इस ओर भी देखना पड़ेगा।'

यशोदा के मन में जो बात मन में लिए थी, जब वह कह उठी, तो वह चुप नहीं रही। वह यों बात सुनकर बोली—'तब तो घर का काम करने के लिए किसी नौकर या नौकरानी की दरकार होगी। अपने ससुर से कहना घर का इन्तजाम करें। मैं जंगल के खेत भी देखूं और घर का काम भी सम्भालूं, यह मुझ से नहीं होगा।' वह चली गयी।

तभी मुखिया के मन में आया, इस अम्मा को मगर —
नहीं। कोई आदमी मुझसे आकर बोल तो वह भी
लगता। वह अशोक आता है तो इस अम्मा की ।
गड़ता है। इसका बस नहीं चलता, मेरे पैरों में जंजीर
बन्द कर दे और ताला लगा दे दया, कितनी
घर पहुंच गयी। आखों में देख आई कि रोटा
और

जल्दी-जल्दी घर के काम निपटा कर जब मु
लिए धोती बदलने लगी, तो स्वतः ही बोला,
अम्मा! इनमें पट में चार रहता है। जब वह
सिलाई की मशीनें साफ करने लगी तो बोली, मैं
जाऊंगा। घर में विद्रोह ना होगा, बात का
नहीं सकती। वह जोरावर मेरे बहन पर ही आरम
क्या पता सरकार उसे कौन-सा दण्ड देगी।
जोरावर अब फांसी नहीं जा सकता, लम्बी सजा
लगा, तो जल्दी जेल से मुक्त कर दिया जा ।
सरकार ने बहुत से खूनी डाकू अवधि से पूर्व ही छोड़

दिया है और वे बाहर आकर अपना सरकार के काम करने लगे हैं सरकार के समक्ष उनके सुधार का लक्ष्य है, न कि प्रतिशोध का।

यह संयोग की बात थी कि उसी समय नीचे से जगधर की आवाज आई—'भाभी है क्या।'

ऊपर कमरे में सुखिया ने कहा—'ऊपर आओ, भैया।'

जगधर ऊपर आ गया। बोला— आज छुट्टी थी। तुम्हारा आवेदन पत्र जेल अधिकारियों के पास पहुंच गया। मिलाई करने वालों में ताऊ रामदास का भी नाम है।

सूक्ष्म भाव से सुखिया मुस्करा दी—भगवान जाने वह जायें या नहीं।

जगधर बोला—'मैंने नाम लिख दिया था। न जाय, उनकी इच्छा। उन्हें शायद तुम्हारा अकेले जाना पसन्द न आता।

सुखिया बोली—'भैया बड़ी कठिनाई है। अभी कुछ देर पहले अम्मा लड़कर गयी है। कहती है तेरा घर घर जाना शुभ नहीं। घर का काम कौन करे? उसने कहा कोई पूछे इनसे, सिलाई के स्कूल से जो पैसा आता है, वह तो उन्हें बुरा नहीं लगता और मेरा इस काम में लगना पसन्द नहीं आता। अब तो घर का आधा खर्च यह स्कूल वहन करता है। मुकेश की पढ़ाई का खर्च, मुझे देना पड़ता है।

जगधर बोला— भाभी, यह जंगली लोगों की बस्ती है। यह अच्छा हुआ कि तुमने अपने आपको ऊपर उठा लिया। इस बन्द घेरे से बाहर कर लिया। सचमुच, तुमने इस जीवन की धारा में अपने आपको पखारा है। तुम्हें वैधव्य तो मिला लेकिन किसी दूसरे जन्म के संस्कारों ने तुम्हें उजागर बनाया है।

सुखिया सहज भाव से मुस्करा दी। मोती सरीखे दांतों से हंस दी। तभी उसके मन में आया कि जगधर से कह दे, मैंने उस जोरावर को भी बर्बर और दुर्दान्त बने खूनी जीवन से बाहर निकाला है। वह मेरे अनुरोध पर ही आत्म समर्पण कर बैठा है। परन्तु मन का वह उद्गार वह रोक बैठी। वह तुरन्त ही समझ गयी कि मुंह से निकली बात उसके लिए काल बन जायेगी। यह जगधर गांव में फैला देगा और तिल का

बात कड़वी थी, लेकिन साफ थी। यशोदा चुप रह गयीं, वह नौकर के लिए रोटी लेकर खेत की तरफ चल दी। उसी समय बोली—'तू कहीं जाए, तो बाहर का कुण्डा लगा जाना। देख, तेरा घर-घर जाना अच्छा नहीं लगता। अब तुझे घर का काम करने का भी समय नहीं मिलता। इस तरह कैसे काम चलेगा?'

मुखिया बोली—अम्मा, जब तेरा काम करना शुरू किया है, तब उस ओर भी देखना पड़ेगा।'

यशोदा देर से जो बात मन में लिए थी, जब वह कह बैठी, तो वह चुप नहीं रही। वह तो बात सुनकर बोली—'तब तो घर का काम करने के लिए किसी नौकर या नौकरानी की दरकार होगी। अपने ससुर से कहना घर का इन्तजाम करें। मैं जंगल के खेत भी देखूं और घर का काम भी सम्भालूं, यह मुझ से नहीं होगा।' वह चली गयी।

तभी मुखिया के मन में आया, इस अम्मा को मेरा काम पसन्द नहीं। कोई आदमी मुझसे आकर बोले तो वह भी इसे अच्छा नहीं लगता। वह अचानक आता है तो इस अम्मा की आंखों में शूल की तरह गड़ता है। इसका बस नहीं चलता, मेरे पैरों में जंजीर डाल दे। कोठे में बन्द कर दे और ताला लगा दे। देखा, कितना चालाक है तोता के घर पहुंच गयी। आखों से रुख आदमी रोटी वहीं गयी है या नहीं और

जल्दी-जल्दी घर के काम निपटा कर जब मुखिया स्कूल में जाने के लिए धोती बदलने लगी, तो स्वतः ही बोली, मिजाज की नक्ची है, यह अम्मा! इसके पेट में चोर रहता है। जब वह ऊपर कमरे में जाकर सिलाई की मशीनें साफ करने लगी तो बोली, मैं जोरावर के पास जरूर जाऊंगी। घर में विद्रोह तो होगा, बात का बतंगड़ बनेगा, परन्तु मैं रुक नहीं सकती। वह जोरावर मेरे कहने पर ही आत्म समर्पण कर बैठा है। क्या पता सरकार उसे कौन-सा दण्ड देगी। जगधर बताता था कि जोरावर अब फांसी नहीं जा सकता, लम्बी सजा पायगा। चाल चलन ठीक होगा, तो जल्दी जेल से मुक्त कर दिया जायगा जगधर कहता था, सरकार ने बहुत से खूनी डाकू अवधि से पूर्व ही छोड़ दिए हैं, उन्हें समझा

दिया है और वे बाहर आकर अपना सरकार के काम करने लगे हैं सरकार के समक्ष उनके सुधार का लक्ष्य है, न कि प्रतिशोध का !'

यह सयोग की बात थी कि उसी समय नीचे से जगधर की आवाज आई—'भाभी है क्या !'

ऊपर कमरे में सुखिया ने कहा—'ऊपर आओ, भैया !'

जगधर ऊपर आ गया। बोला—'आज छुट्टी थी। तुम्हारा आवेदन पत्र जेल अधिकारियों के पास पहुंच गया। मिलाई करने वालों में ताऊ रामदास का भी नाम है।

सूक्ष्म भाव में सुखिया मुस्करा दी—भगवान जाने, वह जायें या नहीं।

जगधर बोला—'मैंने नाम लिख दिया था। न जाय, उनकी इच्छा ! उन्हें शायद तुम्हारा अकेले जाना पसंद न आता।

सुखिया बोली—'भैया बड़ी कठिनाई है। अभी कुछ दिन पहले अम्मा लौटकर गयी हैं। कहती हैं, तेरा घर-घर जाना शुभ नहीं। घर का का काम कौन करे ?' उसने कहा था पूछ इनसे, मिलाई में स्कूल से जो पैसा आता है, वह तो नेक बुरा नहीं लगता और मेरा इस काम में लगना पसन्द नहीं आता। अब तो घर का आधा खर्च यह स्कूल वहन करता है। मुकेश की पढ़ाई का खर्च, मुझे देना पड़ता है।

जगधर बोला—भाभी, यह जंगली लोगों की बस्ती है। यह अच्छा हुआ कि तुमने अपने आपको ऊपर उठा लिया। इस बन्द घेरे से बाहर कर लिया। सचमुच, तुमने इस जीवन की धारा में अपने आपको पखारा है। तुम्हें वैधव्य तो मिला लेकिन किसी दूसरे जन्म के संस्कारों ने तुम्हें उजागर बनाया है।

सुखिया सहज भाव से मुस्करा दी। मोती सरीखे दांतों से हंस दी। तभी उसके मन में आया कि जगधर से कह दे, मैंने उस जोरावर को भी बर्बर और दुर्दान्त बने खूनी जीवन से बाहर निकाला है। वह मेरे अनुरोध पर ही आत्म समर्पण कर बैठा है। परन्तु मन का वह उद्‌गार वह रोक बैठी। वह तुरन्त ही समझ गयी कि मुंह से निकली बात उसके लिए काल बन जायेगी। यह जगधर गांव में फैला देगा और तिल का

आदमी या तिनके की तरह तोड़ा, वहां रहकर वे गिड़गिड़ाते रहते हैं, याचक की तरह दांत निपोरते हैं काश, उसी जेल में सुखिया पहुंच पाती। अब वह उस दिन को वापस फिर कर नहीं देख सकती कि जब सर्वप्रथम जोरावर उसके पास आया था। वह उसके विवाह के पूर्व ही डाकू बन चुका था। किन्तु जब सुखिया सुहाग की चूड़ी पहनकर उस का पति मलखू जोरावर का हाथ पकड़े वहां आया था। उसने सुखिया को बताया था यह है, तुम्हारा देवर। नाम जोरावर। चाचा का लड़का है।

सुनते ही सुखिया मुस्करा दी—'अच्छा तो तुम्हीं हो, इन्सान को गाजर मूली की तरह काट देने वाले।'

जोरावर बोला—'यह बात तो फिर कभी की है, भाभी! अब तो मेरा प्रणाम लो। यह भेंट लो।' और उसने रेशमी रुमाल में बंधे सोने के रत्नजड़ित कंगन सुखिया की ओर बढ़ा दिये थे। उन कंगनों को देख, सुखिया ने कहा—'मुझे डर लगता है।'

'किससे? इन कंगनों से, या मुझसे?'

सुखिया लजा गयी—'तुमसे तो डर नहीं लगता। इन कंगनों से लगता है। जाने किसके हैं? यहां मैं आये हैं? किसके होंगे? वह मार दी होगी, उसका खून कर दिया होगा।'

जोरावर हंसा—'नहीं, भाभी! यह तो एक सूदखोर की तिजोरी से आये हैं। वह जरूर मारा गया। मेरी पिस्तौल की एक ही गोली से उसका काम तमाम हो गया।'

'हे राम! बड़े पत्थर हो तुम! लगते तो ऐसे नहीं।'

मलखू पास खड़ा था। बोला—'दिल का कोमल है, यह जोरावर! हमारे बापों ने दो घर कर दिये थे। मैं तो चाहता, इन दो घरों की दीवार तोड़ दी जाय। दो घर एक हो जायें।'

जोरावर बोला—'समय आयेगा तो ये घर एक बन जायेंगे। बीच की दीवार गिरा दी जायगी।'

सुखिया हर्षित हो उठी—'बड़ा शुभ दिन होगा वह' उसने कहा—'और करनी होगी। यह डाकू का पेशा भी छोड़ देना पड़ेगा।'

ताः बनाकर दहगा कि मै उम जाराव- को प्यार करती हू। उसी समय तीन-चार युवा लडकिया और बहुए आइ। जगधर उठ चला। जाते-जाते बोला—'जब आवेदन का उत्तर आयेगा, तो मैं खबर कर दूगा। वैसे अब म जल्दी नही आ पाऊगा। शायद मेरा तबादला अयत्र हो जायेगा। अब पत्नी को गाव म छोड जाऊगा। वह भी तुम्हारी शिष्या बन जायेगी। अच्छा है सिलाई का काम सीख लेगी।'

मुखिया बोली—'यह धधा बुरा नही। मैं स्वय बीस रुपये नित्य कमा लेती हू। दो ब्लाऊज तैयार कर दिये तो इतने रुपये कही नहीं गये। स्कूल से जो फीस मिलती है, वह अलग। कुछ बहुए और लडकिया मुफ्त म काम सीखती हैं। वे गरीब ह और छोटी जाती की ह। सरकार ने जो सहायता दी, उससे मशीन और इसका सामान आ चुका है।'

गदगद् बनकर जगधर बोला—'भाभी, तुम अपूर्व हो। समूचा गाव तुम्हारी प्रशसा करता है।' उसन कहा—'बुरा न मानो तो एक बात कहू, तुम्हें ससुराल अच्छी नही मिली। य सास-ससुर दखन म हाड चाम क आदमी तो हैं, लेकिन ह पशु! तुम्हारा ससुर तो पूरा जगली ह। सास ईर्षालु और कुटिल।'

मुखिया न गहरी सास भरी और छोड दी। जब जगधर वहा स जाने लगा, तो वह उस बडे रहस्यमय ढग से देखती रह गयी। जब तक वह सीढिया से उतरा नही, मुखिया उसके जूतो की पद चाप सुनती रही। उसी समय एक युवा लडकी बोली—'इस जगधर की बहू भी सिलाई का काम सीखेगी, कल कहती थी।

मुखिया ने कहा—जो भी आये उसका स्वागत ह।

किन्तु उस समय वह यौवनमयी मुखिया गाव से दूर, कल्पना के सहारे उस जेल के द्वार पर जा पहुची थी जिसके अदर जाराव- का जीवन व्यतीत कर रहा था। वह लौह द्वार कितना कठोर था कि मुखिया अपनी शक्ति लगाकर भी उसे नहीं खोल सकती थी। वह कभी किसी जेल के द्वार पर नही गया। परन्तु सुन रखा था कि वहा हथियार बन्द सिपाही रात दिन पहरा लगात ह। कोई परिन्दा भी वहा पर नहीं मार सकता। उस जेल म हजार कैदी बद रहते हैं। जिनमें कभी

आदमी को तिनके की तरह तोडा, वहां रहकर वे गिडगिडाते रहते हैं, याचक की तरह दांत निपोरते हैं काश, उसी जेल में सुखिया पहुंच पाती। अब वह उस दिन का चापग फिर कर नहीं देख सकती कि जब सर्वप्रथम जोरावर उसके पास आया था। वह उसके विवाह के पूर्व ही डाकू बन चुका था। किन्तु जब सुखिया सुहाग की चूडी पहनकर उस का पति मलखू जोरावर का हाथ पकडे वहां आया था। उसने सुखिया को बताया था यह है तुम्हारा देवर। नाम जोरावर। चाचा का लडका है।

सुनते ही सुखिया मुस्करा दी—'अच्छा, तो तुम्ही हो, इन्सान को गाजर मूली की तरह काट देने वाले।

जोरावर बोला—'यह बात तो फिर कभी की है भाभी ! अब तो मेरा प्रणाम लो। यह भेंट लो।' और उसने रेशमी रूमाल में बंधे सोने के रत्नजडित कंगन सुखिया की ओर बढा दिये थे। उन कंगनों को देख, सुखिया ने कहा—'मुझे डर लगता है।'

किससे ? इन कंगनों से, या मुझसे ?

सुखिया लजा गयी—'तुमसे तो डर नहीं लगता। इन कंगनों से लगता है। जाने किसके हैं ? कहां से आये हैं ? किसके होंगे ? वह मार दी होगी, उसका खून कर दिया होगा।'

जोरावर हंसा—'नहीं, भाभी ! यह तो एक सूदखोर की तिजोरी से आये हैं। वह जरूर मारा गया। मेरी पिस्तौल की एक ही गोली में उसका काम तमाम हो गया।

'हे राम, ! बडे पत्थर हो तुम ! लगते तो ऐसे नहीं।'

मलखू पास खडा था। बोला—'दिल का कोमल है, यह जोरावर ! हमारे पापा ने दो घर कर लिये थे। मैं तो चाहूंगा, इन दो घरों की दीवार तोड दी जाय। दो घर एक हो जायें।'

जोरावर बोला—'समय आयेगा तो ये घर एक बन जायेंगे। बीच की दीवार गिरा दी जायगी।'

सुखिया हर्षित हो उठी—'बडा शुभ दिन होगा वह' उसने कहा—'एक बात और करनी होगी। यह डाकू का पेशा भी छोड देना पड़ेगा।'

'हां, भाभी! समय आयगा तो यह भी छूट जायगा। भगवान की इच्छा सर्वोपरि है। उसी के निर्देश पर हमारी जिंदगी का कारवां चलता है।'

बलात सुखिया उस भूतकाल की बात को एकाएक छोड़ बैठी। एक लड़की उसके पास आकर खड़ी थी और कह रही थी, 'बहिन जी आप मेरी बहिन की फ्राक सी देना। उसका क्या देना होगा, बता देना।'

सुखिया जैसे आसमान से धरती पर आ गिरी हो। चौंककर लड़की की ओर देखने लगी। तब भी वह उस जाग्रत स्वप्न में खो रही थी। जोरावर नित नित उसकी ओर बढ़ रहा था। वह बरबस ही उसके प्राणों में घुस जाना चाहता था। वह जवान और बलिष्ठ तो था ही, सुंदर भी था। सुखिया जब-तब उसे देखती, अपने समक्ष उसे खड़ा पाती, तो वे क्षण उसे अलभ्य लगते। मानो वे उसके जीवन के श्रेष्ठ पल थे। उसे विधाता ने उसे सौगात के रूप में दिये थे। किन्तु सुखिया अपने उन दिनों को सहेज कर प्राणों के परकोटे में छुपाकर रख सकती थी। किसी को बताने या दिखाने की स्थिति में नहीं थी। और जब उसने स्वयं जोरावर के मुंह से यह सुन पाया कि वह एक कुमारी से विवाह कर चुका है। उसी का पुत्र सुखिया का भतीजा है, तो तब उस यौवनमयी सुखिया के मन लोक में हा-हाकार तो उठा, वह उसे रोमांचित भी कर बैठा, परन्तु उस पीड़ा को, अपने मानस के अभाव को एक बार भी जोरावर को नहीं बताया। उस पर यह प्रदर्शित या प्रकट नहीं किया कि वह भी उसे प्यार करती है वह भी नारी की अनुभूति और अभिसार की भावना उसे समर्पित कर चुकी है। सुखिया के मन का और जीवन का यह संयम अपूर्व तो था ही, निस्पृह भी था। कदाचित इसी भावना के सहारे वह जोरावर के बच्चे को छाती से लगा बैठी थी उसे पाल पोस रही थी।

सामने खड़ी लड़की ने फिर कहा—'हां, क्या कहती हो बहिनजी! कुछ सोच रही हो।'

सचमुच सुखिया लजा गयी। उस लड़की से बोली—'हां, क्या कहा तुमने!'

लड़की ने कपड़ा दिखाकर कहा—'इस फ्राक की बात। क्या देना होगा।'

मुखिया ने कहा—'आज बना दूंगी। जो कुछ दोगी तेरी मां, ले लूंगी।' और वह बरबस मुस्करा कर रह गयी।

20

वह दिन तो मुखिया के लिए नितान्त अपूर्व था। जब ग्राम से कस्बे में उसे एक आयोजन में आमन्त्रित किया गया। वहां जिले से अनेक विशिष्ट सरकारी अफसर उपस्थित थे। गांव के भी कई जमींदार पहुंचे हुए थे। चौधरी विक्रम और उसका पुत्र भी था। एक मन्त्री ने मुखिया को पांच हजार रुपये का चेक प्रदान किया और कहा, यह युवती हमारे समाज की शोभा है। जिस प्रकार इसने अपने आक्रामक को पकड़ा, वह एक सराहनीय कार्य था। मन्त्री ने नारी समाज का आवाहन किया और चाहा, समाज में नारियां अपना पौरुष प्रदर्शित करें। गुण्डों का सामना करें, उन्हें आगे न बढ़ने दें।

मुखिया के साथ चौधरी रामदास और मुकेश भी था। जब वे उस जलसे से लौट चले, तो तभी मुखिया बोली—'पिताजी आज कस्बे में आये हैं तो कुछ खरीद लें। तुम्हारा कुरता फट रहा है। सिर का दुपट्टा भी जीर्ण हो चला है कुछ कपड़ा खरीद लिया जाय। यह मुकेश जब कालेज जाने लगा है, तो इसे भी शऊर का कपड़ा चाहिए।

रामदास बोला 'जब गेहूं घर में आया है। कुछ बेच दिया जायगा। जब पैसा आयेगा, तो तब कुछ खरीद लिया जायेगा। इस मुकेश की मां के पास भी धोती नहीं, तो उसे भी कुछ लिया जायेगा।'

मुखिया ने कहा—'दुकान पर चलो। रुपया मेरे पास है। गांव से चलते समय मुझे ध्यान था।' और वह स्वतः ही बजाज की दुकान की

सरप धन चली। तब रामदास अवरोध नहीं कर पाया। स्पष्टत वह अभावग्रस्त था। गत रात में ही वह यशोदा से घर के अभाव की बात कर रहा था। तब यशोदा ने कहा था, 'रुपया तो है—बहू के पास। इतना कमाती है हर माह, वह कहा जाता है। कुछ थोड़ा सा देती है जरूरत पड़ने पर। तब रामदास ने कहा था, 'मैं बहू से कुछ नहीं माग सकता। उसके परिश्रम का पैसा है वह उसी का है।' यह सुनकर यशोदा कुण्ठा से भर उठी थी। वह तुरन्त बोली, 'चौधरी विक्रम ने पाच हजार दिया, वह भी उसी पर है। तुम धर्मात्मा बनने से क्या नहीं चलेगा, तुमने बहू का बहुत सिर पर चढ़ा लिया है। यह देती हूं एक दिन तुम्हें मूड पकड़कर रोना पड़ेगा।

यह सुनते ही, चौधरी रामदास क्षुब्ध हो उठा था। तुरन्त बोला—'तू मूर्खा है। तेरे मन में ईर्ष्या है, कुण्ठा है। देखती नहीं, बहू की जवानी पानी में बही जा रही है। उसका पति चला गया। भरी जवानी में विधवा बना गया। उस पर तरस खा।'

यशोदा तुनक उठी—'आ हा तुम्हें बहू की जवानी और विधवा बनने की बात तो उठा दी। कभी यह भी सोचा, जिस लड़के को मन नौ मास पेट में रखा, पाला-पोसा वह मेरी छाती पर घूसा मारकर चला गया। मेरे मन की पीड़ा किसी ने समझी है।'

उस समय सुखिया घर की दहलीज में खड़ी थी। वह सास श्वसुर की बातें सुगमता से सुन रही थी।

तभी यशोदा ने कहा—'तुम्हारी बहू की करतूतें मेरी देखी-सुनी हैं। तुम्हें तो लाज आती नहीं, परन्तु मैं अपना मास रोके पड़ी हूं। तुम्हारे भाई का लड़का जोरावर कब कब यहा आया है यह मैं सब देख चुकी हूं। लेकिन चुप रही। अपने दुरदिनों की मार से स्वयं घायल बनी हूं।

आश्चर्य, चौधरी रामदास तब भी चुप था। वह अपने क्रोधी स्वभाव के विपरीत बना शान्त भाव से हुक्के में घूट भर रहा था। यशोदा पति से कुछ नहीं सुन पायी, तो वह स्वयं ही बोली — रहे हैं, घर की यह अवस्था रही, तो वह सभी को

'पिताजी ! सुखिया का स्वर बाहर आया ।

'अरी, उठ न ! देख, कितना दिन चढ़ आया । आज कस्बे में भी जाना है ।' रामदास जहरीला घूंट भर बाहर की तरफ चल दिया । उसने घर की ड्योढ़ी में खड़े होकर कहा— जरा मेरी चिलम में आग रख दे । एक प्याला चाय भी दे दे ।' वह बाहर चबूतरे पर जा बैठा । निश्चय ही उस समय उसे सुखिया का सोते रहना नितान्त अशुभ लगा । परन्तु वह थक चुका था । बाप बूढ़ा हो गया था । अब उसके मुंह में दांत नहीं रह गये थे । फुफकारना भी उसकी शक्ति से परे था ।

जब यशोदा चिलम भर कर लायी तो तभी रामदास बोला - तेरी सब बात सही है, यशोदा ! मैं भी सब कुछ देखता हूं । वह अब हमारी पकड़ से बाहर है । देख, आज जिस आयोजन में यह निमन्त्रित की गई है वह भी अपूर्व है । ऐसा सौभाग्य प्रत्येक औरत को नसीब नहीं होता, तू चुपचाप अपना रास्ता तय कर ले । मैं भी बूढ़ा हूं । एक-न-एक दिन इस घर की बागडोर इस बहू के हाथ में आयगी । इसी को यह घर चलाना पड़ेगा । जा एक प्याला चाय और ले आ । कलेजा निकला जा रहा है ।

यशोदा बोली— चूल्हे में आग सुलगा दी है । जब शहर जाना है तो चार पराठे बना दूंगी, एक दो खा जाना । अचार रख दूंगी । मुकेश भी तो जायेगा । भाभी-देवर में रात बातें चल रही थीं मेरी कोई बात माने या न माने, भाभी की बात जरूर मानेगा । कालेज जाता है, तो भाभी से कुछ पूछ ले जाता है ।'

'यह अच्छा है । भाभी-देवर का व्यवहार मधुर हो, तो इस घर के लिए शुभ रहेगा । वह हुक्का पीने लगा ।

जब यशोदा घर में लौटी तो विस्मित बनकर देखने लगी, मुकेश चूल्हे के पास बैठा भाभी के साथ हंस बोल रहा था और चाय के साथ पराठा खा रहा था । वह कह रहा था—'आज मुझे पैन्ट का और बुशशर्ट का कपड़ा दिलाना, भाभी ! अब मैं अच्छे कपड़े का पैन्ट लाऊंगा । गांव के दर्जी का कपड़ा नहीं लूंगा ।'

तब सुखिया कह रही थी—'अच्छा अच्छा, तू मनपसन्द कपड़ा ले

नेना। अपनी इच्छा मत मारना।'

तभी यशोदा पास पहुचकर बोली—क्या रे, पिताजी को चाय नही देगा। चाय के साथ पराठा भी देकर आ खुद। खाने बैठ गया। स्वार्थी कही का!

मुकेश तो कुछ बोला नही, लेकिन सुखिया ने कहा—तुम पिताजी से बातें कर रही थी। अब दे आयेगा। ला, अब तुम आ गई हो तो दे आओ। यह खाते हुए क्या उठेगा?' उसने प्याले में चाय और तश्तरी में पराठा रख दिया। जब यशोदा बाहर की ओर चली, तो मुकेश बोला—देखा भाभी, मा को पिताजी का ध्यान रहता है हमारा नही।'

सुखिया हस पड़ी—'ऐसा ही होता है रे! पति पत्नी का सम्बन्ध अधिक निकट का होता है। किसी ने कहा तो है, मा के बाद पत्नी ध्यान रखती है अपने पति का, कोई और नही।'

मुकेश बोला—'ये सब स्वार्थ का सम्बन्ध है, भाभी!'

'अरे स्वार्थ तो सब कुछ है ही! यह संसार इसी भावना पर टिका है। यह अशुभ नही। स्वार्थ ही प्रेम पैदा करता है। यही तो लगाव है, एक दूसरे को आकर्षित करने का। ले, एक पराठा और ले जा पिताजी को।'

जब मुकेश पराठा लेकर बाहर गया तो देखा, वहाँ पिता के पास एक-दो व्यक्ति आ बैठे थे। वे सब नगर में सम्पन्न होने वाले आयोजन की चर्चा कर रहे थे। एक आदमी यशोदा से कह रहा था, तुम भी चलना, चाची! तुम्हारी बहू ने इस घर का तो मुह उजाला किया ही, गाव भी उजागर कर दिया। इस आयोजन का समाचार सभी अखबारों में निकलेगा। तुम्हारी बहू का फोटो भी छपेगा।' वह बोला—'इसे कहते हैं समय की बलिहारी। तुम्हारी बहू को भगवान ने ऐसा साहस दिया, अपना पौरुष प्रदर्शित किया, यह कम साहस की बात नही थी। कोई दूसरी औरत होती, तो छुरा खाकर भी मुह न उठा पाती। भय से स्वय ही मर जाती।

रामदास ने चाय पी ली और पराठा खा लिया। वह यशोदा की ओर देखकर बोला—'बहू से कहो, तैयार हो जाये। दस बजे का समय

रहा है। हम जल्दी पहुंचना है। नदी पर नाव का इंतजार करना पड़ेगा।'

उससे कहा गया—'चौधरी विक्रम भी तो जायगा। उसकी मोटर में जाना। गाड़ी तो पुल से जायेगा।'

'नहीं भया ! वह बड़ा आदमी है। हमें तो अपनी औकात देखकर चलना पड़ेगा।'

अजी, उसके लड़के की बदौलत तो यह सब हो रहा है। वह गुण्डे को न भेजता तो क्या यह सब होता। उसने भाग्य ही बदल दिया तुम्हारा। इसे कहते हैं, बुलन्दी पर चमकता सितारा।'

रामदास ने बात सुन ली, चुप रह गया। आगंतुक एक-एक कर लौट गये। उसी समय मुकेश घर में आया और बोला—'चलो चाचा ! भाभी तैयार हैं।

चौधरी ने जूती पहन ली, सिर पर दुपट्टा रख लिया और हाथ में लाठी लेकर चल दिया। तीनों नदी की ओर बढ़ चले। जब वे सब मोहल्ले से निकले तो कई औरतों ने सुखिया को टोका, 'अच्छा जा रही है, तू ! मिठाई लाना। अकेली मत खा जाना।

जब यह आयोजन समाप्त हुआ और सुखिया पिता-पुत्र को लेकर बजाज की दुकान पर पहुंची, तो उसने कई सौ रुपये का कपड़ा खरीदा। यशोदा के लिए एक रेशमी साड़ी ली एक सूती। पिता-पुत्र को कपड़ा दिलाने के साथ अपने लिए भी एक धोती खरीद ली। राहुल के लिए भी नेकर और कमीज का कपड़ा। उस समय रामदास चुप था। घर में कपड़े की आवश्यकता थी, यह वह अनुभव कर रहा था। परन्तु बहू अपने लिए और सबके लिए कपड़े ले रही थी, यह सब उसे पसन्द न था। मानो उसके घर में एक नया दस्तूर शुरू हो रहा था। यह उसके पुरुषत्व पर और स्वाभिमान पर चोट कर रहा था।

जब वे लौट चले तो मुकेश बोला—'भाभी मिठाई नहीं लोगी। परसाद तो बाटोगी न !'

'किस बात का रे ?'

'वाह, तुम्हें बहादुरी का इनाम मिला है। इसकी खुशी तो सबको

होगी न !'

'अच्छा रे ! बोल क्या लगा ? देख, वह है हलवाई की दुकान । सेर भर जलेवी ले ले ।'

'नहीं भाभी ! जलेवी नहीं कलाकन्द ।'

'अरे कलाकन्द कितनों को बांटेगा ।' रामदास बोला— थोड़ा परसाद मंदिर पर भी चढ़ा आना । बूंदी ले ला ।'

मुखिया ने पर्स निकाले और मुकेश से कहा—'दो सेर लेना । तुझे कलाकन्द पसन्द है, तो वह भी ले लेना ।'

दिन ढलते वे सब गांव में लौट आए । घर पर आते ही यशोदा ने एक लिफाफा मुखिया के हाथ पर रखा, यह जेल से आया है । जोरावर ने कुछ लिखा होगा । देख तो क्या लिखा है ।'

मुखिया ने लिफाफा खोलकर देखा । जेल अधिकारी का पत्र था । जोरावर से मुलाकात के लिए दिन और समय नियत किया था । तब मुकेश ने भी वह पत्र पढ़ा और सबको आगत पत्र का उद्देश्य बता दिया । सुनते ही यशोदा बोली—'हाय राम ! अब यह बहू जेल पर भी जाएगी । वहां क्या भले घरों की औरतें जाती होंगी ।'

पत्नी की बात सुनते ही रामदास बोला— अरी पगली ! अब तू इस बहू को पहली आंखों से मत देख । आज मन्त्री कह रहा था । ऐसी बहादुर औरतों को घर से बाहर निकलकर जनता का काम करना चाहिए । उन्हें जनता के वोटों से जिताकर असेम्बली में भेजना चाहिए ।'

उस समय मुखिया घर में जा चुकी थी । वह देख रही थी कि कई सौ रुपये बात-की-बात में चले गए । कपड़ा भी आना था । जो पैसा वह बचाकर लाई वह उसी स्थान पर सुरक्षित रूप से रख दिया गया कि जहां उसका संचित कोष था ।, वह कमरे के एक कोने में माटी हटाकर हंडिया में रखा गया था । उसी हंडिया में शेष रुपये रखकर वहां माटी का समवार कर दिया और अपने आप कहा, यह रुपया यहां नहीं रखना चाहिए । यह स्थान सुरक्षित नहीं । सब पैसा बैंकों में डालना पड़ेगा ।'

उसी समय घर के बाहर चबूतरे पर पति पत्नी में विवाद चला

था, वह जेल पर जाय या नहीं। पति रा मत था, जाएगी। लेकिन यशोदा अपनी बात पर अड़ी थी वह गयी, तो मैं अपने प्राण दे दूगी। तुमने बहुत छूट दे दी है, इस औरत को। अब नाक कटने म देर नहीं।'

लेकिन रामदास का मत था—नाक तो कट चुकी, अब इस घर की बागडोर भी बहू के हाथ म चली गई।

21

घर म चले लम्बे विवाद और विग्रह न एक गहरी खाई खोद दी थी उस खाई के एक किनारे मुखिया थी और दूसरी ओर यशोदा। पुराने और नये विचारों का संघर्ष ही उस घर म विवाद का कारण बना था। रामदास दुमुई की तरह कभी बहू की ओर झुकता कभी अपनी पत्नी यशोदा की ओर। उस विवाद की जड़ म था जोरावर। यद्यपि अब वह जेल मे बन्द था, परन्तु यशोदा को लगता कि वह कालकूट की तरह उस घर का अस्तित्व समाप्त करने पर तुला था। उसके बेटे की बहू को जोरावर साफ सटक जाना चाहता था। वह उसके प्रभाव म थी। यद्यपि यशोदा ने कई बार सुखिया से कहा था कि वह जोरावर चोरी छुपे घर म आता है, मुझे अच्छा नहीं लगता। वह डाकू है। खूनी है। दुराचारी है। मेरा लड़का मर गया तो इसका यह अर्थ नहीं कि इसकी विधवा बहू के मन पर कोई दूसरा छा जाये। लुक छुपकर उसके पास आकर बैठे।

लेकिन जब-जब यशोदा ने अपना प्रतिरोध व्यक्त किया, तो तभी तब सुखिया ने साफ कहा—'जोरावर डाकू है तो, खूनी है तो है तो अपना ही अंश। भेद है। सगा-सहोदर है। उसे कैसे रोका जाय। किस मुंह से कहा जाय। एक बार उसने साफ कह दिया था—'अम्मा, जोरावर को तुम रोक सकती हो तो रोक दो। मैं कुछ नहीं कहूंगी।

और बहू की उस स्पष्ट बात को सुन यशोदा क्षुब्ध हो उठी थी—'हां, तू क्यों कहेगी। रांड, सांड, सन्यासी की कहावत तो जानी पहचानी है। मैं समझ गई, तू भी इस घर का मुह काला करेगी।

उस दिन सुखिया स्वभाव के विपरीत चीख उठी थी—'मां, ऐसी अशुभ बात मुह से मत निकालो। लाज-लाज को ताक पर मत रख दो।

सुनते ही यशोदा ने अपने माथे में हाथ मारा—'हाय राम! कैसा चीखती है। देखो, तो कैसी जबान चलाती है। और वह स्वतः ही उस विवाद को बीच में छोड बाहर दरवाजे पर जा बैठी थी। तब यह बात यशोदा ने और चौधरी रामदास ने भी तक मन से नहीं निकाली कि सास बहू के उस विवाद में दो दिन तक उस घर के क्षितिज पर विषाद के काले बादल मंडराते रहे थे। यदि रामदास मध्यस्थ न बनता, तो सुखिया न तो रोटी खाती और न ही घर का कोई काम कर पाती। वह दो दिन तक भूखी पड़ी रही। न घर में झाड़-बुहारू दी, न रोटी बनाई। लेकिन तीसरे दिन स्वयं रामदास ने स्थिति को सम्भाला। बहू को समझाया। उस अवसर पर यशोदा को भी बुरा भला कहा। यद्यपि वह स्वयं जंगली था लड़ाकू स्वभाव का था, परन्तु उस दिन पूरा व्यावहारिक और राजनीतिक बनकर अपने-आपको घर का सरपंच सिद्ध करने में सफल बना था। उस अवसर पर वह सुखिया की भावना का समर्थक भी था और विरोधी भी। जोरावर उस परिवार का अंग था। इसलिए उसका बहू के पास आने का अधिकार था, परन्तु उसका यह भी मत था कि वह मेल बेकार है जो कान फाड़े डाकू और खूनी जोरावर इस परिवार के लिए शुभ नहीं हो सकता। वह जिसके पास बठेगा। वह भी कानूनी अपराधी बनेगा। पुलिस उसे बख्शेगी नहीं। साप से खेलने का अर्थ था, अपने प्राणों को खतरे में डालना

लेकिन वह बीती बात अब भुला दी गई थी। जब जोरावर से जेल में मिलने की बात आई सुखिया ने चुपचाप ही जेल अधिकारियों को आवेदन पत्र भेजा, तो तब सध्या के झुरपट में जब रामदास रोटी खाकर हुक्का पी रहा था, यशोदा ने पास आकर कहा—'देखा, यह है बहू का रंग रूप! मैं कहती थी, चुप-चुप जोरावर की ओर इस बहू की साठ-

गाठ चलती थी न जाने आपस म क्या कुछ कहा जाता था । अब जेल पर जाकर उससे मिलन की बात सूझी है। जिस बात को गाव नहीं समझता था । अब समझ जायेगा । घर म न तुमसे सलाह की, न मुझसे झट से लिखकर भेज दिया यह कई लडके पास आकर बैठते हैं, वे ही यह सलाह देते होगे इस घर मे आग लगे और वे हाथ सेकें, पर भला किसे बुरा लगेगा

रामदास उठकर बैठ गया और बोला— अब तू यह मता, जब हाथी के दात बाहर निकल आते ह, तो वे क्या फिर अन्दर हो जाते है अब वह इस घर के दायरे से बाहर निकल चुकी है। सुना नही सापन जो बच्चे देती है उसम से कुछ खा जाती है। जो बच्चे उसकी कुण्डली मे बाहर निकल जात ह, वे बचे रहत है । वे नाग बनत ह और इन्सान के लिए काल सिद्ध होते है । बस, समझ ल, तेरी यह बहू इस घर की कुण्डली से बाहर जाकर न तेरी बात सुनेगी न मेरी । मैं भूला नहीं हू इस बात को, जब इस जोरावर के नाम पर बहू न दो दिन तक रोटी नही खाई थी। घर म क्लेश किया था । मैंने तभी समझ लिया था, अब इस घर की हवा बदल गई । म बूढा हो गया, तू बुढिया। जब इस घर के दिन सीधे होने, तो तुम्हारा हाथी सरीखा बेटा कैसे मर जाता । इस घर का चिराग तो उसी दिन बुझ गया था '

जसोदा बोली— तो तुम्हारा मतलब है बहू का जेल पर जाना होगा । उस डाकू स मिलना जरूरी होगा ।'

रामदास न गहरा सास ली—'हा मलख की मा । अब हालात बदल चुकी है ।'

'तो अकेली जाएगी या साथ म कोई और ?'

रामदास बोला—'अर्जी म मेरा नाम लिखा है । मुझको ही जाना पडेगा ।'

'तो तुम भी मिलोगे उस खूनी से ।

'नहीं नही यह मुलाकात करेगी । मैं तो उसकी सूरत भी देखनी नहीं चाहता ।

'उसके मा-बाप नहीं जाएगे क्या ?

रामदास क्षुब्ध हो उठा—'और कोई नहीं जाएगा। बाप तो जेल के नाम से डरता है।'

यशोदा ने चुटकी ली—'पेट की कमाई तो खूब खाई। वह दौलत जमीन में दाबकर रख ली। शर्म नहीं आई, डाकू का माल खाते।'

'ओ-हो ! तू तो बाल की खाल निकालती है। रामदास बोला—'जोरावर तुझे कुछ देता तो क्या फेंक देती ? पैसा सभी को प्यारा होता है।'

'और लोग क्या कहेंगे, जब सुनेंगे कि तुम वहाँ को चलकर जेल पर गए हो, उस जोरावर से मिलने।'

रामदास तीखा हो उठा—'तो मैं क्या करूँ ? कह दिया अब इस घर की बागडोर मेरे या तेरे हाथ में नहीं, बहू के हाथ में है। आज कई सौ रुपये का कपड़ा लाई है। मेरा-तुम्हारा दलिद्दर भी दूर कर दिया। मेरा दो कुरतों का कपड़ा है। साफा अलग है। तेरी भी दो धोतियाँ हैं, ब्लाउज का कपड़ा भी। मुकेश तो उछलता है कि अब उसकी पैंट बनेगी और बुशशर्ट। वह भी एक नहीं दो दो। मैंने कहा भी, इतना खर्च करना ठीक नहीं, तो बहू ने कहा—'यह मुकेश कपड़े जल्दी फाड़ता है। खेलता-कूदता है। बहू ने अपनी भी एक या दो साड़ी ली थी।'

यशोदा ने साँस भरी—हाँ, यह सब तो है परन्तु मेरा कलेजा दहलता है। यह बहू तेजी से उस जोरावर की तरफ जा रही है। इतना तो समझती है कि अब वह बाहर नहीं आएगा। फाँसी नहीं पाएगा, लम्बी सजा तो पाएगा। वह मरने से पहले बाहर नहीं आ सकेगा।

रामदास ने भी साँस खींची और कहा—हाँ, हालात तो ऐसे ही है। बहुत अपराध हैं उसके नाम पर।'

'क्या जी यह क्या सूझी उसे कि आत्म समर्पण कर बैठा। उस दिन गाँव के बाहर पुलिस के घेरे में आकर भी निकल गया। कई सिपाहियों को घायल कर गया।

रामदास बोला—'उनमें से एक सिपाही तो अस्पताल में मर गया था।'

'हाँ, यही तो। पुलिस भी उसके नाम से घबराती थी। यह भी

सुना था कि कुछ पुलिस वाले उसकी मदद करते थे।

'बेशक ! यह बात सही थी।' रामदास बोला—'पिछले साल जब थानेदार की लड़की का विवाह हुआ, तो जोरावर ने लड़के को स्कूटर दिया था। वह शायद दस हजार से ऊपर आया था। लड़की को साड़ी और हाथ की सोने की चूड़िया दी।'

तो उसने दरोगा की लड़की के विवाह की दावत भी खाई होगी ?'

क्या नहीं ? मैंने तो सुना उस रात में उसने साथियों सहित खूब शराब पी थी। थाने के आसपास की किसी मकान में रहा था।'

सूखे भाव से विपावत बनकर यशोदा मुस्करा दी—'इसे कहते हैं, वही छिनरे औ' साली के साथ

रामदास हंस पड़ा—'इसका नाम दुनिया है। इसे समझना कठिन है। 'मन्तर मैं पढूं और साप के मुंह में हाथ तू दे' यह कहावत तो सुनी होगी। इस गाव में ऐसे बड़े आदमी हैं कि जो जोरावर की मुखबरी करते थे। पुलिस की सब रिपोर्ट उसके पास पहुचाते थे।

हां हां, ऐसे तो कई है। तिलकधारी है। और-तो-और, मंदिर का पुजारी भी है। जिस रात पुजारी की लड़की का विवाह हुआ, जोरावर गाव में था। पुलिस भी थी। आख मिचौनी की तरह दोनों एक दूसरे को देखकर छुप रहे थे।

यशोदा उठ चली। घर में जाकर देखा, सुखिया सो गई थी। बच्चा भी पास में सो रहा था। चादनी रात थी। चाद की चादनी सुखिया के मुह पर पड़ रही थी। उसका गोरा शरीर, यौवन से भरा बदन देखते ही यशोदा की छाती पर घूसा सा लगा। वह सब भूल गयी कि यह बहू जोरावर की तरफ खिच रही है। तब स्वतः ही उसके मन में आया, कोई आए, उसे कोई दिखाई दे, तो इस बहू का हाथ पकड़ा दंगी इसकी यह सुहावनी जिंदगी बरबाद नहीं होने दंगी

यशोदा चारपाई पर पड़ गई। कुछ ही देर में सो गई। किंतु वह देर तक सो नहीं पाई। बलात चौंककर जाग गई। वह विस्फारित बनकर चारों ओर देखने लगी। चारों ओर श्वेत चादनी फैली थी। बड़ा सुहावना मौसम था। स्वप्न में ही यशोदा ने देखा कि वह नव-वधु बन-

कर उस घर में आई थी। वह ऐसी ही चांदनी में तिपकी के चारपाइ पास खड़ी थी। पति कह रहा था, आ बैठ जा। ऐसे बार बार नही आएगा, यह मौसम यह तेरी जवानी यह रुपहली चांदनी जिन्दगी की यह सबसे बड़ी नियामत है सौगात है, प्रकृति की

'हे राम! कहां-की कहां पहुंच गई मैं तो। ऐसी गहरी याद आई।' यशोदा ने कहा—'बड़ी अजीब रातें थी वे भी और यह मलखू का चाचा हिरण की तरह चौकड़ी भरता फिरता था, मेरी चारपाई के चारों ओर इस आदमी को न मां की शरम थी न बाप की। सारी लाज लाज ताक पर उठाकर रख दी थी जब दोपहर को खेत पर रोटी लेकर जाता तो तब भी मुझे देखकर अंगड़ाई भरता था भगवान ही जाने किस तरह खेत पर काम करता होगा

यशोदा ने बात छोड़ देनी चाही। उसने दूर सोती हुई सुखिया की ओर देखा। वह बेसुध थी। छाती पर से धोती हटी थी। कसी हुई छातियां मानो उसकी अंगिया के कपड़े को फाड़कर बाहर निकलना चाहती थी भरी जवानी थी उसकी। इतना देख यशोदा के मन में आया कि सुखिया के पास जाए। तकिए पर बिखरे उसके जूड़े के बालों को हाथ में ले ले और चूम ले। उसे याद आया, उसकी लड़की शारदा यदि जीवित होती तो इतनी ही बड़ी होती। ऐसी ही शक्ल-सूरत की होती। यशोदा के मन में आ रहा था। सचमुच बड़ी दुर्भागी है, यह सुखिया। इसका नाम तो 'दुखिया' होता तो ठीक था। भला क्या देखा इसने ससुराल में घर आकर। इसके शरीर से हल्दी का उबटन भी नहीं छूटा कि भगवान ने विधवा बना दी। अच्छा ही हुआ कि यह सिलाई का काम सीख गई। चार पैसे कमाने लगी। हमारा क्या है, आज है कल नहीं। जो इसके भाग्य में होगा मिलेगा। यह भागेगी। उसने कहा—'अब इसके वह के आसार तो अच्छे दीखते हैं। इसके पास हुनर है, चार पैसे है। कोई भी मिल जाएगा। औरत का रूप और यौवन तो ऐसा चुम्बक है कि दूर खड़े आदमी को भी अपनी ओर खींच लेता है हां, इस सुखिया में वह कला है। वह मिथ्या है इसके पास

यशोदा फिर पड़ गई। सो गई। प्रातः जब देर में आंख खुली तो

बाहर की बात चूल्हे पर बैठी सुखिया के भी कानों में पड़ी। वह बोली—'अम्मा, जरा सुनो तो कौन मर गया।'

यशोदा बोली—'मैंने बात सुन ली। वह रोता था न, वह मर गया। न उसका कफन है न चिता के लिए ईंधन। पड़ौसी रोता रहा है, वो चौधरियों के पास गया और खाली हाथ लौट आया।'

हे राम! ऐसे मालदार लोग भी एक पाई नहीं दे पाए।' सुखिया बोली—'लो अम्मा! पिताजी को कलेवा ले जाओ। उनसे कह दो मैं कफन के लिए चादर दे दूंगी।'

यशोदा बोली—हमारे बिटार में उपले (कण्डे) ले लिए जाएंगे। काम हो जायेगा।'

सुखिया ने कहा—मेरे पास कुछ रुपये रखे हैं मन्दिर पर परसाद चढ़ाने के लिए। इससे बड़ा मन्दिर और पुण्य का काम और कौन सा होगा। मैं वे रुपये दे दूंगी।'

यशोदा बाहर गई और सुखिया की बात कह आई। लौटकर बोली चादर दे दे। रुपये भी निकाल दे। मैं बन्द बिटारा खोले देती हूं। दो आदमी आएंगे और कण्डे चादर में बांधकर ले जाएंगे।

22

अन्तत: वह दिन आ गया कि जब चौधरी रामदास और उसकी पुत्र की बहू सुखिया जिले की सदर जेल में जाने को उद्यत हुए। जिस युवक के द्वारा आवेदन पत्र दिया गया था वह जिन में ही कायरत था। सुखिया ने उसमें कह दिया था यह गांव का मामला है इस बात का अपने तक ही सीमित रखना जरूरी है। परन्तु वह युवक तो अपना प्रण निभाने में सफल हो गया, किन्तु जब यशोदा की और रामदास की जोरावर के प्रकरण को लेकर बात चली, तो जोरावर की मां ने सुन ली थी। वह घर के बाहर आकर भैंस का दूध निकाल रही थी। जब जोरावर

था कई बार नाम उसके कानों में आता तो वह चौंक उठती वह। यशोदा की भैंस की आड़ में आकर खड़ी हो गई। फलस्वरूप, वह पति पत्नि के मध्य चलती सभी बातें सुगमता से सुनने में सक्षम थी।

यह सब विदित था कि यशोदा और जोरावर की मां गंगा में कई वर्ष से बोलचाल बन्द थी। उन दोनों नारियों के वैमनस्य ने इन दो परिवारों को पृथक तो किया ही, मन से भी जुदा कर दिया था। परन्तु जोरावर उस घर आता था। वह माता पिता की आकांक्षा की सर्वथा उपेक्षा कर बैठा था। मलखू से उसका अत्यधिक स्नेह था। उसे बड़ा भैया मानता था।

परन्तु प्रातः होते ही जोरावर की मां उस घर आई और सीधी यशोदा के सामने खड़ी होकर बोली—'यह कौन से जन्म का बदला ले रही हो जेठानी! तुम्हारी बहू जोरावर से जेल में मिलने जा रही है। जेठ जी भी जा रहे हैं।

उपेक्षा भाव से यशोदा बोली— मैं इस विषय में कुछ नहीं जानती। जेठ से बात कर।'

'उनसे क्या बात करूं। सांप की मौसी तो तुम हो।'

तब यशोदा क्षुब्ध हो उठी—'जबान सुधारकर बोल। सांप की मौसी होगी तेरी मां तेरा बाप।'

किन्तु गंगा गरज उठी— मैं इस मिली भगत को खूब जानती हूं। बहू को आगे बढ़ा दिया है। मेरा लड़का निकम्मा तो बना ही, तुम्हारी बहू ने अपने रूप के जाल में भी फंसाया है। अब तक तो मैं चुप थी परन्तु अब कहती हूं तुम्हारी बहू ने सांपन बनकर उसे डसा है। उससे रुपया कमाया है।

इतना सुनना था कि यशोदा आपे से बाहर हो गई। उसका हाथ उठा और तड़ से गंगा के मुंह पर तमाचा मारकर बोली— हरामजादी बकवास करती है। कब-कब का वैर निकालने आई है तू! अपने लड़के पर तो जोर चला नहीं यहां बदतमीजी की बात करने आ पहुंची। चुड़ैल कहीं की।

गगा का ऊँचा स्वर था। वह उसके पति के कान म आ जा पहुचा। यद्यपि वह कमजोर था, परन्तु लाठी निकाल लाया। रामदास चबूतरे पर हुक्का पी रहा था। उसके पास आते ही बोला - देखो भया, जब हमारा तुम्हारा मेल नही बोलचाल नही, तब जोरावर के पास जाने की बात क्यो है ? इतने वर्षों की चुप्पी के बाद फिर पानी म आग लगाई जा रही ह। भाभी को समझा लो। मेरा लडका तो कैदखाने चला ही गया। अब हम म से कोई वहा न जा बैठे। यह समझ लो।

रामदास विस्मित था। घर की आवाज वह भी सुन रहा था। परन्तु यह पता नही था जोरावर के नाम पर यह सब हो रहा था। छोटे भाई का उग्र दख, वह स्वभाव के विपरीत बनकर बोला— जगधर, तुम किस किस पर बन्धन लगाओगे। तुम्हारे लडके से कोई मिलने जाता ह, तो तुम्ह आपत्ति क्या ? तुम चाहत हो, उसका कोई मिलने वाला न हो। कोई मित्र या सखा न हो। वह तुम्हारा पुत्र ह, दुश्मन नही। बहू उसके पास जाना चाहती है, तो जाने दो। मैंने तो उसे नही रोका। यह काम मेरा था। मेरी प्रतिष्ठा का सवाल था।

जगधर चुप रह गया। किन्तु रामदास घर म गया और जगधर की बहू को टोककर बोला—'गगा, तू उल्टी गगा बहाती है। जो बात तू करती ह, वह यशोदा को करनी चाहिए थी। मुझे कहनी थी। सुखिया हमारी बहू है। इस घर की इज्जत है। लेकिन जब यह स्वय जोरावर से मिलने को उत्सुक है तो हम क्यो रोकें। वहा जेल म उसके पास धन तो है नही जो मिलाई करके कोई ले जायेगा। यह बहू भी उसके लिए कुछ नही ले जा सकती। जोरावर डाकू और खूनी है। उस पर सगीन मामला है। बाहर के लोग उसे कुछ भी खाने को नही दे सकते।'

गगा अपने जेठ से बोलती कम थी। घूघट करती थी। उस समय उसके मन का जोश निकल चुका था। जेठ के घर म आते ही रहा-सहा पानी भी जाता रहा। वह लौट चली। तेज चाल से चलकर अपने घर म जा बठी। वहा जाते ही पति से बोली—'मलखू की बहू भी बडी चुड़ैल है। एक शब्द भी नही बोली। मैं तो उसी को सुनाने गयी थी। उस मर्फेन्ट कबूतरी ने जरूर लडके पर डोरे डाले ह।

जगधर बोला—'सब बकार है। जोरावर जेल से बहार नहीं आयगा। हमने तो समझ लिया कि वह गया। भगवान का प्यारा हो गया। हमारा भाग्य ही खोटा था। घर मे एक लडका पैदा हुआ तो वह भी डाकू और खूनी बना है। मेरा तो गांव मे निकलना भी दूभर हो गया है। जाने कितनी बार थाने म गया। वहा पुलिस ने प्रताडित किया भगवान बचाये ऐसे जीवन से ऐसी औलाद से '

गगा बोली—'औलाद के कारण ही आज तुम्हे मुह की खानी पडी' जो कुछ न सुनना था वह भी सुन आई। और देखो कसी बात वह चुडैल बहू चुपचाप कमरे के दरवाजे पर खडी रही। देवरानी जिठानी की लडाई देखती रही।

जगधर बोला— तुझे नही जाना था। भया ने जो कुछ कहा उसे सुनकर तो मुझे भी शर्मिन्दा बनना पडा उसका कहना ठीक ही था। लज्जा उसे आनी चाहिए थी न कि हमको। हमारा तो लडका है। चाहे जैसा है, मद बच्चा तो है। उसकी तो बहू है। विधवा है। कोई जवाब है उसके पास, गाव के किसी भी आदमी की बात का कि वह क्यो मिलने जा रही है। क्या स्वाथ है उसका ! वह औरत बेशर्म है, नगी हो चुकी है, मेरे बेटे के पीछे दीवानी बनी है। उसने अपने घर का लाज भी उतार फेकी है

गगा ने पति को घूरा—'यही बात तो मैं कहने गयी थी। लेकिन जेठानी ने तो सब पट मे उतार ली। डकार तक नही ली। मैं समझ गयी जेठ जिठानी बहू के सामने झुक गये हैं। वह चार पैसे कमाती है सो उनके मुह बन्द कर बैठी है।'

अजी, क्या न झुकते ! दो सौ रुपये माहवार सरकार देती है। यह सिलाई का काम करती है, उसकी आमदनी अलग। कम-से कम तीस चालीस बहुए और जवान लडकिया आती है, उनकी फीस अलग। बीस रुपये माहवार सबसे लिया जाता है। कितनी चतुराई है, जब स्कूल खोला, तो दस रुपये माहवार थे। बढत-बढत इतने हो गये।'

'तुम दस रुपये की बात कहते हो, स्कूल खोलते समय मुफ्त में शिक्षा देने की बात थी।'

'सो हा, यही। वह क्या है, कामधेनु गाय है। आम-के-आम, गुठ

लिया व दाम। नाममात्र के लिए मुफ्त म दो चार औरतो को सिलाई सिखाती है।'

इसे कहते ह भाग्य की करामात! इसका लडका भी कालेज म चला गया। वह चुपचाप मेरे पास आता है और कुछ-न-कुछ खा पी जाता है। मुकेश का मटठा पीने का शौक है, ताजी निकला पी जाता है। मैं साथ मे गुड की डली भी दे देती हू। वह तो कहता है समय आएगा, मैं बीच की दीवार ताड दूगा। दाना घर एक कर दूगा।

'अजी जब नदी की धारा पट गयी ता क्या मुडता है।

अगले दिन सुखिया को श्वसुर के पास जाना था, तो वह अधेरे म नदी पर पहुच गयी। हाल म ही रामनाम न कह दिया था कि गाव का कोइ आदमी न टोक। सुखिया ा ाहुल का भी तयार कर लिया था। उसे नय कपडे पहनाये थे, सिर क बाल कघे से सवार थ। आख मे स्याही लगा दी थी। यशादा क कहन पर एक सिर पर स्याही का टीका लगा दिया था। लडका शक्ल सूरत का अच्छा था। इसलिए कही नजर न लग जाए, इस बात का सदेह यशोदा को हो गया था।

दोपहर होने तक वे लोग जेल के द्वार पर पहुच गये। समय पर आवाज लगी। रामदास बोला—'बहू, तू जा। मैं यहा बैठा हू। लडके को ले जा।'

सुखिया उस लौह-द्वार पर पहुच गयी। जब वह फाटक के अदर गयी ता एक और सीखचा का द्वार उसे मिला। वही पर उसे रुकना पड। कुछ ही देर म बेडिया म जकडा जारावर वहा आया। उसे देखते ही सुखिया नीचे झुकी और उसके पर छूकर जब सीधी खडी हुई, तो जोरावर मुस्कराया—'यह उल्टी गगा बहा दी है तुमने! मुझे तुम्हारे चरण छून थे। तुम्हारी प्रेरणा से मैं यहा आया हू। बडा अच्छा व्यवहार किया जा रहा है मेरे साथ। अभी मुकद्दमा शुरू नही हुआ। कब होगा, यह भी नही कहा जा सकता। यहा एक अलग मजिस्ट्रेट नियुक्त होगा। दूसरे देश से युद्ध चल रहा है, तो सरकार का ध्यान उधर है। कुछ पुराने डाकू युद्ध के काम म लगे हैं। वे मार्चे पर लड रहे हैं।'

इतना सुनते ही सुखिया गदगद हो उठी—'तुम भी न लिए जाओगे क्या ?'

'नही, नही, मैं तो नया हूं। मेरा अपराध भी जघन्य है।' उसने कहा 'अच्छा ही हुआ कि मैं जेल में आ बैठा। यहां निश्चितता है कोई भय नहीं। कही छुपने का सवाल नहीं। सुबह जेलर आता है तो बड़े शालीन भाव से बात करता है। शुरू में मैं जिस कोठरी में रखा गया, वह खास कोठरी थी। परन्तु जल्दी ही यहां में बदल दिया गया आम कैदियों से कम मिलना होता है, फिर भी मुझे यहां मानसिक सुख मिला है। डाका डालकर, किसी का खून करके लगता था कि मैं इन्सान नहीं, पशु था, राक्षस था। तुमने मुझे इस पथ से हटाने का प्रयत्न किया, इस कारण मैं तुम्हारा जन्म जन्म का आभारी हूं। यह सीख किसी और ने नहीं दी। शायद लोग मुझसे डरते थे। मुझे खूंखार भेड़िया मानते थे। उसने कहा—'अब यह राहुल भी बड़ा हो चला है। तुम यह मानना कि यह तुम्हारा ही पुत्र है। चोरी के मामले में गांव का हिरिया कुम्हार यहां आया है, कैदी बनकर। उसने बताया था कि तुम्हारा स्कूल खूब चल रहा है।' यह कहते ही उसने सुखिया की बहती आंखों पर जेल का पहना हुआ कुरते का एक भाग रखा। तभी बोला रोना व्यर्थ है, भाभी! हम दोनों ने जाने किस शुभ घड़ी में एक दूसरे को देखा था। जब भैया मलखू था, तो तब मैं अपने मन की भावना व्यक्त नहीं कर पाया। जब वह मरा तो तब भी तुम्हारा वैधव्य देखकर मैं कराह उठा था। तुमसे न कुछ अपेक्षा कर पाया, न कह पाया। तभी तो मैंने एक अन्य युवती से विवाह कर लिया था। यह केवल इस कारण था कि मैं अपने मन की दुर्बलता तुम पर व्यक्त न कर बैठूं। तुम्हारी जीवन के प्रति प्रगट हुई निष्ठा को मैं पतित करने की क्षमता रखता था। डाकू बनकर भी, ऐसा भाव मेरे मन में था।'

सुखिया की आंखें तब भी प्रवाहित थी। वे उसके गालों पर तर रही थी। तभी जमादार आया और बोला— चलो जवान ! समय हो गया।

जोरावर बोला— भाभी, अब यहां मत आना। शायद मैं स्थानांतरित कर दिया जाऊं। यहां गर्मी अधिक है।

सुखिया ने कहा—'देखो, तुम मेरे अवलम्ब हो। जेल म रहो या बाहर, मेरे अपने हो। मुझे पैसा नही चाहिए, भावना चाहिए। वह तुमने मुझे दी। तुम मेरे कहने से आत्म समपण कर चुके हो, एक जघन्य कृत्य से दूर हो गये हो, यही मेरे लिए बहुत है। कह सकती हू। मेरे सोहाग का यह सबस बडा सिन्दूर है जो तुमने मेरी माग मे लगाया है। मै नारी हू, तो पुरुष चाहती हू। लेकिन जिस आकाक्षा से नारी पुरुष की लोलुप बनती है वह अपेक्षा मुझ म नही। मुझे पुरुष की अनुभूति चाहिए। प्रेरणा चाहिए। उसके जीवन का सच्चा सत्स्प चाहिए। यह बच्चा तुमने मेरे पास छोडा है तो मुझे मा कहता है। इतना सुनकर मैं सुख पाती हू। मैं चाहती हू तुम जीवन के पुनीत लक्ष की ओर बढते रहो। तुम भी इस बात को समझो गगा की धारा के समान ही यह जीवन है। यह परम है, पुनीत है। इस भावना की रक्षा करो। अपनी इस आकाक्षा को पूरी करने के लिए यह सुखिया बडे-से बडा त्याग करने के लिए तत्पर रहगी।' वह नीचे झुकी और फिर जोरावर के परो को छू कर बोली—'अब मुझे लगता है कि तुम एक सच्चे मद हो। तुम जीवन की पूजा करनी जानते हो। जीवन को समझते हो।'

जोरावर बोला—ताई और ताऊ को प्रणाम कहना। तुम चाहो तो मेरी मा और पिता को भी मेरा अभिवादन कहला भेजना।

सुखिया बोली—'तुम्हारे ताऊ तो बाहर बैठे हैं। उनका दिल कच्चा है, तुम्हे देखत ही रो पडेंगे। चाचा और चाची के पास मैं स्वय जाऊगी कल चाची आकर लडी थी कि मैं क्यों जा रही हू उसके पुत्र के पास। उह भला क्स बताती कि उनका पुत्र मरा भी कुछ है।

जोरावर बोला—माँ नादान है पगली है। उसने कहा—'भाभी एक बात कहता हू उसे मान लेना। विचार करना। अच्छा यही है कि तुम अपना दूसरा विवाह कर लेना। भावना मे मत बहना। मैं तो अब बाहर आ नही सकता। आया भी तो तब तक बूढा हो जाऊगा। कमर झुक जायगी, जीवन बेकार हो जाएगा।'

सुखिया सूखे भाव से मुस्करा दी अभी तो इतनी बात कही तुमने वही बात मैं अपने से कहती हू। जीवन एक पूजा है। साधना है। मुझे

भी यह अवसर मिला है। पाँच-दस वर्ष के बाद बूढ़ी हो जाऊंगी। हो सकता है तब तक मर भी जाऊं। जो बात मेरे मन म आ गयी है, तुम सोचते हो मैंने पदा की है। यह भी भगवान की वाणी है, उसी की आवाज है। मुझे आदमी नहीं चाहिए जो औरत को भोगे। आम की गुठली की तरह चूसे। मुझे भावना की अपेक्षा है। वह मैं पा चुकी हूं; इसीलिए तो मैं निर्बाध बनकर अहने पथ पर बढ़ी जा रही हूं। तुम्हारे पास तक आयी हूं, समाज की सभी नीति तोड आयी हूं।

जोरावर बोला— तुमने गाव म जिस साहस का प्रदर्शन किया, वह अपूर्व था, वन्दनीय था। मुझे एक एक बात का पता है।'

वह भी भगवान का आशीष था। जाने किस प्रकार मेरे प्राणों म बल आया।'

जोरावर बोला— मैंने जेल अधिकारियों को पत्र दिया है, जिलाधीश के नाम। मेरा ट्रस्ट अभी तक गुप चुप चल रहा था। लेकिन अब उसे प्रकाश म उतारा है। जिलाधीश उसका अध्यक्ष हो और मन्त्री भार का एक विशिष्ट व्यक्ति पाच आदमियों की एक समिति होगी उसम एक तुम्हारा भी नाम होगा।'

सुखिया बोली — वह रुपया सरकार जब्त कर लेगी।

नहीं नहीं, वह ट्रस्ट के अधीन है। मैंने जेलर से बात कर ली है। वह ट्रस्ट अभी बाजाप्ता नहीं, अब आगे उसे स्थायी रूप दिया जा सकेगा।'

जमादार बोला—'अब चलो जवान।

'हां-हां चलो।' जोरावर ने सुखिया से विदा ली और बच्चे का गाल थपथपाया। वह हाथ जोडकर उस स्थान से पीछे हट गया। सुखिया द्वार के बाहर निकल आई। जब वह घास में बैठे रामदास के पास पहुंची तो वह बोला—'बहुत देर की। इतनी देर मिलाई नहीं होती। और तुम रो भी रही हो। आखें अब भी भरी हैं। वह खडा हो गया और कहने लगा— भाग्य की बात है, जोरावर सरीखा लडका गाव म दूसरा नहीं। बुद्धिमान भी है, सुदर भी है। ठीक कहा है किसी न —इंसान को उसके संस्कार बनाते हैं। उसी को हम भाग्य

कहते है। आओ बस अडडे पर चल। गाडी मिल जायगी। शाम तक गाव म पहुच जाएगे।

23

एक दिन जब चौधरी रामदास हाथ मे लाठी लिए अपने खेत की तरफ जा रहा था, तो तभी पीछे से गाव के एक नौजवान भगवत ने आवाज दी—'अरे ताऊ जरा सुनना।

आवाज सुनी तो रामदास रुक गया। पास आते हुए भगवत की ओर देखने लगा। वह शहर म किसी आफिस मे बाबूगिरी करता था। अच्छी कमाई करता था। पिछले दिनो जब उसने अपनी बहिन का विवाह किया, तो अच्छे-अच्छे नाक वाले देखते रह गये। बहिन का बडा अच्छा दहेज दिया। लडका भी ऊचे घर का मिला। उस विवाह की एक विशेषता यह थी कि बराती केवल गिनती के आये थे। शहर के बडे-बडे आफीसर और रईस उमदा उस उत्सव म सम्मिलित हुए थे। बाजा भी अग्रेजी नही था, गाव का था, ढाल डपरा। फिर भी उस विवाह की शोभा देखते बनती थी।

जब भगवत पास आया तो हाथ म लिया अखबार दिखाकर बोला—'ताऊ, कमाल कर दिया जोरावर न। उसका जेल का रिकार्ड इतना अच्छा बना है कि जेल अधीक्षक ने उसे फौज मे जाकर शत्रु से लडने की सिफारिश की है। फौज का कमाण्डर उसकी निशानबाजी देख कर चकित बना था। आशा यही है कि वह फौज म लडने के लिए भेज दिया जायेगा—वहा शत्रु की गोली खाकर मरा तो मुक्ति पा जाएगा। और जीवित रहा, तो सरकार उसके सभी अपराध क्षमा कर देगी। वह फिर गाव म लौट आएगा। यह सब आज के समाचार पत्र म आया है।'

अपनी बात कहकर भगवत अपने रास्ते पर चला गया। उस समाचार से रामदास को इतनी प्रसन्नता हुई कि खेत पर न जाकर घर की

ओर मुड गया। वह सीधा घर म जाकर ऊच स्वर से बाला—'मलखू की मा।

मलखू की माँ यशोदा ऊपर कोठे पर गोबर के कण्डे पाथ रही थी पति की आवाज सुनकर बोली—'क्या है ? कैसे चीख रहे हो ? मैं ठाली नही बैठी काम मे लगी हू।'

'अरी, भागवान यहा तो आ। तेरी वहू कहा है। उसे भी बुला।

यशोदा ने कण्डे पाथने बन्द कर दिये। वह चौक के ऊपर छज्जे पर खडी होकर बोली—'क्या है क्या बात है ऐसी अछूता, जो सुनाने को बेताब हो। बहू तो अपनी क्लास मे है। उस बाहर से आवाज दो।

चौधरी बाला—'आओ। बहू को भी बुला लो। बात ऐसी है कि तुम्हे बिना बताए रहा नही जायगा। बहू का भी बताना जरूरी ह। देखा जाए, तो बात उसी का है, न मेरी है, न तुम्हारी।

यशोदा आखो स हस दी—'ऐसी क्या बात है। वह बाली—'अब तुम पहली बहुत बुझात हो। बात तो बतात नही। मैं कोठे पर से काम छोडकर आ गयी। कई दिन का गोबर पडा था। बहू तो हाथ लगाती नहीं मुझको ही करना पडता है। एक तो वह थी ही कामचोर, तुमने और अधिक सिर पर चढा ली है। जब मैं मर जाऊगी तो देखना कैसा दूध पियोग ? छटाक आध पाये घोसी से ल लिया करना और चाय बनवा कर पी लना। अब चोधरी की रोटी भी चुपडी जाती है। दाल म भी दो चार बूद पड जाता है। सुबह को गरमा गरम पराठा खा लिया जाता है।'

'ओ हो, तूने तो भागवत ही खोल दी। अरी, भागवान ! जिस गाव म मुर्गा नही बाला तो क्या वहाँ दिन नही निकलता ! तू समझती है मैं बैठा रहूगा। मेरा बात गाठ म बाध ले। तुझस पहल जाऊगा। तेरा चूडिया टूटेंगी और मेरी अर्थी पर रखी जाएगी।

यशोदा लाल आखें निकाल बठी—यह अपशकुन की बात छोडो। सुबह-सुबह मेरा दिमाग खराब मत करो। तुम्ह तो कोई काम है नही। बस, हुक्का पीना या गप्प मारना। मेर तो हजार काम हैं। बहू जो जब

से सिलाई की क्लास खोल बैठी है, उन्होंने घर के कामों से छुट्टी पा ली है। सोच लिया है न, घर मे नौकरानी है, मरेगी और खपेगी।'

संयोग से उसी समय मुखिया ऊपर कमरे से उतर आई। उसे देखते ही यशोदा बोली—'लो आ गयी बहू भी। अब बताओ, क्या बात है?'

चौधरी बोला—'सुनो बहू अभी भगवत आया था। उसके पास अखबार था। जेल के अधीक्षक ने जोरावर की तारीफ लिखकर ऊपर अधिकारियों के पास भेज दी है। सुना है फौज के कप्तान ने उसकी निशाने बाजी देखकर प्रशंसा की है। उम्मीद यह है कि जोरावर को शायद जेल से निकालकर लड़ाई के मोरचे पर भेज दिया जाय।'

'हे, राम! भगवान बड़ा न्याय करता है। अच्छा है लड़का इस मुसीबत से निकल गया।' यशोदा के चेहरे पर प्रसन्नता थी। वाणी में हर्ष।

चौधरी बोला—'मलखू की मां, मोरचे पर लड़का यदि वह जीवित रहा तो उसे जेल में नहीं रखा जाएगा। सरकार उसे क्षमा कर देगी।'

यशोदा बोली 'मैंने तो सुना है कि सरकार अपराधियों को क्षमा करने के साथ कुछ काम करने के लिए रुपया देती है। जमीन देती है।'

उसी समय मुखिया पत्थर के समान मूर्तिवत खड़ी थी। पैर के अंगूठे से जमीन कुरेद रही थी।

रामदास बोला—'भाग्य बहुत बड़ी चीज है, मलखू की मां! आदमी कहीं-न-कहीं पहुंच जाता है। मेरा मन चाहता है कि जोरावर तरक्की करेगा। वह गांव का और इस जिले का विशिष्ट व्यक्ति बनेगा। उसकी मां के कानों में भी यह बात पहुंचा देना। बाप से भी कहला भेजना।'

'अजी, गंगा तो फाड़ खाने को आती है।' वह बोली—'अब तो तुम्हारा मुकेश भी कालेज के लड़कों में फौजी कवायद करता है। भाभी से लड़-झगड़कर कुछ रुपये ले गया था वर्दी बनवाने के लिए। वह

बडेट बार है। उसम भर्ती हुआ है। नाम भी ता उम रख है कि समझे नही जात। अब अगर मही। यही पहाड पर जायगा। वहा मन लगगा। न जाने क्या-क्या बातें करता है, भाभी से। मैं तो इन दोना की गिट पिट समझ नहीं पाती।'

रामदास बाहर की ओर चल दिया और कहता गया—'अब खेत पर नही जाऊगा। एक चिलम तम्बाकू भर द तो पीकर मदिर पर जाऊगा। कुछ दर वहा जाकर बठूगा।'

तभी सुखिया बोली—'जेल म जोरावर इस बात का जिकर करता था। लकिन अभी पता चला है कि वह मोर्चे पर भेज भी दिया जाएगा। वहा आना भी पानी से बदतर है। जो वहा जाता है बडे भाग्य समझा कि लौट आये। कोई मरता है और कोई अधमरा बनकर अस्पताल म पडा मिलता है।'

यशोदा ने सास भरी—'हा, बहू! जो फौज म भर्ती होकर जाते हैं जोखिम का आधार ही उन्ह उसओर खीच कर ले जाता है।'

सुखिया बोली—'अम्मा उसम अपना भला भी होता ह और परमार्थ भी। देश की रक्षा तो फौज का सिपाही करता है। वह अपने अपने प्राण हथेली पर लिय रहता है। वह बहादुर है। देश का प्रहरी है।'

यशोदा बहू की सब बात नही समझ पाई। वह बाहर गयी और हुक्के से चिलम उतार लाई। उसम तम्बाकू रखा और और आग रखकर चिलम हुक्के पर रख आयी। उसी समय सुखिया अपनी कलाम म गयी और एक युवा लडकी को अपने पास बुलाकर बोली—'रमिया तेरा भया तो घर होगा। ले ये पाच रुपय। वह हलवाई की दुकान स पाच रुपय की नुकती दाना ले आयगा।

रमिया श्वेत दातो से हस पडी—'क्या करोगी इतनी नुकती का ?

सुखिया बोली—'कुछ बाटनी ह। कुछ मदिर पर चढानी ह। तू जा।

रमिया चली गयी तभी सुखिया स्वत ही बोली—'यह अच्छा

समाचार है। सुखकर है। भगवान बड़ा दयालु है।'

सन्ध्या होते ही वह नुक्तीदाना सुखिया ने यशोदा को दिया और कहा—'अब मंदिर पर पुजारी पूजा करेगा। यह मिठाई ले जाओ। कुछ देवता पर चढ़ा देना, कुछ वहां पर आये बच्चों को बांट देना।'

आश्चर्य, यशोदा ने कोई टिप्पणी नहीं की। वह पति के पास जाकर बोली—'आओ, चलते हो, मंदिर पर! बहू परसाद बांट रही है। यह नुक्तीदाना मंगाया है।'

प्रसन्न भाव में रामदास बोला—'अच्छा तो है। बहू को सबसे बड़ी खुशी हुई है।'

'लेकिन सुबह तो मुंह से भी नहीं बोली।'

'क्या बोलती। सास श्वसुर के सामने चुप रहना ही ठीक था। यह समझ ले, अब बहू की मनचीती होगी, हमारी तुम्हारी नहीं।

यशोदा बोली—'यह सब देखकर तो मेरा मन कांपता है।'

'तू तो मूर्ख है। जोरावर गैर नहीं। उसका देवर है। जो तेरे मन में है वह मेरे भी पास है। लेकिन चुप रह। बहू की खुशी में ही अपनी खुशी समझ।' वह बोला—'जेल पर जाने का मतलब क्या था! इतनी बात न समझी जाय तो क्या भगवान आकर समझाएगा। चल मंदिर पर! खुशी की बात है, परसाद बांटना ही चाहिए, यही क्या कम है कि वह स्वयं न जाकर तुम्हें भेज रही है। यह आदर भी कम नहीं। दाता दे और पल्ला पसारकर लो।' दोनों चल दिए। परसाद कुछ देवता को चढ़ाया, कुछ वहां पर एकत्र बच्चों और स्त्रियों को बांट दिया। आश्चर्य रामदास या यशोदा ने परसाद बांटने का उद्देश्य नहीं बताया। उनसे पूछा भी गया तो टाल दिया।

अभी पूरा सप्ताह नहीं बीता था कि सारे गांव में यह खबर बिजली की तरह फैल चुकी थी कि जोरावर शत्रु से लड़ने के लिए मोर्चे पर भेज दिया गया! इस बात को बीते अभी सप्ताह हुआ था कि शहर से प्रकाशित कई अखबार गांव में आ गए, जोरावर बड़ी बहादुरी के साथ युद्धरत है। सरकारी अधिकारियों में उसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की जा रही है। स्वयं फौज के अफ्सर उस जवान को पाकर गौरवान्वित

है ।

लावन एक दिन नगर म और गाव म यह समाचार फैलते दर नही लगी शत्रु दल जिस स्थान पर कब्जा करना चाहता था, वह विफल कर दिया गया । बहुत से शत्रु मारे गय, सय सामग्री छोडकर भाग गए । परन्तु अपने दश की मुहिम पर नियुक्त जोरावर घायल हो गया । वह फौजी अस्पताल म दाखिल कर दिया गया । डाक्टरो ने उसका एक हाथ काट दिया ।

सुखिया ने कुछ दिन के लिए अपना स्कूल बन्द कर दिया था । उसने अपना भैया बुलाया था और उसके साथ माता पिता से मिलने चली गयी थी । किन्तु अपने गाव म कुछ दिन रहकर वह जोरावर के के पास पहुच गयी थी । एक मास अस्पताल मे रहकर जोरावर स्वस्थ हो चला था । सरकार ने उसे गाव जाने की अनुमति दे दी थी । जब वह अस्पताल से मुक्त हुआ, तो तभी यह समाचार मिला, सरकार ने जोरावर को विशिष्ट पदक और सम्मान प्रदान करन का निश्चय किया है । उसे अपने ही गाव मे सौ बीघा जमीन दी ह और एक लाख रुपया ।

सुखिया एक सप्ताह से जोरावर के पास थी । उसके बाए हाथ की बाह कन्धे से काट दी गयी । गोलियो के आघात शरीर के उसी भाग पर हुए थे । जब सुखिया गाव लौटी तो वह एकाकी नही थी, जोरावर साथ था । सरकार न उसे सभी अपराधो स मुक्त कर दिया था । जब वह गाव मे आया, तो उससे पूर्व ही सुखिया ने और निकट के थानेदार ने गाव म प्रचारित कर दिया था, जोरावर आ रहा है । उसका सम्मान किया जाना जरूरी है । अतएव नदी तट पर गाव का जन-समूह एकत्र था । गाव के युवको ने उसका विशेष सम्मान करने का निश्चय किया था । नाव से उतरते ही जोरावर फूलो की माला से लाद दिया गया । उस समूह म जोरावर के माता पिता तो थे ही, रामदास और यशोदा भी थी । नाव से उतरते ही जोरावर ने रामदास और यशोदा की चरण रज ली । वह दूर खड़े माता पिता के चरणो मे झुक गया । गाव निवा

है ।

लाकन एक दिन नगर म
लगी शत्रु दल जिस स्थान
कर दिया गया । बहुत से
गए । परतु अपन देश की मु
यह फौजी अस्पताल मे दाखि
हाथ काट दिया ।

सुखिया न कुछ दिन
उसने अपना भैया बुलाया था
चला गया थी । किन्तु अपने
के पास पहुच गयी थी । एक
हो चला था । सरकार ने उ
वह अस्पताल से मुक्त हुआ,
जोरावर को विशिष्ट पदक
है । उसे अपने ही गाव मे
रुपया ।

सुखिया एक सप्ताह से
बाह कन्धे से काट दी गयी ।
हुए थे । जब सुखिया गाव लौ
था । सरकार न उसे सभी
गाव मे आया, तो उससे पूव
गाव म प्रचारित कर दिया
किया जाना जरूरी है । अतए
था । गाव के युवको ने उसका
था । नाव से उतरते ही जोरा
उस समूह म जोरावर के माता
भी थी । नाव से उतरत ही जा
रज ली । वह दूर खड़े माता

खडी कर दी थी, मैं उसे तोड दूगा। माता-पिता के समान ताऊ और ताई भी मेरे पूजनीय है, मैं उनकी सेवा मे अपने को अपित कर दूगा।'

युवको ने जोरावर को कधे पर उठा लिया और सभा का समापन करने से पूव चौधरी विक्रम ने कहा—'हम वद्ध हुए। अब मजिल के अन्त पर आ गए। अब युवको का समय है। अब इन्ही का उत्तरदायित्व है, गाव को और जन-जन को दिशा बोध प्रदान करें।

श्री राम शर्मा राम
13 5-87

श्याम नगर,
लिसाडी गेट, मेरठ—2